निवेदन।

पाठक महाशय,

लगभग दो वर्ष पहले इस ग्रन्थके छपानेका कार्य प्रारंभ किया गया था, आज इतने समयके बाद तैयार होकर यह आपके हाथोंमें पहुँचता है। इच्छा थी कि इसके साथ कविवर द्यानतरायजीका परिचय और उनकी रचनाकी आलोचना आपकी भेंट की जाय; परन्तु इस समय मेरे शरीरकी जो अवस्था है उसके अनुसार यही बहुत है कि यह ग्रन्थ किसी तरह पूरा होकर आपतक पहुँच जाता है। लगभग चार महीनेसे मैं अस्वस्थ हूँ और इस कारण बहुत कुछ सावधानी रखनेपर भी इसमें कहीं कहीं कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं उनके लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। यदि कभी इसके दूसरे संस्करणका अवसर मिला तो ये अशुद्धियाँ भी न रहेंगी और ग्रन्थकर्त्ताका परिचय और ग्रन्थालोचन भी लिख दिया जायगा।

धर्मविलास बहुत बड़ा ग्रन्थ है। द्यानतरायजीकी प्रायः सब ही छोटी मोटी रचनाओंका इसमें संग्रह है। परन्तु आप इस ग्रन्थको बहुत ही छोटे रूपमें देखेंगे। इसका कारण यह है इसमेंके कई अंश जुदा छप गये हैं और इस लिए उनको इसमें शामिल करनेकी आवश्यकता नहीं समझी गई।

इसका एक अंश तो जैनपदसंग्रह (चौथा भाग) है जिसमें द्यानतरायजीके सबके सब पदोंका संग्रह है। यह हमने जुदा छपवाया है।

दूसरा अंश प्राकृत द्रव्यसंग्रहका पद्यानुवाद है जो द्रव्यसंग्रह सान्वयार्थके साथ साथ छपा है।

तीसरा अंश चरचाशतक है जो इसी वर्ष सुन्दर भाषाटीकासहित प्रकाशित किया गया है।

चौथा अंश भाषापूजाओंका संग्रह है। यह लगभग चार पाँच फार्मका होगा। इसे हम इसीमें शामिल करना चाहते थे; परन्तु सर्वसाधारण पूजाप्रेमी लोगोंके लिए इसका जुदा छपवाना ही उचित समझा गया। इसकी कापी तैयार है। बहुत शीघ्र छप जायगा।

इस तरह इन सब अंशोंके मिलानेसे धर्मविलास पूर्ण हो जायगा।

बम्बई
३०-१२-१३ } नाथूराम प्रेमी।

विषयसूची।

जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय बम्बईके छपाये हुए जैनग्रन्थ।

१ प्रद्युम्नचरित्र-हिन्दी भाषामें बहुत ही बढ़िया ... ... २॥।)
२ मोक्षमार्गप्रकाश-पं० टोडरमलजीकृत ... ... १॥।)
३ सप्तव्यसनचरित्र-हिंदीवचनिका ... ... ॥=)
४ बनारसीविलास-बनारसीदासजीके विस्तृत जीवनचरित्रसहित १॥)
५ प्रवचनसारपरमागम-कविवर वृंदावनजीकृत अध्यात्मका ग्रन्थ १)
६ वृंदावनविलास-वृन्दावनजीकी समस्त कविताका संग्रह ... ॥)
७ क्षत्रचूड़ामणिकाव्य-हिन्दी भाषानुवादसहित ... ... ॥।)
८ भाषापूजासंग्रह- ... ... ॥)
९ मनोरमा उपन्यास-बाबू जैनेन्द्रकिशोरजीकृत ... ... ॥)
१० ज्ञानसूर्योदयनाटक-श्रीनाथूरामप्रेमीकृत ... ... ॥)
११ तत्त्वार्थसूत्र-बालबोधिनी भाषाटीकासहित ... ... ॥।)
१२ जैनपदसंग्रह प्रथमभाग-दौलतरामजीकृत, बड़ा अक्षर ... ।=)
१३ जैनपदसंग्रह दूसरा भाग-भागचंदजीकृत, ... ।)
१४ जैनपदसंग्रह तीसरा भाग-भूधरदासजीकृत भजन ... ।-)
१५ जैनपदसंग्रह चौथा भाग-द्यानतरायजीकृत भजन ... ॥=)
१६ जैनपदसंग्रह पांचवाँ भाग-बुधजनजीकृत ... ... ।=)
१७ उपमितिभवप्रपंचकथा-पहलाभाग ... ... ॥)
१८ उपमितिभवप्रपंचकथा-दूसरा भाग ... ... ।-)
१९ चर्चाशतक-सरल भाषाटीकासहित ... ... ॥।)
२० न्यायदीपिका-सरल भाषाटीकासहित... ... ... ॥।)
२१ धर्मप्रश्नोत्तर-प्रश्नोत्तर रूपमें धर्मके सब विषयोंका वर्णन है ... २)

२२ नागकुमारचरित- ... ... ।≈)
२३ यशोधरचरित- ... ... ।)
२४ यात्रादर्पण-यात्रियोंके बड़े ही सुभीतेका है ... ... ≈)
२५ भाषानित्यपाठसंग्रह-रेशमी जिल्द ।।), सादा ... ... ।≈)
२६ प्रतिभा उपन्यास-नाथूराम प्रेमीकृत ... ... १।)
२७ सूक्तिमुक्तावली-मूल भाषाकविता और टीका ... ... ।≈)
२८ सज्जनचित्तवल्लभ-मूल, कविता और भा. टी. सहित ... ≈)
२९ परमार्थजकड़ीसंग्रह-१५ जकड़ियोंका संग्रह ... ... ≈)
३० विनतीसंग्रह-२४ विनतियोंका संग्रह ... ... ≡)
३१ नित्यनियमपूजा-संस्कृत और भाषा ... ... ।)
३२ भक्तामरस्तोत्र-अन्वय अर्थ भावार्थ और हिन्दी कवितासहित ।)
३३ जैनबालबोधक प्रथमभाग- ... ... ।)
३४ शीलकथा-भारामल्लजीकृत ।) दर्शनकथा ... ... ≡)
३५ श्रुतावतारकथा-श्रुतस्कंधविधानादिसहित ... ... ≡)
३६ अरहंतपासाकेवली-पाँसा डालकर शुभ अशुभ जाननेकी रीति -)॥
३७ भक्तामर-हेमराजजीकृत भाषा और मूल संस्कृत ... ... -)
३८ पञ्चमंगल-अभिषेकपाठ और पंचामृताभिषेकपाठसहित ... -)
३९ मृत्युमहोत्सव-और समाधिमरण ... ... ≈)
४० धूर्ताख्यान-पुराणोंकी पोलें ... ... ≡)
४१ प्राणप्रियकाव्य-भा. टी. सहित ... ... ≈)
४२ जैनविवाहपद्धति- ... ... ≡)
४३ क्रियामंजरी-श्रावकोंकी प्रतिदिनकी क्रिया ... ... ≈)

पता--मैनेजर, जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय

हीराबाग पो० गिरगांव, बम्बई।

श्रीवीतरागाय नमः ।

स्व० कविवर द्यानतरायजी विरचित ।

धर्मविलास ।

(द्यानतविलास ।)

मंगलाचरण ।

छप्पय ।
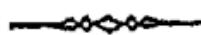
वन्दौं आदि जिनेस, पापतमहरन दिनेस्वर ।
वन्दत हौं प्रभु चंद, चंद दुख तपन हनेस्वर ॥
सांतिनाथ वंदामि, मेघसम सान्तिप्रकासक ।
नमौं नमौं महावीर, वीर भौं-पीर-विनासक ॥
चौवीसौं जिनराजका, धर्म जगतमैं विस्तरौं ।
सुभ ज्ञान भगति वैरागमय, धर्म विलास प्रगट करौं ॥१॥

उपदेशशतक ।

तीर्थंकरस्तुति, छप्पय ।

गुण अनंतकरि सहित, रहित दस आठ दोपकर ।
विमल जोति परगास, भास निज आन विपहर ॥
सकल सुरासुरवृंदवंद्य, नर इंद्र चंद्र गन ।
राग द्वेष मद मोह क्रोध, छल[1] लोभ सकल हन ॥

---

१ माया ।

महिमा अनंत भगवंत प्रभु,
जगत जीव असरन सरन।
कर जोरि भविक वंदत चरन,
तारि तारि तारन तरन ॥ १ ॥

सहित अनंत चतुष्ट, नष्ट हुव चारि घाति जव।
कहत वेद मुख चारि, चारि मुख लखत जगत सब ॥
दहिय चौकरी चारि, चारि संज्ञा बल चुकौ।
चारि प्रान संजुगत, चारिगति गमन विमुकौ ॥
चहुसंघसरन बंधन हरन, अजर अमर सिवपदकरन।
कर जोरि भविक वंदत चरन, तारि तारि तारन तरन ॥२॥

सवैया इकतीसा (मनहर)।

धर्मको बखानत है कर्मनिको भानत है,
लोकालोक जानत है ज्ञानको प्रकासकैं।
ममता तजै खिरी है वानी जो अनच्छरी है,
सुधारूप ह्वै झरीं है इच्छाविना जासकैं ॥
सिंघासन सोहत है सक्र मन मोहत है,
तीनि छत्र चौसठि चमर ढरैं तासकैं।
आनंदकौ कारक है भव्यनकौ तारक है,
ऐसौ अरहंत देव वंदौं मद नासकैं ॥ ३ ॥

रागभाव टार्यौ तातैं परिगह गहै नाहिं,
दोषभाव जार्यौ तातैं आयुध न पेखिये।

---

१ आहार, भय, मैथुन, परिग्रह। २ काय, श्वासोच्छ्वास, भाषा, आयु। ३ नष्ट करता है। ४ शस्त्र हथियार।

मोहभाव मार्यौ तातैं गहलता दूरि भई,
अंतराय नासतैं अनंत बल पेखिये ॥
ज्ञानावरनी विनासि केवल प्रकास भयौ,
दर्शनावरनी गएँ लोकालोक देखिये ।
ऐसे महाराज जिनराज हैं जिहाज सम,
तिनकौ सरूप लखि आपकौं विसेखिये ॥ ४ ॥
जान्यौ जिनदेव जिन और देव त्याग कीयौ,
कीयौ सिववास जगवास उदवासकैं ।
पूज्यौ जिनराज सो तौ पूजनीक जिन भयौ,
पायौ निज थान सब करम विनासकै ॥
ध्यायौ वीतराग तिन पायौ वीतराग पद,
भयौ है अडोल फेरि भववन नासकै ।
जिनकी दुहाई जिनैं गहौ और देव कोऊ,
जातैं लहै मोक्ष कभी जगमैं न आ सकै ॥ ५ ॥

सवैया तेईसा (मत्तगयन्द) ।

जो जिनराज भजै तजि राज, वहै शिवराज लहै पलमाहीं।
जो जिननाथ करै भवि साथ, सु होत अनाथ सबै गुण पाहीं॥
जो जिन ईस नमै निज सीस, वहै जगदीस तजै परछाई।
जो जिनदेव करै नित सेव, लहै शिव एव महा सुखदाई॥६॥

छंद मल्लिकमाला।

देखि भव्य वीतराग कीन घातिकर्म त्याग,
तास रूप पेखि भाग लज्ज कामरूप ।

---

१ छोड़कर। २ निश्चल। ३ मत गहो। ४ अनाथ अर्थात् जिसका कोई नाथ न हो, स्वयं सबका नाथ। ५ पराई अर्थात् पुद्गलकी छायाको छोड़ देता है, उससे रहित हो जाता है। अथवा छायारहित (केवली) हो जाता है।

आठ वर्ष घाटि जोय कोटि पुव्व आयु होय,
लेत ना अहार सोय जोर है अनूप ॥
इंद औ फनिंद चंद जच्छ औ नरिंद विंद,
तीन काल तास वंदि होत मोखभूप ।
सर्वज्ञेयकौ प्रमान तुच्छ कालमाहिं जान,
ताहि वंदिये सुजान छांड़ि दौरधूप ॥ ७ ॥

करखा छन्द ।

सर्व तिहुँ लोक सु अलोक तिहुँकालके,
सहित परजाय निज ज्ञानमाहीं ।
देखियौ जास परतच्छ जिमि करतलैं,
तीन हू रेख आंगुरी पाहीं ॥
जासकैं राग औ द्वेष भय चपलता,
लोभ जम जरा गद आदि नाहीं ।
सो महादेव मैं नमौं मन वचन तन,
दीजियै नाथ मुझ मोक्ष ठाहीं ॥ ८ ॥

कुंडलिया ।

बीते जाके घातिया, राग दोष भ्रम नास ।
सुरपति सत वंदत चरन, केवलज्ञान प्रकास ॥
केवलज्ञान प्रकास, भास केवलसुख जाकैं ।
दरसन जास अपार, सार बल प्रगट्यौ ताकैं ॥
गुण अनंत धनरास, आस त्रासा भय जीते ।
ताकैं वंदौं सदा, घातिया जाके बीते ॥ ९ ॥

---

१ यह छन्द अकलंकाष्टकके "त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं" आदि श्लोकका भावानुवाद है ।

छप्पय ।

भरम हरिय मन मरिय, जरिय मद टरिय मदनवल ।
सकलि फुरिय[1] अघ दुरिय[2], तुरिय[3] गज तजिय सुरथ दल ॥
परम लखिय पर नसिय, चखिय निजरस रस विरचिय ।
धरम वसिय दुख नसिय, खसिय[4] गद जनम मरण तिय[5] ॥

वसु करम दलन भव भय हरन,
त्रिभुवनपतिनुत तुम चरन ।
तुम अभय अखय निरमल अचल,
जय जिनवर असरन सरन ॥ १० ॥

जै जै स्वामी आदिनाथ, मैं तेरा बंदा ।
जै जै स्वामी आदिनाथ, काटौ भव फंदा ॥
जै जै स्वामी आदिनाथ, देवोंके देवा ।
जै जै स्वामी आदिनाथ, मैं कीनी सेवा ॥
तू जै जै स्वामी आदिजी, मेरी सेवा जानही ।
तातैं मोपै कीजै कृपा, वासा दीजै पास ही ॥ ११ ॥

करखा ।

करम-घन[6]हर पवन, परम निजसुखभवन[7],
भरमतम रवि मदन,-तपत-चंदा[8] ।
कोपगिरि वज्रधर[9], मान गज हरन हरि[10],
कपट वन हर दहन[11] लोभ मंदा ॥

---

१ स्फुरायमान हुई । २ भाग गये । ३ तुरग-घोड़ा । ४ खिसक गये, दूर हो गये । ५ तीन अर्थात् रोग जन्म और मरण । ६ बादल । ७ घर । ८ कामदेवरूपी तापको शमन करनेके लिये चन्द्रमाके समान शीतल । ९ इन्द्र । १० सिंह । ११ आग ।

कैरन अहि मंत्र वर, मरण रिपु हनन सैर,
पतित उद्धरण जिन नाभिनंदा।
सकल दुख दहन घन, दिपत जस कनक तन,
सरव सुर असुर नर चरन वंदा ॥ १२ ॥

दर्शनस्तुति, छप्पय।

तुव जिनिंद दिठ्ठियौ, आज पातक सब भज्जे।
तुव जिनिंद दिठ्ठियौ, आज वैरी सब लज्जे ॥
तुव जिनिंद दिठ्ठियौ, आज मैं सरवस पायौ।
तुव जिनिंद दिठ्ठियौ, आज चिंतामणि आयौ ॥
जै जै जिनिंद त्रिभुवन तिलक,
आज काज मेरो सरयौ।
कर जोरि भविक विनती करत,
आज सकल भवदुख टर्यौ ॥ १३ ॥

तुव जिनिंद मम देव, सेव मैं तुमरी करिहौं।
तुव जिनिंद मम देव, नाम तुम हिरदैं धरिहौं ॥
तुव जिनिंद मम देव, तुही साहिब मैं बंदा।
तुव जिनिंद मम देव, मही कुमुदनि तुव चंदा ॥
जै जै जिनिंद भवि कमल रवि, मेरो दुःख निवारिकैं।
लीजै निकाल भव जालतैं, अपनो भक्त विचारिकैं ॥१४॥

अष्टद्रव्य चढ़ानेका फल, सवैया इकतीसा।

नीरके चढ़ायैं भवनीर-तीर पावै जीव,
चंदन चढ़ायैं चंद सेवैं दिन रात है।

---

१ इन्द्रिय। २ बाण।

अक्षतसौं पूजतैं न पूजैं अक्ष सुख जाकौं,
फूलनिसौं पूजैं फूलजातिमैं न जात हैं॥
दीजै नइवेद तातैं लीजै निरवेद पद,
दीपक चढ़ायें ज्ञानदीपक विख्यात हैं।
धूप खेये सेती भ्रम दौर धूप खइ जाय,
फलसेती मोक्ष फल अर्घ अघ घात हैं॥ १५॥

वर्तमान चौवीसीके नाम, कवित्त (३१ मात्रा)।

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपास प्रभु चंद।
पुहपदंत शीतल श्रेयांस प्रभु, वासपूज्य प्रभु विमल सुछंद॥
स्वामि अनंत धर्म प्रभु शांति सु, कुंथु अरह जिन मल्लि अनंद।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पास, वीरेश सकल वंदौं सुखकंद॥१६॥

सिद्धस्तुति, सवैया इकतीसा।

ज्ञान भावके विलासी छैदी जिनौं भवफाँसी,
कर्म शत्रुके विनासी त्रासी दुःख दोपके।
चेतन दरबभासी अचल सुधामवासी,
जिनकै हैं निधि खासी पोपे सुधा चोपके॥
मन वच काय नासी सिद्ध खेतकें निवासी,
ऐसे सिद्ध सुखरासी ज्ञाता ज्ञेयकोपके।
भव्य जगतैं उदासी ह्वैकै मनमैं हुलासी,
तीन काल तिन्हैं ध्यासी वासी सुख मोपके॥१८॥

साधुस्तुति, कुंडलिया।

पंच महाव्रत जे धरैं, पंच समिति प्रतिपाल।
पाँचौं इंद्री वसि करैं, षडावसिक गहि चाल।

---

१ अचल मोक्ष स्थान। २ जीवादि पदार्थ समूहके। ३ ध्यान करेगा।

षडावसिक गहि चाल, टाल मंजन कच लुंचैं ।
एक बार ठाड़े अहार, लघु अंबर मुंचैं ॥
भूमिसैन दंतवन त्याग, निजभावविषैं रत ।
ते वंदौं मुनिराज, धरैं जे पंच महाव्रत ॥ १९ ॥

सर्वगुरुस्तुति, सवैया इकतीसा (सर्व गुरु एक लघु) ।

काहूसौं ना बोलैं बैना जो बोलैं तौ साता दैना,
देखैं नाहीं नैनासेती रागी दोषी होइकै ।
आसा दासी जानैं पाखैं माया मिथ्या दूर नाखैं,
रांधा हीयेमाहीं राखैं सूधी दृष्टी जोइकै ॥
इंद्री कोई दौरै नाहीं आपा जानैं आपामाहीं,
तेई पावैं मोख ठांहीं कर्मैं मैले धोइकै ।
ऐसे साधू वंदौ प्रानी हीया वाचा काया ठानी,
जातैं कीजै आपा ज्ञानी भर्मैं बुद्धी खोइकै ॥ २० ॥

करखा (सर्व लघु, एक गुरु) ।

नगन [2]नगपर रहत, [3]मदन मद नहिं गहत,
[4]ममत मत नहिं लहत, दहत आसा ।
[5]करनसुख घटत जस, मरन भय हटत तस,
सरन बुध छुटत पुनि, मद विनासा ॥
अमल पद लखत जब, समल पद नखत सब,
परम रस चखत तब, मन निरासा ।
नमत मन वचन तन, सकल भव भय हरन,
अज अमर पद करन, शिव निवासा ॥ २१ ॥

---

१ कुमतिरूपी स्त्रीको । २ पर्वतपर । ३ कामदेव । ४ यह मेरा है, इस प्रकार ममत्वबुद्धि । ५ इन्द्रियसुख ।

पंचपरमेष्ठीको नमस्कार, छप्पय ।

प्रथम नमूं अरहंत, जाहि इंद्रादिक ध्यावत ।
वंदूं सिद्ध महंत, जासु सुमिरत सुख पावत ॥
आचारज वंदामि, सकल श्रुत ज्ञान प्रकासत ।
वंदत हौं उवझाय, जास वंदत अघ नासत ॥
जे साधु सकल नरलोकमैं, नमत तास संकट हरन ।
यह परम मंत्र नित प्रति जपौ, विघन उलटि मंगल करन ॥

सबुद्धिकृतजिनस्तुति, करखा ।

राग रंगति नहीं दोप संगति नहीं,
मोह व्यापै न निजकला जागी ।
घातिया खै गयौ, ज्ञान परगट भयौ,
ज्ञेयकौं जानि परदर्व त्यागी ॥
सकल औगुण गये, सकल गुणनिधि भये,
सकल तन जस सुकुल रीति पागी ।
कृपा करि कंतकौं मोख पद दीजिये,
कहत है सुबुधि जिनपाय लागी ॥ २३ ॥

करखा छंद ।

कहत है सुबुद्धि जिननाथ विनती सुनो,
कंत तो मूढ़ समुझै न क्यौं ही
घोर संसारके हेत जे विषय हैं,
तिन्हैं भोगत चहै सुक्ख यौं ही ॥
जाइगौ नर्क तब विषय फल जानसी,
तहां पिछतात सिर धुनै यौं ही ।

---

१ ज्ञानावरण पांच, दर्शनावरण नव, मोहनीय अट्ठाईस, अंतराय पांच ।

देहु उपदेश अब रहै जु सुहागमुद्र,
छांड़ि जग चलै शिव ओर त्यौं ही ॥ २४ ॥
कहौं इस भाँति सुनि चिदानँद बावरे,
कौन विधि नारि पर हियें पैठी ।
कुजसकी खानि दुख दोषकी वहिनि है,
तुमैं दुख देति जो महाहेठी ॥
छांड़ि यह संग तुम परम सुख भोगवो,
सुमतिके संग निज हिये वैठी ।
छांड़ि जगवास शिववास पलमैं लहौ,
परत हौं पाय कहुं जीव ऐंठी ॥ २५ ॥

व्यवहार हितोपदेश वर्णन, सवैया तेईसा (मत्तगयन्द)।

चेतनजी तुम चेतत क्यौं नहिं, आव घटै जिम अंजुलिपानी ।
सोचत सोचत जात सबै दिन, सोवत सोवत रैनि विहानी ॥
"हारि जुवारि चले कर झारि," यहै कहनावत होत अज्ञानी ।
छांड़ि सबै विषयासुखस्वाद, गहौ जिनधर्म सदा सुखदानी २६
पुन्य उदै गज वाजि महारथ, पाइक दौरत हैं अगवानी ।
कोमल अंग सरूप मनोहर, सुंदर नारि तहां रति मानी ॥
दुर्गति जात चलै नहिं संग, चलै पुनि संग जु पाप निदानी ।
यौं मनमाहिं विचारि सुजान, गहौ जिनधर्म सदा सुखदानी ॥
मानुष भौ लहिकै तुम जो न, कयौ कछु तौ परलोक करौगे ।
जो करनी भवकी हरनी, सुखकी धरनी इस माहिं बरौगे ॥
सोचत हौ अब वृद्धि लहैं, तब सोचत सोचत काठ जरौगे ।
फेरि न दाव चली यह आव, गहौ निज भाव सु आप तरौगे २८

१ नीच स्वभाववाली । २ आयु । ३ पयादे सेवक ।

आव घटै छिन ही छिन चेतन, लागि रह्यौ विषयारसहीको।
फेरि नहीं नर आव तुमैं, जिम छांड़त अंध बटेर गहीको॥
आगि लगैं निकसै सोई लाभ, यही लखिकैं गहु धर्म सहीको।
आव चली यह जात सुजान, "गई सुगई अब राखि रहीको"

कुंडलिया।

यह संसार असार है, कदली वृक्ष समान।
यामैं सारपनो लखै, सो मूरख परधान॥
सो मूरख परधान, मानि कुसुमनि नभ देखै।
सलिल मथै घृत चहै, शृंग सुंदर खर पेखै॥
अगनिमाहिं हिम लखै, सर्पमुखमाहिं सुधा चह।
जान जान मनमाहिं, नाहिं संसार सार यह॥ ३०॥

कवित्त (३१ मात्रा)।

तात मात सुत नारि सहोदर, इन्हैं आदि सब ही परिवार।
इनमैं वास सराय सरीखो, 'नदी नाव संजोग' विचार॥
यह कुटुंब स्वारथकौ साथी, स्वारथ विना करत है ख्वार।
तातैं ममता छांड़ि सुजान, गहौ जिनधर्म सदा सुखकार ३१
चेतनजी तुम जोरत हो धन, सो धन चलै नहीं तुम लार।
जाकौं आप जानि पोषत हौ, सो तन जरिकैं ह्वै है छार॥
विषै भोगिकैं सुख मानत हौ, ताकौ फल है दुःख अपार।
यह संसार वृक्ष सेंमरकौ, मानि कह्यौ मैं कहूं पुकार॥३२॥

सवैया इकतीसा।

सीस नाहिं नम्यौ जैन कान न सुन्यौं सुवैन,
देखे नाहिं साधु नैन ताकौ नेह भान रे।

---

१ पकड़ी हुई बटेरको। २ आकाशके कुसुम अर्थात् फूलोंको। ३ गधेके सींग। ४ ठंडापन। ५ सेमरका वृक्ष जिसका फूल तो सुहावना होता है, पर फलमें निस्सार भुआ निकलता है। ६ त्याग दे।

बोल्यौ नाहिं भगवान करतैं न दयौ दान,
उरमैं न दया आन यौं ही परवान रे ॥
पाप करि पेट भरि पीठि दी न तीय पर,
पाँव नाहिं तीर्थ कर सही सेती(?) जान रे।
स्याल कहै वार वार अरे सुनि श्वान यार,
इसकौं तू डारि डारि देह निंद्यखान रे ॥ ३३ ॥

देखो चिदानंद राम ज्ञान दिष्टि खोल करि,
तात मात भ्रात सुत स्वारथ पसारा है।
तू तौ इन्हैं आपा मानि ममता मगन भयौ,
बह्यौ भ्रममाहिं जिनधरम विसारा है॥
यह तौ कुटुंब सव दुःखहीकौ कारन है,
तजि मुनिराज निजकारज विचारा है।
तातैं गहौ धर्म सार स्वर्गमोक्षसुखकार,
सोई लहै भवपार जिन धर्म धारा है ॥ ३४ ॥

सोचत हौ रैनि दिन किहिं विधि आवै धन,
सो तौ धन धर्म विना किनहू न पायौ है।
यह तौ प्रसिद्ध वात जानत जिहान सव,
धर्मसेती धन होय पापसौं विलायौ है ॥
धर्मके कियेतैं सव दुःखकौ विनास होत,
सुखकौ निवास परंपरा मोख गायौ है।
तातैं मन वच काय धर्मसौं लगन लाय,
यह तौ उपाय वीतरागजी वतायौ है ॥ ३५ ॥

व्यवसायचतुष्क ।

केई सुर गावत हैं केई तौ बजावत हैं,
केई तौ बनावत हैं भांडे मृत्ति सानिके ।
केई खाक फटकै हैं केई खाक गटकै हैं,
केई खाक लपटै हैं केई स्वांग आनिके ॥
केई हाट बैठत हैं अंबुधिमें पैठत हैं,
केई कान ऐंठत हैं आप चूक जानिके ।
एक सेर नाज काज अपनो सरूप त्याज,
डोलत हैं लाज काज धर्म काज हानिके ॥ ३६ ॥
शिष्यकौं पढ़ावत हैं देहकौं चढ़ावत हैं,
हेमकौं गढ़ावत हैं नाना छल ठानिके ।
कौड़ी कौड़ी मांगत हैं कायर ह्वै भागत हैं,
प्रात उठि जागत हैं स्वारथ पिछानिके ॥
कागदको लेखत हैं केई नख पेखत हैं,
केई कृषि देखत हैं अपनी प्रवानिके ।
एक सेर नाज काज अपनो सरूप त्याज,
डोलत हैं लाज काज धर्म काज हानिके ॥ ३७ ॥
केई नटकला खेलैं केई पटकला वेलैं,
केई घटकला झेलैं आप वैद मानिके ।
केई नाच नाचि आवैं केई चित्रकौं बनावैं,
केई देश देश धावैं दीनता बखानिके ॥
मूरखको पास चहैं नीचनकी सेवा वहैं,
चोरनके संग रहैं लोक लाज मानिके ।

---

१ राग । २ बर्तन, मिट्टीके । ३ समुद्रमें । ४ सोनेको । ५ खेती ।

एक सेर नाज काज अपनो सरूप त्याज,
डोलत हैं लाज काज धर्म काज हानिके ॥ ३८ ॥
केई सीसको कटावैं केई सीस बोझ लावैं,
केई भूपद्वार जावैं चाकरी[1] निदानकै ।
केई हरी तोरत हैं पाहनको फोरत हैं,
केई अंग जोरत हैं हुंनर विनोनकै[2] ।
केई जीव घात करैं केई छंदको उचरैं,
नानाविधि पेट भरैं इन्हैं आदि ठानकै ।
एक सेर नाज काज अपनो सरूप त्याज,
डोलत हैं लाज काज धर्म काज हानकै ॥ ३९ ॥

गृहदुःखचतुष्क ।

रुजगार बनै नाहिं धन तौ न घरमाहिं,
खानेकी फिकर बहु नारि चाहै गहना ।
दैनेवाले फिरि जाहिं मिलै तौ उधार नाहिं,
साझी मिलैं चोर धन आवै नाहिं लहना ॥
कोऊ पूत ज्वारी भयौ घरमाहिं सुत थयौ,
एक पूत मरि गयौ ताकौ दुःख सहना ।
पुत्री वर जोग भई व्याही सुता जम लई,
एते दुःख सुख जानै तिसै कहा कहना ॥ ४० ॥
देहमाहिं रोग आयौ चाहिजै जिया भरायौ,
फटि गये अंबर चरणदासी हैं नही ।
नारी मन जार भायौ तासौं चित्त अति लायौ,
यह तौ निवल वह देत दुःख अतिही ॥

---

१ नौकरीकी इच्छा करके । २ विज्ञान ।

गृहमाहिं चोर परैं आगी लगै सब जरैं,
राजा लेहि लूट बांधि मारैं सीस पनही।
इष्टको वियोग औ अनिष्टको संजोग होइ,
एते दुःख सुख मानै सो तौ मूढ़मति ही ॥ ४१ ॥
जेठमास धूप परै प्यास लगै देह जरै,
कहीं सुनी शादी गमी तहां जायो चहिये।
वर्षामें चुचात भौन लकरी निवरि गई,
ताकौं चलो लैन पाँव डिगो दुःख लहिये ॥
शीतके सहायमाहिं अंवर नवीन नाहिं,
भूख लगै प्रात मिलै नाहिं कष्ट सहिये।
जे जे दुःख गृहमाहिं कहांलौं बखाने जाहिं,
तिन्हें सुख जानै सो तौ महामूढ़ कहिये ॥ ४२ ॥
तिनकौ पुरानो घर कौड़ी सौ न धान जामैं,
मूसे बिल्ली सांप बीछू न्योले जु रहत हैं।
भाजन तौ मृत्तिकाके फूटे खाली धान नाहिं,
टूटी जो खरैरी खाट मत्कुिकौं लहत हैं॥
कुटिल कुरूप नारी कानी काली कलहारी,
कर्कश वचन बोलै औगुन महत हैं।
हाहा मोहकर्मकी विटंवना कही न जाइ,
ऐसौ गृह पाय मूढ़ त्यागौ ना चहत है॥ ४३ ॥

उपदेश।

जिंदगी सँहलपै नाहक धरम खोवै,
जाहिर जहान दीखै ख्वावका तमासा है।

---

१ फूसका। २ चुभनेवाली। ३ खटमल। ४ थोड़ीसी। ५ स्वप्न।

कबीलेके खातिर तू काम बद करता है,
अपना मुलक छोड़ि हाथ लिया कांसा है ॥
कौड़ी कौड़ी जोरि जोरि लाख कोरि जोरता है,
कालकी कुमक आएँ चलना न मासा है ।
सोइत न फरामोश हूजिये गुसईयाको,
यही तौ सुखन खूब ये ही काम खासा है ॥ ४४ ॥

कवित्त (३१ मात्रा) ।

हर छिन नाव लेइ सांईका, दिलका कुफ़र सबै करि दूर ।
पाक बेऐब हमेश भिर्स्त दे, दोजक-फंद करै चकचूर ॥
हंमां सुमां जहान सब बूझैं, नाहीं बूझैं बंदे ते कूर ।
बेचि मूल वेचमन साहिब, चंसमों अंदर खड़ा हुजूर ॥ ४५ ॥

जीवके बैरी वर्णन, सवैया इकतीसा ।

सफरस फास चाहै रसना हू रस चाहै,
नासिका सुवास चाहै नैन चाहै रूपकौं ।
श्रवन शबद चाहै काया तौ प्रमाद चाहै,
वचन कथन चाहै मन दौर धूपकौं ॥
क्रोध क्रोध कर्यौ चाहै मान मान गह्यौ चाहै,
माया तौ कपट चाहै लोभ लोभ कूपकौं ।
परिवार धन चाहै आशा विषै-सुख चाहै,
एते बैरी चाहैं नाहीं सुख जीव भूपकौं ॥ ४६ ॥

बैरी दूर करनेका उपाय ।

जीव जो पै स्याना होय पांचौं इंद्री वसि करै,
फास रस गंध रूप सुर राग हरिकै ।

---

१ परिवार । २ अपना राज्य । ३ भिक्षाका पात्र । ४ चढ़ाई । ५ क्षण-मर भी । ६ भूल जाना । ७ मलिनता । ८ मोक्ष । ९ नर्कका जंजाल । १० हम तुम सब । ११ आखोंके ।

आसन न तावैं काय वचकों सिखावैं मौन,
ध्यानमाहिं मन लावै चंचलता गरिकैं ॥
क्षमा करि क्रोध मारैं विनै धरि मान गारैं,
सरलसौं छल जारैं लोभदसा टरिकैं ।
परिवार नेह त्यागै विषै-सैन छांड़ि जागै,
तब जीव सुखी होय वैरी वस करिकैं ॥ ४७ ॥

नरकनिगोददुःख कथन ।

वसत अनंतकाल बीतत निगोदमाहिं,
अखर अनंत भाग ग्यान अनुसरै है ।
छासठि सहस तीनसै छतीस वार जीव,
अंतर मुहूरतमैं जन्मै और मरै है ॥
अंगुल असंखभाग तहां तन धारत है,
तहांसेती क्यौं ही क्यौं ही क्यौं ही कै निसरै है ।
इहां आय भूलि गयौ लागि विषै भोगनिमैं,
ऐसी गति पाय कहा ऐसे काम करै है ॥ ४८ ॥

निगोदके छतीस कारण ।

मन वच काय जोग जाति रूप लाभ तप,
कुल बल विद्या अधिकार मद करना ।
फरस रसन घ्रान नैन कान मगनता,
भूपति असन नारि चोरका उचरना ॥

---

१ संख्या प्रमाण; श्रुतज्ञानके अक्षरोंका भाग श्रुतकेवलीके ज्ञानमें देनेपर जो लब्ध आवे, उसको अक्षर कहते हैं। उसमें अनन्तका भाग दिया जाय फिर जो लब्ध आवे, उसका एक भाग सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तकका ज्ञान होता है। २ राजकथा, भोजनकथा, स्त्रीकथा और चोरकथाका कहना।

जूवा मांस मद दारी आखेट चोरी पर,-
नारी विसन क्रोध मान माया लोभ धरना।
एकांत विनय विपरीत संसय अग्यान,
एई भाव त्यागिकै निगोद पंथ हरना ॥ ४९ ॥

नरकदुःख।

सीत नर्कमाहिं परै मेरुसम उस्न गोला,
उस्न नर्क सीत गोला बीचमैं विलायौ है।
छेदनता भेदनता काटनता मारनता,
चीरनता पीरनता नाना भाँति तायौ है॥
रोग छ्यानवै विख्यात एक एक अंगुलमैं,
परनारी भोगी आगि-पूतली जलायौ है।
सागरौंकी थिति पूरी करी तैं अनंती वार,
अजहूं न समुझै है तोहि कहा भायौ है ॥ ५० ॥
भूख तौ विसेस जो असेस अन्न खाइ जाइ,
मिलै नाहिं एक कन एतौ दुःख पायौ है।
तृषा तौ अपार सब अंबुधिकौ नीर पीवै,
पावै नाहिं एक बूँद एतौ कष्ट गायौ है॥
आँखकी पलक मान साता तौ तहां न जान,
क्रोधभाव भूरि वैर उद्धत वतायौ है।
सागरोंकी थिति पूरी करी तैं अनंती वार,
अजहूं न समझै है तोहि कहा भायौ है ॥ ५१ ॥

पुण्यपाप कथन, छप्पय।

कवहुं चढ़त गजराज, बोझ कवहूं सिर भारी।
कवहुं होत धनवंत, कवहुं जिम होत भिखारी॥

---

१ रंडीबाजी।

कबहुं असन लहि सरस, कबहुं नीरस नहिं पावत ।
कबहुं बसन सुभ सघन, कबहुं तन नगन दिखावत ॥
कबहूं सुछंद[1] बंधन कबहुं, करमचाल बहु लेखिये ।
यह पुन्यपाप फल प्रगट जग, राग दोष तजि देखिये ॥५२॥
कबहुं रूप अति सुभग, कबहुं दुर्भग दुखकारी ।
कबहुं सुजस जस प्रगट, कबहुं अपजस अधिकारी ॥
कबहुं अरोग सरीर, कबहुं बहु रोग सतावत ।
कबहुं बचन हित मधुर, कबहुं कछु बात न आवत ॥
कबहूं प्रवीन कबहूं मुगध[2], विविधरूप जन पेखिये ।
यह पुन्यपापफल प्रगट जग, राग दोष तजि देखिये ॥५३॥

मिथ्यादृष्टि कथन, सवैया इकतीसा ।

नारीरस राचत है आठों मद माचत है,
रीझि रीझि नाचत है मोहकी मगनमें ।
ग्रंथनकौं बांचत है विषैकौं न वांचत[3] है,
आपनपो बांचत[4] है भ्रमकी पगनमें ॥
स्वारथकौं जांचत[5] है स्वारथ[6] न जांचत है,
पाप भूरि सांचत[7] है कामकी जगनमें ।
पोपत है पांचनकौं[8] सहै नर्क आंचनकौं,
ऐसी करतूति करै लोभकी लगनमें ॥ ५४ ॥
ग्रंथनके पढ़ें कहा पर्वतके चढ़ें कहा,
कोटि लच्छि बढ़ें कहा कहा रंकपनमें ।

---

१ स्वच्छन्द, स्वतंत्र । २ मुग्ध, मूर्ख । ३ विषयोंको नहीं छोड़ता है । ४ आत्मत्वसे वंचित होता है । ५ अपने मतलबके लिये याचना करता है । ६ आत्महित । ७ संचित करता है । ८ पांचों इंद्रियोंको ।

संजम आचरैं कहा मौनव्रत धरैं कहा,
तपस्याके करैं कहा कहा फिरैं बनमें ॥
छंद करैं नये कहा जोगासन भये कहा,
दानहूके दये कहा बैठें साधुजनमें ।
जौलौं ममता न छूटै मिथ्याडोरी हू न टूटै,
ब्रह्मज्ञान विना लीन लोभकी लगनमें ॥ ५५ ॥

सवैया तेईसा ।

मौन रहैं वनवास गहैं, वर काम दहैं जु सहैं दुख भारी ।
पाप हरैं सुभरीति करैं, जिनवैन धरैं हिरदे सुखकारी ॥
देह तपैं वहु जाप जपैं, न वि आप जपैं ममता विसतारी ।
ते मुनि मूढ़ करैं जगरूढ़, लहैं निजगेह न चेतनधारी॥५६॥

गुरु शिष्यके प्रश्नोत्तर ।

सोचत जात सबै दिनरात, कछू न वसात कहा करिये जी ।
सोच निवार निजातम धारहु, राग विरोध सबै हरिये जी ॥
यौं कहिये जु कहा लहिये, सु वहै कहिये करुना धरिये जी ।
पावत मोख मिटावत दोष, सु यौं भवसागरकौं तरिये जी ५७

वीतरागस्तुति, छप्पय ।

वीतरागकौ धर्म, सर्व जीवनकौ तारन ।
वीतरागकौ धर्म, कर्मकौ करै निवारन ॥
वीतरागकौ धर्म, प्रगट क्रोधादिक नासै ।
वीतरागकौ धर्म, ग्यान केवल परगासै ॥
जय वीतरागकौ धर्म यह, राग दोष जामैं नही ।
संसार परत इस जीवकौ, धर्म सरन जिनवर कही ५८

धर्मका महत्त्व, सवैया इकतीसा।

चिंतामनि पोरसा (?) रसायन कलपवृच्छ,
कामधेनु चिंतावेलि पारस प्रमान रे।
इन्हें आदि उत्तम पदारथ हैं जगतमैं,
मिलैं एक भव सुख देत परधान रे॥
परभौ गमन किये चलत न संग कोऊ,
विना पुन्य उदै एऊ मिलत न आन रे।
धर्मसौं अनेक सुख पावै भव भव जीव,
तातैं गहौ धर्म परंपरा निरवान रे॥ ५९॥

मिथ्यादृष्टिवर्णन।

असिधारी देव मानैं लोभी गुरु चित्त आनैं,
हिंसामैं धरम जानैं दूरि सो धरमसौं।
माटी जल आगि पौन वृच्छ पशु पंखी आन,
इन्हैं आदि सेवैं कैसैं छूटैं ते करमसौं॥
रोम चाम हाड़ विष्टा आदि जे अपावन हैं,
तिन्हैं सुचि मानैं आंखि मूंदी है भरमसौं।
दीरघ संसारी तिन्हैं देखि संत चुप्पु धारी,
सबसौं बसाय न बसाय बेसरमसौं॥ ६०॥

सम्यग्दृष्टीकी इच्छा, सवैया (मदिरा)।

आगमको पढ़िबौ जिनवंदन, संगति साधरमीजनकी।
संजमवंत गुनज्ञ कथा, गहि मौन कथा सठ लोगनकी॥
सर्वनिसौं हितवैन उचारन, भावन पावन[1] चेतनकी।
ए प्रगटौ भवभौ मुझ तौ लग, जौंलग मोख न कर्मनकी॥६१॥

---

1 पवित्र आत्माकी भावना।

व्यवहारसम्यक्त्व तथा निश्चयसम्यक्त्व, छप्पय ।

नमौं देव अरहंत, अष्टदश दोष रहित हैं ।
वंदौं गुरु निरग्रंथ, ग्रंथ ते नाहिं गहत हैं ॥
वंदौं करुनाधर्म, पापगिरि दलन वज्र वर ।
वंदौं श्रीजिनवचन, स्यादवादांक सुधाकर ॥
सरधान द्रव्य छह तत्त्वकौं, यह सम्यक विवहार मत ।
निहचैं विसुद्ध आतम दरव, देव धरम गुरु ग्रंथ नुत॥६३॥

सोचके छोड़नेका वर्णन, सवैया तेईसा ।

काहेकौं सोच करै मन मूरख, सोच करैं कछु हाथ न ऐ है।
पूरव कर्म सुभासुभ संचित, सो निहचैं अपनो रस दै है॥
ताहि निवारन को वलवंत, तिहूं जगमाहिं न कोइ लसै है।
तातैं हि सोच तजौ समता गहि, ज्यौं सुख होइ जिनंद कहै है॥

उद्यम वर्णन, सवैया इकतीसा ।

रोजगार विना यार यारसौं न करै प्यार,
रोजगार विना नार नाहर ज्यौं घूरै है ।
रोजगार विना सव गुण तौ विलाय जाय,
एक रोजगार सव औगुनकौं चूरै है ॥
रोजगार विना कछू वात वनि आवै नाहिं,
विना दाम आठौं जाम बैठो धाम झूरै है ।
रोजगार वनै नाहिं रोज रोज गारी खाहिं,
ऐसौ रोजगार एक धर्म कीये पूरै है ॥ ६४ ॥

ज्ञानीचिन्तमन, सवैया तेईसा ।

कर्म सुभासुभ जो उदयागत, आवत हैं जव जानत ज्ञाता ।
पूरव भ्रामक भाव किये वहु, सो फल मोहि भयौ दुखदाता ॥

सो जड़रूप सरूप नहीं मम, मैं निज सुद्ध सुभावहि राता।
नास करौं पलमैं सबकौं अब, जाय वसौं सिवखेत विख्याता॥
सिद्ध हुए अब होंइ जु होंइगे, ते सब ही अनुभौगुनसेती।
ताविन एक न जीव लहै सिव, घोर करौ किरिया बहु केती॥
ज्यौं तुपमाहिं नहीं कनलाभ, किये नित उद्यमकी विधि जेती।
यौं लखि आदरिये निजभाव, विभाव विनास कला सुभ एती,

ज्ञानीका बलवर्णन, छप्पय।

धाम तजत धन तजत, तजत गज वर तुरंग रथ।
नारि तजत नर तजत, तजत भुवपति प्रमादपथ॥
आप भजत अघ भंजत, भजत सब दोप भयंकर।
मोह तजत मन तजत, सजत दल कर्म सत्रुपर॥
अरि चट्टचट्ट सब कट्टकरि, पट्टपट्ट महि पट्ट किय।
करि अट्ठ नट्ठ भवकट्ठ दहि, सट्ट सट्ट सिव सट्ट लिय॥६७॥
तजत अंग अरधंग, करत थिर अंग पंग मन।
लखि अभंग सरवंग, तजत वचननि तरंग मन॥
जित अनंग थिति सैलसिंगै, गहि भावलिंग वर।
तप तुरंग चढ़ि समर रंग रचि, करम जंग करि॥
अरि झट्ट झट्ट मद हट्ट करि, सट्ट सट्ट चौपट्ट किय।
करि अट्ठ नट्ठ भव कट्ठ दहि, सट्ट सट्ट सिव सट्ट लिय॥६८॥
भरम नष्ट भय नष्ट, कष्ट तन सहत धीर धर।
वचन मिष्ट गहि रहत, लहत निज धाम पुष्टकर॥

---

१ मैं अपने शुद्ध स्वभावमें रक्त हूं। २ भागते हैं। ३ चटाचट, झटपट। ४ काटकरके। ५ पटापट। ६ पृथ्वीपर। ७ पछाड़ दिये। ८ नष्ट। ९ भवकष्ट। १० पा लिया। ११ शैलशृंग, पर्वतका शिखर।

सुद्धदृष्टि लखि दुष्ट, सिष्टकौ हेत विहंडित।
करम थाल करि भिष्ट, भाव उतकिष्ट सुमंडित ॥
सुभ परस मिष्ट समता सुधा, गट्ट गट्ट तिन गट्ट किय।
करि अट्ठ नट्ठ भव कट्ठ दहि, सट्ट सट्ट सिव सट्ट लिय॥६९॥
गहंत पंच[1] व्रत सार, रहित परपंच करन पेन।
समिति पंच प्रतिपाल, जपत नित इष्ट पंचे[2] मन ॥
धरत पंच आचार, पंच विग्यान विचारत।
लहत पंच सिवहेत, पंच चारित्त चितारत ॥
अरि छट्ट छट्ट परिकट्ट करि, तट्ट तट्ट दहवट्ट किय।
करि अट्ठ नट्ठ भवकट्ठ दहि, सट्ट सट्ट सिव सट्ट लिय ॥७०॥

मिथ्यात्वादि सिद्धपर्य्यंत अवस्थाएँ, सवैया इकतीसा।

मिथ्या भाव मारत हैं सम्यककौं धारत हैं,
अव्रतकौं टारत हैं गारत हैं ममता।
महाव्रत पारत हैं श्रेणीकौं सँभारत हैं,
वेदभाव जारत हैं लोभ भाव ममता ॥
घातिया निवारत हैं ज्ञानकौं पसारत हैं,
लोकालोककौं निहारैं इंद्र आय नमता।
जोगकौं विडारत हैं मोखकौं विहारत हैं,
ऐसी गति धारैं सुख होत अनोपमता ॥ ७१ ॥

सर्वगुरुस्तुति वर्णन, छंद करखा।

मोहकौं भानिकैं, आपकौं जानिकैं,
ज्ञानमैं आनिकैं, होत ग्याता।

---

१ पांच इंद्रिय। २ पंचपरमेष्ठी।

मारकौं मारिकैं, वामकौं टारिकैं,
पापकौं डारिकैं, पुन्य पाता ॥
क्रोधकौं जारिकैं, मानकौं गारिकैं,
वंककौं दारिकैं, लोभ हाता ।
कर्मकौं नासिकैं, मोखमैं वासिकैं,
ताहिकौं चित्तमैं, भव्य ध्याता ॥ ७२ ॥

उपदेश, सवैया इकतीसा ।

जगतके निवासी जगहीमैं रति मानत हैं,
मोखके निवासी मोखहीमैं ठहराये हैं ।
जगके निवासी काल पाय मोख पावत हैं,
मोखके निवासी कभी जगमैं न आये हैं ॥
एतौ जगवासी दुखवासी सुखरासी नाहिं,
वे तो सुखरासी जिनवानीमैं बताये हैं ।
तातैं जगवासतैं उदास होइ चिदानंद,
रत्नत्रयपंथ चलैं तेई सुखी गाये हैं ॥ ७३ ॥
याही जगमाहिं चिदानंद आप डोलत हैं,
भरम भाव धरैं हरैं आतमसकतकौं ।
अष्टकर्मरूप जे जे पुद्गलके परिनाम,
तिनकौं सरूप मानि मानत सुमतकौं ॥
जाहीसमै मिथ्या मोह अंधकार नासि गयौ,
भयौ परगास भान चेतनके ततकौं ।
तहीसमै जानौ आप आप पर पररूप,
भानि भव-भांवरि निवास मोख गतकौं ॥ ७४ ॥

---

१ कामदेवको । २ मायाको । ३ भ्रमण ।

रागदोष मोहभाव जीवकौ सुभावनाहिं,
जीवकौ सुभाव सुद्धचेतन वखानियें।
दर्व कर्मरूप ते तौ भिन्न ही विराजते हैं,
तिनकौ मिलाप कहो कैसें करि मानियें॥
ऐसो भेद ज्ञान जाके हिरदें प्रगट भयौ,
अमल अवाधित अखंड परमानियें।
सोई सु विचंच्छन मुकत भयौ तिहुँकाल,
जानी निज चाल पर चाल भूलि भानियें॥ ७५॥

मूढ़दशा वर्णन।

जैसें गजराज कोई पाहनफटिक जोई,
प्रतिविंव लखि सोई दंत दंतसौं अर्ख्यौ।
वानर मूठी विसेख पराधीन धरै भेख,
कूपमाहिं सिंह देख सिंह देखकै पर्ख्यौ॥
कांचभौनमाहिं स्वान सोर करै आप जान,
नलिनीकौ सूवा मान मोहि किन पकर्ख्यौ।
तैसें पसु-मोह व्याप परहीकौं कहै आप,
भ्रमसेती आपनपो आपन ही विसर्ख्यौ॥ ७६॥

जीवकी पूर्वदशा।

स्वपर न भेद पायौ परहीसौं मन लायौ,
मन न लगायौ निजआतम सरूपसौं।
रागदोषमाहिं सूतौ विभ्रम अनेक गूंतौ,
भयौ नाहिं वूतौं जो निकसौं भवकूपसौं॥

१ विद्वान्। २ स्फटिक पत्थर। ३ देखकरके। ४ कांचका घर। ५ सोता रहा। ६ गूंथा, उलझा रहा। ७ सामर्थ्य।

अब मिथ्यातम सान प्रगटौ प्रबोध-भान[1],
महा सुखदान आन मोह दौर धूपसौं।
आप आपरूप जान्यौ परहीकौं पर मान्यौं,
आपरस सान्यौ ठान्यौ नेह सिवभूपसौं॥ ७७॥

ज्ञानवर्णन।

सरसौं समान सुख नहीं कहूं गृहमाहिं,
दुःख तौ अपार मन कहांलौं बताइयै।
तात मात सुत नारि स्वारथके सगे भ्रात,
देह तौ चलै न साथ और कौन गाइयै॥
नरभौ सफल कीजै और स्वाद छांड़ि दीजै,
क्रोध मान माया लोभ चित्तमें न लाइयै।
ज्ञानके प्रकासनकौं सिद्धथान वासनकौं,
जीमें ऐसी आवै है कि जोगी होइ जाइयै॥ ७८॥

अशोकपुष्पमंजरी छंद।

रागभाव टारिकै सु दोषकौं विडारिकै,
सु मोहभाव गारिकै निहारि चेतनामई।
कर्मकौं प्रहारिकै सु भर्मभाव डारिकै,
सुधर्म दृष्टि दारिकै विचार सुद्धता लई॥
ज्ञानभाव धारिकै सु दृष्टिकौं पसारिकै,
लखौ सरूप तारिकै अपार मुद्धता[2] खई।
मत्तभाव मारिकै सु मारभाव छारिकै,
सु मोखकौं निहारिकै विहारकौं विदा दई॥ ७९॥

---

१ ज्ञानसूर्य्य। २ मुग्धता, अज्ञान।

भर्मभाव भानिकै सुभावकौं पिछानिकै,
सुध्यानमाहिं आनिकै सु आर्न-बुद्धि खै गई ।
धर्मकौं बखानिकै सुधासुभाव पानिकै,
सुप्रानभाव जानिकै सुजान चेतनामई ॥
सुद्धभाव ठानिकै सुबानिकौं प्रवानकै,
सुरूप सुद्ध मानिकै सु मान सुद्धता नई ।
अष्टकर्म हानिकै सुदिष्टिकौं प्रधानकै,
सुध्यानमाहिं आनिकै अग्यानकौं विदा दई ॥८०॥
चेतना सरूप जीव ज्ञानदृष्टिमें सदीव,
कुंभ आन आन घीव त्यौं सरीरसौं जुदा ।
तीनलोकमाहिं सार सास्वतो अखंडधार,
मूरतीककौं निहार नीरकौ बुदैबुदा ॥
सुद्धरूप बुद्धरूप एकरूप आपभूप,
आतमा यही अनूप पर्मजोतिकौ उदा ।
स्वच्छ आपने प्रमानि रागदोष मोह भानि,
भव्यजीव ताहि जानि छांड़ि शोक औ मुदा ॥८१॥
सुद्ध आतमा निहारि राग दोष मोह टारि,
क्रोध मान वंक गारि लोभ भाव भानु रे ।
पापपुन्यकौं विडारि सुद्धभावकौं सँभारि,
भर्मभावकौं विसारि पर्मभाव आनु रे ॥
चर्मदृष्टि ताहि जारि सुद्धदृष्टिकौं पसारि,
देहनेहकौं निवारि सेतध्यान ठानु रे ।

---

१ परबुद्धि । २ सम्यग्दर्शन । ३ बुदबुदा । ४ मोद, हर्ष । ५ नष्टकर ।
६ शुक्लध्यान ।

जागि जागि सैंन छार भव्य मोखकों विहार,
एक वारके कहे हजार वार जानु रे ॥ ८२ ॥

छप्पय ।

जीव चेतनासहित, आपगुन परगुन जानैं ।
पुग्गलद्रव्य अचेत, आप पर कछु न पिछानैं ॥
जीव अमूरतिवंत, मूरती पुग्गल कहियै ।
जीव ज्ञानमयभाव, भाव जड़ पुग्गल लहियै ॥
यह भेद ज्ञान परगट भयौ, जो पर तजि अनुभौ करै ।
सो परम अतिंद्री सुखं सुधा, भुंजत भौसागर तिरै ॥८३॥
यहैं असुद्ध मैं सुद्ध, देह परमान अखंडित ।
असंख्यातपरदेस, नित्य निरभै मैं पंडित ॥
एक अमूरति निर उपाधि, मेरो छैय नाहीं ।
गुनअनंतज्ञानादि, सर्व ते हैं मुझमाहीं ॥
मैं अतुल अचल चेतन विमल, सुखअनंत मोमैं लसैं ।
जब इस प्रकार भावत निपुन, सिद्धखेत सहजैं वसैं ॥८४॥

सवैया तेईसा ।

केवलग्यानमई परमातम, सिद्धसरूप लसै सिवठाहीं ।
ग्यायकरूप अखंड प्रदेस, लसै जगमैं जग सौं व्रह नाहीं ॥
चेतन अंक लियैं चिनमूरति, ध्यान धरौ तिसको निजमाहीं ।
राग विरोध निरोध सदा, जिम होइ वही तजिकें विधिं छाहीं ॥
राग विरोध नहीं उरअंतर, आप निरंतर आतम जानैं ।
भोगसँयोगवियोगविषैं, समता न करै समता परवानैं ॥

---

१ सोना छोड़ । २ सुखरूपी अन्तत । ३ पुद्गलद्रव्य । ४ नाश । ५ नि: ।
६ द्वेष । कर्मोंकी छाया ।

आन वखान सुहाइ नहीं, परधान पदारथसौं रति मानै।
सो वुधिवान निदान लहै सिव, जो जगके दुख यौं सुख मानै॥
ज्ञायकरूप सदा चिनमूरति, राग विरोध उभै परछाहीं।
आप सँभार करै जव आतम, वे परभाव जुदे कछु नाहीं॥
भाव अज्ञान करै जवलौं, तवलौं नहिं ग्यान लखै निजमाहीं।
भ्रामकभाव वढ़ाव करै जग, चेतनभाव करै सिवठाहीं॥८७॥

सिंहावलोकन–छप्पय।

सुनहु हंस[२] यह सीख, सीख मानौ सदगुरकी।
गुरकी आँन[३] न लोपि, लोपि मिथ्यामति उरकी॥
उरकी समता गहौ, गहौ आतम अनुभौ सुख।
सुख सरूप थिर रहै, रहै जगमें उदास रुख॥
रुखै[४] करौ नहीं तुम विषयपर, पर तजि परमातम मुनहु[५]।
मुनहु न अजीव जड़ नाहिं निज, निज आतम वर्नन सुनहु॥
भजत देव अरहंत, हंत मिथ्यात मोहकर।
करत सुगुरु परनाम, नाम जिन जपत सुमन धर॥
धरम दयाजुत लखत, लखत निजरूप अमलपद।
पदमभाव[६] गहि रहत, रहत[७] हुव दुष्ट अष्ट मद॥
मदनवल[८] घटत समता प्रगट, प्रगट अभय ममता तजत।
तजत न सुभाव निज अपर तज, तज सुदुःख सिव सुख भजत
लहत भेदविज्ञान, ज्ञानमय जीव सु जानत।
जानत पुग्गल अन्य, अन्यसौं नातौ भानत[९]॥

---

१ आखिरकार। २ हे आत्मन्। ३ आज्ञा। ४ अभिलाषा। ५ समझो। ६ कमलकी तरह अलिप्त रहकर। ७ रहित। ८ कामदेवका जोर। ९ नाश करता है।

भानत मिथ्या-तिमिर, तिमिर जासम नहिं कोई ।
कोई विकलप नाहिं, नाहिं दुविधा जस होई ॥
होई अनंत सुख प्रगट जब, जब प्रानी निजपद गहत ।
गहत न ममत लखि गेय सब, सब जग तजि सिवपुर लहत ॥
जपत सुद्धपद एक, एक नहिं लखत जीव तन ।
तनक परिग्रह नाहिं, नाहिं जहँ राग दोष मन ॥
मन वच तन थिर भयौ, भयौ वैराग अखंडित ।
खंडित आस्रवद्वार[1], द्वारसंवर[2] प्रभु मंडित ॥
मंडित समाधिसुख सहित जब, जब कषाय अरिगन खपत ।
खप तनममत्त निरमत्त नित, नित तिनके गुण भवि जपत ॥

ज्ञाता साता कथन, सवैया (सुन्दरी)।

जिनके घटमैं प्रगट्यौ परमारथ,
रागविरोध हिये न विथारैं[3] ।
करकैं अनुभौ निज आतमकौ,
विषया सुखसौं हित मूल निवारैं ॥
हरिकैं ममता धरिकैं समता,
अपनौ बल फोरि जु कर्म विडारैं ।
जिनकी यह है करतूति सुजान,
सुआप तिरैं पर जीवन तारैं ॥ ९२ ॥

सवैया इकतीसा ।

चेतनासहित जीव तिहुंकाल राजत है,
ग्यान दरसन भाव सदा जास लहिए ।

---

१ आत्मामें कर्म आनेका रास्ता । २ आत्मामें नवीन कर्मका न आना ।
३ विथारैं-फैलैं ।

रूप रस गंध फास पुदगलकौ विलास,
मूरतीक रूपी विनासीक जड़ कहिए ॥
याही अनुसार परदर्वकौ ममत्त डारि,
अपनौ सुभाव धारि आपमाहिं रहिए ।
करिए यही इलाज जातें होत आपकाज,
राग दोप मोह भावकौ समाज दहिए ॥ ९३ ॥
मिथ्याभाव मिथ्या लखौ ग्यानभाव ग्यान लखौ,
कामभोग भावनसौं काम जोरजारिकैं ।
परकौ मिलाप तजौ आपनपौ आप भजौ,
पापपुन्य भेद छेद एकता विचारिकै ॥
आतम अकाज करै आतम सुकाज करै,
पावै भवपार मोख एतौ भेद धारिकैं ।
यातै हूं कहत हेर चेतन चेतौ सवेर,
मेरे मीत हो निचीत एतौ काम सारिकैं ॥ ९४ ॥

अडिल्ल ।

अहो जीव निरग्रंथ, होय विपयन तजौ ।
निरविकलप निरद्वंद, सुद्ध आतम भजौ ॥
तत्त्वनिमैं परधान, निरंजन सोइ है ।
अविनासी अविकार, लखैं सिव होइ है ॥ ९५ ॥

मंदाक्रान्ता ।

देखौ देखौ भविक अधुना, राजते नाभिनंदा ।
घोरं दुःखं भजत भजते, सेवते सौख्यकंदा ॥

---

१ समूह । २ इस समय ।

जाको नामें जपत अमरा, होत ते मुक्तिराजा ।
एई, एई भवदधिविषें, धर्मरूपी जिहाजा ॥ ९६ ॥

ज्ञाताका चिन्तवन ।

सिद्धो सुद्धो अमल अचलो, निर्विकल्पो अबंधो ।
स्वच्छं भावं अजर अमरो, निर्भयो ज्ञानबंधो ॥
वर्नातीतो[1] रसविरहितो, फासभिन्नं अगंधो ।
सोहं सोहं निज निजविषें, पश्यतो[2] नैव अंधो ॥ ९७ ॥

बुद्धयातीतो अखल अतुलं, चेतनं निर्विकारो ।
क्रोधं मानं रहित अछलं, लोभभिन्नं अपारो ॥
रागं दोषं रहित अखयं, पर्म आनंदसिंधो ।
सोहं सोहं निज निजविषें, पश्यतो नैव अंधो ॥ ९८ ॥

अक्षातीतो गुणगणनिलो, निर्मदो अप्रमादो ।
लोकालोकं सकल लखितं, निर्ममत्तो अनादो ॥
सारं सारं अतनु अमनं, शब्दभिन्नं निरंधो ।
सोहं सोहं निजनिजविषें, पश्यतो नैव अंधो ॥ ९९ ॥

षट्द्रव्यकथन-सवैया इकतीसा ।

जीव और पुद्गल धरम अधरम व्योम,
काल एई छहों द्रव्य जगके निवासी हैं ।
एक एक दरवमें अनंत अनंत गुण,
अनंत अनंत परजायके विकासी हैं ॥

---

1 वर्णरहित । 2 देखता नहीं है ।

अनंत अनंत सक्ति अजर अमर सबै,
सदा असहाय निजसत्ताके विलासी हैं।
सर्व दर्व गेयरूप परभाव हेयरूप,
सुद्धभाव उपादेय यातैं अविनासी हैं ॥ १०० ॥

द्वादश अधिकार।

परिनामी दोय जीव पुद्गल प्रदेसी पांच,
कालविना करतार जीव भोगै फल हैं।
जीव एक चेतन अकास एक सर्वगत,
एक तीन धर्म और अधर्म भेद लहैं ॥
मूरतीक एक पुदगल एकक्षेत्री व्योम,
नित्य चार जीव पुदगल विना सु लहैं।
हेतु पंच जीवकौं है क्रिया जीव पुदगलमैं,
जुदे देस आनपच्छ भापत विमल हैं ॥ १०१ ॥

नवतत्त्वस्वरूप वर्णन।

जीवतत्त्व चेतन अजीव पुग्गलादि पंच,
कर्मनके आवनकौं आस्रव वखानिए।
आतम करमके प्रदेस मिलैं बंध कह्यौ,
आस्रव निरोध ताहि संवर प्रमानिए ॥
कर्म उदै देय कछू खिरैं निर्जरा प्रसिद्ध,
सत्तातैं कर्मकौ विनास मोख मानिए।
एई सात तत्त्व यामैं पुन्य पाप और मिलैं,
एही हैं पदारथ नौ भव्य हिये आनिए ॥ १०२ ॥

बीस स्थानोंके नाम ।

गुणथान चौदै जीव-थान चौदै पर्यापति,
षट प्राण दस संज्ञा गति चारि चार हैं ।
इंद्री पांच काय षट जोगै पंद्रै वेद तीन,
है कषाय चारि ज्ञान आठ परकार हैं ॥
संजम है सात चारि दर्शन लेस्या हैं षट,
भव्य दोय जानि षट सम्यक विथार हैं ।
सैनी दोय आहारक दोय उपयोग बार,
बीसठान आतमाके भाखे गणधार हैं ॥ १०२ ॥

कुबुद्धि वचन (निन्दा स्तुति) कवित्त ।

कहत है कुबुधि सुनि कंत मेरा कह्यौ,
भूलि जिनं जाहु जिननाथ पासैं ।
जाहुगे कहैंगे छांड़ि धन धाम तिय,
गहौ तप सहौ दुख भूख प्यासैं ॥

---

१ बादर एकेन्द्रिय सूक्ष्मएकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय असंज्ञी पंचेन्द्रिय संज्ञी पंचेन्द्रिय इनके, पर्य्याप्त और अपर्य्याप्त इसप्रकार १४ जीव समास हैं । २ आहार शरीर इन्द्रिय श्वासोछ्वास भाषा मन इसप्रकार छह पर्य्याप्ति होती हैं। ३ पांच इन्द्रिय मनोबल वचनबल कायबल श्वासोछ्वास और आयु इसप्रकार १० प्राण हैं । ४ आहार भय मैथुन परिग्रह ये चार संज्ञा हैं । ५ सत्य मनोयोग असत्य मनोयोग उभय मनोयोग अनुभय मनोयोग इसतरह चार वचन योग और औदारिक काययोग औदारिकमिश्र काययोग वैक्रियिक काययोग वैक्रियिक मिश्र काययोग आहारक काययोग आहारक मिश्रकाययोग कार्माण काययोग इसप्रकार १५ योग हैं । ६ अव्रत देशव्रत सामायिक छेदोपस्थापना परिहारविशुद्धि सूक्ष्मसांपराय यथाख्यात इसतरह सात संयम हैं । ७ मिथ्यात्व सासादन मिश्र औपशमिक क्षायोपशमिक और क्षायिक ये ६ सम्यक्त्वके भेद हैं । ८ पति । ९ मत जाओ ।

जहांकौ गयौ वाहुरौ[1] कोई नहीं,
देत वह वास जगवासमासैं ।
खान नहिं पान नहिं टकटकापुरीसम,
मोहि तजि चलौ हौं कहौं कासैं ॥ १०४ ॥

जिनस्तुति वर्णन—सवैया इकतीसा ।

स्याल ज्यौं जुरैं अनेक काम तौ सरै न एक,
सिंह होय एक तौ अनेक काज हुही है ।
तारे जो असंख्य मिलैं कहा अंधकार दावैं,
एक भानं-ज्योति[2] दसौंदिसा जोति उही है ॥
पाथर अपार भरे दारद न कहूं टरे,
चिंतामनि एक मन चिंता जिन तुही है ।
तैसैं भगवान गुनखान करुनानिधान,
सब देव आनमैं प्रधान एक तुही है ॥ १०५ ॥

ज्ञाता तथा मूढदशा, छप्पय ।

मिथ्यादृष्टी जीव, आपकौं रागी मानै ।
मिथ्यादृष्टी जीव, आपकौं दोषी जानै ॥
मिथ्यादृष्टी जीव, आपकौं रोगी देखै ।
मिथ्यादृष्टी जीव, आपकौं भोगी पेखै ॥
जो मिथ्यादृष्टी जीव सो, सुद्धातम नाहीं लहै ।
सोई ज्ञाता जो आपकौं, जैसाका तैसा गहै ॥ १०६

ज्ञानकथन, सवैया इकतीसा ।

चेतनके भाव दोय ग्यान औ अग्यान जोय,
एक निजभाव दूजौ परउतपात है ।

---

१ लौटकर आया । २ सूर्य्यका प्रकाश ।

तातैं एक भाव गहौ दूजौ भाव मूल दहौ,
जातैं सिवपद लहौ यही ठीक बात है ॥
भावकौ दुखायौ जीव भावहीसौं सुखी होय,
भावहीकौं फेरि फेर मोखपुर जात है ।
यह तौ नीकौ प्रसंग लोक कहैं सरवंग,
आगहीकौ दाधौ[1] अंग आग ही सिरात है ॥

ज्ञाता आलोचना कथन ।

आत्मा सचेतन है पुग्गल अचेतन है,
जीव अविनस्वर सरीर छवि छारसी ।
यह तौ प्रगट भेद आलसी न जानै क्यौं है,
जानै उद्यमीक सो तौ मोखकौ विहारसी ॥
घटमें दयाविसेख देख और जीवनकौं,
आतमगवेषी बुध झूर मन नारसी ।
जहां देखौ ग्याताजन तहां तौ अचंभौ नाहिं,
आरसीके देखें डर लागत है आरसी ॥ १०८ ॥

मूढकथन ।

ग्यानके लखनहारे विरले जगतमाहिं,
ग्यानके लखनहारे जगमें अनेक हैं ।
भाखैं निरपेक्षवैन[2] सज्जन पुरुष केई,
दीखत बहुत जिन्हैं वचनकी टेक हैं ॥
चूक परैं रिसखात ऐसे बहु जीव भ्रात,
औसर अचूक थोरे धरैं जे विवेक हैं ।

१ जला हुआ । २ जिसका कभी निरन्वय (सर्वथा) नाश न होवे ।

ग्याता जन थोरे मूढ़मती वहुतेरे नर,
जानै नाहिं ग्यान सर कूपकैसे भेक हैं ॥ १०९ ॥

हितोपदेश वर्णन, मत्तगयन्द ।

ज्ञान सोई जु करै हितकारज,
ध्यान सोई मनकौं वसि आनै ।
बुद्ध सोई जु लखै परमारथ,
मीत सोई दुविधा नहिं ठानै ॥
भूप सोई उर नीत विचारत,
नारि सोई भरता सनमानै ।
द्यानत सो न गहै परकौ धन,
पीर सोई परपीरकौं जानै ॥ ११० ॥

छन्दशास्त्रके आठगणोंके नाम, स्वरूप, स्वामी, फल, कवित्त ३१ मात्रा ।

यगन आदिलघु, ईदक, देत सुत,
भगन आदि गुरु, ससि, जस देह ।
रगण मध्य लघु, अगनि, मृत्यु फल,
जगन मध्य गुरु, रवि, गदगेह ॥
तगन अंतलघु, व्योम, अफल है,
सगन अंतगुरु, पवन, भजेह ।
नगन त्रिलघु, सुर, आयु प्रदाता,
मगन त्रिगुरू भू, लच्छि भरेह ॥ १११ ॥

---

१ तालाव । २ मैंडक । ३ पंडित । ४ मित्र । ५ दयानतदार अर्थात् ईमानदार और ग्रन्थकर्त्ताका नाम । ६ पराया कष्ट । ७ यगणके आदिमें लघु होता है, शेष दो वर्ण गुरु होते हैं । ८ यगणका देव जल है । ९ यगण पुत्रका दाता है । १० रोगोंका घर ।

अंतर्लापिका, छप्पय।

कौनै धर्म है सार, आन-मत भजै कि नाहीं।
किहि त्यागैं है सुजस, भरत हारे किहि ठाहीं॥
किहि थिर कीनैं ध्यान, कौन वंदैं अघ नासैं।
लोभवंत धन देह, श्रवणतैं कहा अभ्यासैं॥

वहु पाप कौनतैं वुद्धि सठ,
दया कौनकी धरहि मन।
मुनिराज कहा कहि भव्य प्रति,
जैनधरम मुन सुमन जन॥ ११२॥

शार्दूलविक्रीडित।

चैतन्यं अमलं अनादि अचलं, आनंद भावं मयं।
त्रैलोक्ये अखयं अखंडित सदा, सारं सुजानं स्वयं॥
राग द्वेष त्रिकर्म सर्व रहितं, स्वच्छं स्वभावं जुतं।
सोहं सिद्ध विशुद्ध एक परमं, ज्ञानं उपाधिच्युतं॥११३॥

जीवके नव दृष्टान्त, सवैया इकतीसा।

जैसैं रैनिदीपक अरुन परकास बन्यौ,
तैसौ परकास सुद्ध जीवकौ बखान्यौ है।
दधिमाहिं घीव खीरमाहिं नीर पाहनमैं,
धात जैसैं तैसैं जीव पुद्गलमैं जान्यौ है॥

---

१ इस छप्पयमें किये हुए सब प्रश्नोंके उत्तर जैन धरम मुन सुमन जन इस पदमें निकलते हैं। इस पदके प्रत्येक अक्षरके साथ अन्तके न को मिलानेसे क्रमसे १२ प्रश्नोंके इस प्रकार १२ उत्तर होते हैं—1 जैन, २ न न, ३ धन, ४ रन, ५ मन, ६ मुन(नि), ७ न न, ८ सुन, ९ मन, १० न न, ११ जन, १२ जैन धरम मुन सुमन जन।

जैसैं हेमरूपो और फटिक जु निर्मल है,
तैसैं जीव निर्मल सुदिष्टिसौं पिछान्यौ है।
नव दृष्टान्त करिकै जीवकौ सरूप जान्यौ,
परभाव भान्यौ सुद्ध भाव मन आन्यौ है ॥११४॥

हर्ष-शोकजय मंत्र।

केई केई वार जीव भूपति प्रचंड भयौ,
केई केई वार जीव कीटरूप धर्‍यौ है।
केई केई वार जीव नौग्रीवक जाय वस्यौ,
केई वार सातमैं नरक अवतर्‍यौ है॥
केई केई वार जीव राघौ मच्छ होइ चुक्यौ,
केई वार साधारन तुच्छ काय वर्‍यौ है।
सुख और दुःख दोऊ पावत है जीव सदा,
यह जान ग्यानवान हर्ष सोक हर्‍यौ है ॥ ११५ ॥

ज्ञानीमहिमा, कुंडलिया।

समदिष्टी निजरूपकौं, ध्यावत है निजमाहिं।
कर्मसत्रु छय करत है, जाकै ममता नाहिं ॥
जाकै ममता नाहिं, आप परभेद विचारै।
छहौं द्रव्यतैं भिन्न, सुद्ध निजआतम धारै ॥
करै न राग विरोध, मिलै जो इष्ट अनिष्टी।
सो सिवपदवी लहै, वहै जो है समदिष्टी ॥ ११६ ॥

उपसंहार।

वार वार कहैं पुनरुक्त दोष लागत है,
जागत न जीव तूतौ सोयौ मोह झगमैं।

आतमासेती विमुख गहै राग दोषरूप,
पंचइंद्रीविषैसुखलीन पगपगमैं ॥
पावत अनेक कष्ट होत नाहिं अष्ट नष्ट,
महापद भिष्ट भयौ भमै सिष्टमगमैं।
जागि जगवासी तू उदासी व्हैकै विषयसौं,
लागि सुद्ध अनुभौ ज्यौं आवै नाहिं जगमैं ॥११७॥

ग्रन्थमहिमा।

जो इसकौं सुनै तिसै काननकौं हितकारी,
जो इसकौं सुनै तिसै मंगलकौ मूल है।
जो इसकौं पढ़ै ताहि ज्ञान तौ विशेष बढ़ै,
यादि करै सो तौ पावै भव दधिकौ कूल है॥
सकल ग्रंथनिमैं सार सार निज आतमा है,
सुध उपयोगमई ताकौ जो न भूल है।
सोई साधं सोई संत सोई सब गुनवंत,
लहै जु अनंत सुख नासै कर्म थूल है॥ ११८ ॥

कविलघुता।

पिंगल न पढ़यौ नहीं देखी नाममाला कोऊ,
व्याकरण काव्य आदि एक नाहिं पढ़यौ है।
आगमकी छाया लैकै अपनी सकति सार,
सैलीके प्रभावसेती स्वर कोट(?) गढ़यौ है॥
अच्छर अरथ छंद जहां जहां भंग होय,
तहां तहां लीजे सोध ग्यान जिन्हैं बढ़यौ है।
वीतराग थुति कीजै साधरमी संग लीजे,
आगम सुनीजै पीजै ग्यानरस कढ़यौ है ॥११९॥

---

१ किनारा।

सत्रैसौ ठावन मगसिरवदी छटि बढ़ी,
आगरेमैं सैली सुखी निजमनधनसौं ।
मानसिंहसाह औ बिहारीदास ताको शिष्य,
द्यानत विनती यह कहै सब जनसौं ॥
जिहिविधि जानौ निजआतम प्रगट होइ,
वीतरागधर्म बढ़ै सोई करौ तनसौं ।
दुखित अनादिकाल चेतन सुखित करौ,
पावै सिवसुखसिंधु छूटै दुःख वनसौं ॥ १२० ॥
बानी तौ अपार है कहांलग वखान करौं,
गणधर इंद्र आदि पार नहीं पायौ है ।
तुच्छमती जीव ताकी कौन वात पूछत है,
जे तौ कछू कहै ते तौ तहां ही समायौ है ।
अच्छर अरथ वानी तीनौ तौ अनादि मानी,
करै कहै कौन मूढ़ कहत मैं गायौ है ।
याही ममतासौं चिरकाल जगजाल रुलै,
ग्यानी सब्दजाल भिन्न आपरूप पायौ है ॥ १२१ ॥

इति उपदेशशतक ।

अथ सुबोध पंचासिका ।

सोरठा ।

ओंकार मझार, पंचपरमपद वसत हैं ।
तीन भवनमैं सार, वंदौं मनवचकायसौं ॥ १ ॥
अच्छरज्ञान न मोहि, छंदभेद समझौं नहीं ।
बुधि थोरी किम होय, भाषा अच्छर-बावनी ॥ २ ॥
आतम कठिन उपाय, पायौ नरभौ क्यौं तजै ।
राई उदधि समाय, ढूंढी फिर नहिं पाइए ॥ ३ ॥
इहविधि नरभौ कोइ, पाय विषैरससौं रमै ।
सो सठ अंमृत खोय, हालाहल विष आचरै ॥ ४ ॥
ईसुर भाख्यौ एह, नरभव मति खोवै वृथा ।
फिर न मिलै यह देह, पछितावौ बहु होइगौ ॥५॥
उत्तम नर अवतार, पायौ दुखकरि जगतमैं ।
यह जिय सोच विचार, कछु तोसा सँग लीजिए ॥६॥
ऊरधगतिकौ बीज, धर्म न जो नर आदरै ।
मानुष जौनि लही जु, कूप परै नर दीप लै ॥ ७ ॥
रिस तजिकै सुन बैन, सार मनुष सब जोनिमैं ।
ज्यौं मुख ऊपर नैन, भान दिपै आकासमैं ॥ ८ ॥

छन्द चाल ।

रीझ रे नर नरभौ पाया, कुल गोत विमल तू आया ।
जो जैनधरम नहिं धारा, सब लाभ विषै सँग हारा ॥ ९ ॥
लिखि बात हिये यह लीजै, जिनकथित धर्म नित कीजै ।
भवदुखसागरकौं तरिए, सुखसौं नौका जो धरिये ॥ १० ॥

लीन विषै डंक अहि भरिया, भ्रममोहतैं मोहित परिया।
विधिना जब दई है घुमरिया, तब नरकभूमि तू परिया॥११॥
ए नर करि धर्म अगाऊ, जब लौं धनजोबन चाऊ।
जब लौं नहिं रोग सतावै, तुहि काल न आवन पावै॥१२॥
ऐन हैं तुव आसन नैना, जब लौं तुव प्रकृति फिरै ना।
जब लौं तुव बुद्धि सवाई, करि धर्म अगाऊ भाई॥१३॥
ओस जल ज्यौं जोबन जै है, करि धर्म जरा फिरि एहै।
ज्यौं बूढ़ा बैल थकै है, कछु कारज करि न सकै है॥१४॥
औ खिन संयोग वियोगा, खिन जीवन खिन मृत रोगा॥
खिनमैं धन जोबन जावै, किहिविधि जगमें सुख पावै १५
अंबर धन जीतव गेहा, गर्जकरन चपल धन एहा॥
तन दरपन छाया जानौ, यह बात सदा उर आनौ॥१६॥

टाल परनादीकी।

अः जस ले नित आव, क्यौं नहिं धर्म सुनीजै।
नैन तिमिर नित हीन, आसन जोबन छीजै॥ १७॥
कमला चलै न पैंड, मुख ढांकै परिवारा।
देह थकै बहु पोपि, क्यौं न लखै संसारा॥ १८॥
खन नहिं छोड़ै काल, जो पाताल सिधारै।
बसै उदधिके बीच, जो कहुं दूर पधारै॥ १९॥
गन सुर राखैं तोहि, राखै उदधि मथैया।
तबहु न छोड़ै काल, दीप पतंग परैया॥ २०॥
घर गो सौना दान, मणि औषध सब यौं ही।
मंत्र यंत्र करि तंत्र, काल मिटै नहिं क्यौं ही॥ २१॥

१ हाथीके कानके सदृश धन चंचल है।

नरकतने दुख भूरि, जो तू जीव सम्हारै ।
तौं न रुचै आहार, अब सब परिग्रह डारै ॥ २२ ॥
चेतन गरभ मँझार, नरक अधिक दुख पायौ ।
बालपनेकौ खेद, सब जग परगट गायौ ॥ २३ ॥
छिनमैं धनकौ सोक, छिनमैं विरह सतावै ।
छिनमैं इष्टवियोग, तरुन कवन सुख पावै ॥ २४ ॥

ढाल दोहरेकी ।

मन भाई रे, चेत मन भाई रे ॥ टेक ॥
जरापनै दुख जे सहे, सुन भाई रे,
सो क्यों भूलै तोहि, चेत मन भाई रे ॥
जो तू विषयनमैं लग्यौ, मन भाई रे,
आतमहित नहिं होइ, चेत मन भाई रे ॥ २५ ॥
झूठ पाप करि ऊपज्यौ, मन भाई रे,
गरभ वस्यौ वस पाप, चेत मन भाई रे ।
सात धात लहि पापतैं, मन भाई रे,
अजहु पापरत आप, चेत मन भाई रे ॥ २६ ॥
नहीं जरा गद आइ है, मन भाई रे,
कहां गयौ जम जच्छ, चेत मन भाई रे ।
जो निचिंत तू ह्वै रह्यौ, मन भाई रे,
ए सब हैं परतच्छ, चेत मन भाई रे ॥ २७ ॥
टुक सुखकौं भवदधि पर्यौ, मन भाई रे,
पाप लहर दुख देत, चेत मन भाई रे ।
पकरौ धर्म जिहाजकौं, मन भाई रे,
सुखसौं पार करेत, चेत मन भाई रे ॥ २८ ॥

ठीक रहै धन सासतौ, मन भाई रे,
होइ न रोग न काल, चेत मन भाई रे।
तवहू धर्म न छाँड़ियै, मन भाई रे,
कोटि कटैं अघजाल, चेत मन भाई रे ॥ २९ ॥
डरपत जो परलोकतैं, मन भाई रे,
चाहत सिवसुख सार, चेत मन भाई रे।
क्रोध मोह विषयनि तजौ, मन भाई रे,
धर्मकथित जिन धार, चेत मन भाई रे ॥ ३० ॥
ढील न करि आरँभ तजौ, मन भाई रे,
आरंभमैं जियघात, चेत मन भाई रे।
जीवघाततैं अघ वढ़ै, मन भाई रे,
अघतैं नरकनिपात, चेत मन भाई रे ॥ ३१ ॥
नरक आदि तिहु लोकमैं, मन भाई रे,
इह परभव दुखरास, चेत मन भाई रे।
सो सब पूरव पापतैं, मन भाई रे,
जीव सहै वहु त्रास, चेत मन भाई रे ॥ ३२ ॥

ढाल, वीरजिनिंदकी।

तिहु जगमैं सुर आदि दै जी, जो सुख दुल्लभ सार।
सुंदरता मनभावनी जी, सो दै धर्म अपार ॥
रे भाई, अब तू धर्म सँभार, यह संसार असार, रे भा० ३३
थिरता जस सुख धर्मतैं जी, पावै रतन भँडार।
धर्मविना प्रानी लहै जी, दुख नाना परकार ॥ रे भा० ३४
दान धर्मतैं सुर लहै जी, नरक होत करि पाप।
इहविध जानैं क्यौं पड़ै जी, नरकविषैं तू आप ॥ रे भा० ३५

धर्म करत सोभा लहै जी, जय धनरथ गज वाजें।
प्रासुकदान प्रभावसौं जी, घर आवें मुनिराज॥रे भा० ३६
नवल सुभग मनमोहना जी, पूजनीक जगमाहिं।
रूप मधुर वच धरमतें जी, दुख कोउ व्यापै नाहिं॥रे भा० ३७
परमारथ यह वात है जी, मुनिकों समता सार।
विंनै मूल विद्यातनी जी, धर्म दया सिरदार॥ रे भा० ३८
फिर सुन करुना धर्मसौं जी, गुरु कहियें निरग्रंथ।
देव अठारह दोप विन जी, यह सरधा सिवपंथ॥रे भा० ३९
विन धन घर सोभा नहीं जी, दान विना घर जेह।
जैसें विपई तापसी जी, धर्म दयाविन तेह॥ रे भा० ४०

दोहा।

भौंदू धनहित अघ करै, अघसौं धन नहिं होय।
धरम करत धन पाइये, मन मानै कर सोय॥ ४१॥
मति जिय सोचै किंच तू, होनहार सो होय।
जे अच्छर विधिना लिखे, ताहि न मेटै कोय॥ ४२॥
यह वह वातें वहु करौ, पैठो सागरमाहिं।
सिखर चढ़ौ वस लोभके, अधिका पावौ नाहिं॥ ४३॥
रैनि दिना चिता चिंता,-माहिं जलै मति जीय।
जो दीया सो पाय है, और न होय सदीव॥ ४४॥
लागि धरम जिन पूजिये, साँच कहै सब कोय।
चित प्रभुचरन लगाइये, तव मनवांछित होय॥ ४५॥
वह गुरु हो मम संजमी, देव जैन हो सार।
साधरमी संगति मिलौ, जव लौं भव अवतार॥ ४६॥

---

१ मोढा।

शिवमारग जिन भासियौ, किंचित जानैं कोइ ।
अंत समाधिमरण करै, चहुँ गति दुख छय होइ ॥ ४७ ॥
षट्द्वै[1] गुण सम्यक गहै, जिनवानी रुचि जास ।
सो धनसौं धनवान है, जगमैं जीवन तास ॥ ४८ ॥
सरधा हिरदै जो करै, पढ़ै सुनैं दे कान ।
पाप करम सब नासिकै, पावै पद निरवान ॥ ४९ ॥
हितसौं अरथ बताइयौ, सुगुरु बिहारीदास ।
सत्रह सौ बावन बदी, तेरस कातिकमास ॥ ५० ॥
ग्यानवान जैनी सबै, बसैं आगरेमाहिं ।
अंतरग्यानी बहु मिलैं, मूरख कोऊ नाहिं ॥ ५१ ॥
छय उपशम बल, मैं कहे, द्यानत अच्छर एहु ।
दोष सुबोधपचासिका, बुधजन सुद्ध करेहु ॥ ५२ ॥

इति सुबोधपंचासिका ।

---

1 निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सित, अमूढदृष्टि, उपगूहन, स्थिति-करण, वात्सल्य, प्रभावना, ये षट्द्वै अर्थात् आठ सम्यग्दर्शनके अंग हैं ।

धर्मपचीसी।

दोहा।

भव्य-कमल-रवि सिद्ध जिन, धर्मधुरंधर धीर।
नमत संत जग-तम-हरन, नमौं त्रिविध गुरु वीर ॥ १ ॥

चौपाई (१५ मात्रा।)

मिथ्याविषयनिमैं रत जीव, तातैं जगमैं भमैं सदीव।
विविध प्रकार गहै परजाय, श्रीजिनधर्म न नेक सुहाय २
धर्मविना चहुं गतिमैं परैं, चौरासी लख फिरि फिरि धरैं।
दुखदावानलमाहिं तपंत, कर्म करैं फल भोग लहंत ॥ ३ ॥
अति दुर्लभ मानुष परजाय, उत्तम कुल धन रोग न काय।
इस औसरमैं धर्म न करैं, फिर यह औसर कबधौं बरैं ॥४॥
नरकी देह पाय रे जीव, धर्म विना पशु जान सदीव।
अर्थकाममैं धर्म प्रधान, ताविन अर्थ न काम न मान॥५॥
प्रथम धर्म जो करै पुनीत, सुभसंगम आवैं करि प्रीत।
विघन हरैं सब कारज सरैं, धनसौं चारौं कौनैं भरैं ॥६॥
जनम जरा मृतुके वस होय, तिहूंकाल जग डोलै सोय।
श्रीजिनधर्म रसायन पान, कबहुं न रुचि उपजै अग्यान ७
ज्यौं कोई मूरख नर होय, हालाहल गहि अंमृत खोय।
त्यौं सठ धर्म पदारथ त्याग, विषयनिसौं ठानै अनुराग॥८॥
मिथ्याग्रह-गहिया जो जीव, छांड़ि धरम विषयनि चित दीव।
यौं पसु कल्पवृक्षकौं तोड़ि, वृक्ष धतूरेके वहु जोड़ि ॥ ९ ॥
नरदेही जानौं परधान, विसरि विषै करि धर्म सुजान।
त्रिभुवन इंद्रतने सुख भोग, पूजनीक हो इंद्रन जोग ॥१०॥

चंद विना निसि गज विन दंत, जैसे तरुण नारि विन कंत।
धर्म विना त्यौं मानुष देह, तातैं करियै धर्म सनेह ॥ ११॥

हय गय रथ बहु पायक भोग, सुभट बहुल दल चमर मनोग॥
ध्वजा आदि राजा विन जानि, धर्म विना त्यौं नरभौ मानि१२

जैसैं गंध विना है फूल, नीर विहीन सरोवर भूल।
ज्यौं धन विन सोभित नहिं भौन, धर्म विना त्यौं नर चितौन॥

अरचै सदा देव अरहंत, चरचै गुरुपद करुनावंत।
खरचै दाम, धर्मसौं प्रेम, न रचै विषै सफल नर एम ॥१४॥

कमला चपल रहै थिर नाहि, जोबन कांति जरा लपटाहि।
सुत मित नारि नावसंजोग, यह संसार सुपनका लोग॥ १५॥

यह लखि चित धरि सुद्ध सुभाय, कीजै श्रीजिनधर्म उपाव।
यथा भाव जैसी मति गहै, तैसी गति तैसा सुख लहै ॥१६॥

जो मूरख धिषनाकरि हीन, विषै-ग्रंथ-रत मत नहिं कौन।
श्रीजिनभाषित धर्म न गहै, सो निगोदको मारग लहै ॥१७॥

आलस मंदबुद्धि है जास, कपटी विषैमगन सठ तास।
कायरता मद परगुण ढकै, सो तिरजंच जोनि लहि सकै १८

आरत रौद्र ध्यान नित करै, क्रोध आदि मच्छरता धरै।
हिंसक वैरभाव अनुसरै, सो पापिष्ट नरकगति परै॥ १९॥

कपटहीन करुणाचितमाहिं, हेय उपादे भूलै नाहिं।
भक्तिवंत गुणवंत जु कोय, सरलभाषि सो मानुष होय॥२०॥

श्रीजिनवचनमगन तपवान, जिन पूजै दे पात्रहिं दान॥
रहै निरंतर विषय उदास, सोई लहै सुरग आवास ॥२१॥

---

१ हिताहित बुद्धिसे। २ परीग्रहमें।

मानुषजोनि अंतकी पाय, मुनि जिनवचन विषै विमराय।
गहै महाव्रत दुद्धर वीर, सुकलध्यान थिर रहि सिव धीर२२
धरम करत सुख होय अपार, पाप करत दुख विविधप्रकार।
ग्वाल गुपाल कहैं सब नारि, इष्ट होय सोई अवधारि ॥२३॥
श्रीजिनधर्म मुकतिदातार, हिंसाधरम करत संसार ।
यह उपदेश जानि बड़भाग, एक धर्मसों करि अनुराग २४
व्रत संयम जिनपद थुति सार, निर्मल सम्यक भावन धार।
अंत कषाय विषय कृश करौ,ज्यौं तुम मुकतिकामिनी वरौ २५

दोहा।

वुधकुमुदनि ससि सुख करन, भवदुख सागर जान।
कहै ब्रह्म जिनदास यह, ग्रंथ धर्मकी खान ॥ २६ ॥
द्यानत जे बाँचैं सुनैं, मनमैं करैं उछाह।
ते पावैं फल सासतौ, मनवांछित फल-लाह ॥ २७ ॥

इति धर्मपच्चीसी ।

---

१ यान–जहाज

तत्त्वसार भाषा।

दोहा।

आदिसुखी अंतःसुखी, सिद्ध सिद्ध भगवान।
निज प्रताप परताप बिन, जगदर्पन जग आन ॥ १ ॥
ध्यान दहन विधि-काठ दहि, अमल सुद्ध लहि भाव।
परम जोतिपद बंदिकै, कहूं तत्त्वकौ राव ॥ २ ॥

चौपाई।

तत्त्व कहे नाना परकार, आचारज इस लोकमँझार।
भविक जीव प्रतिबोधन काज, धर्मप्रवर्तन श्रीजिनराज ॥३
आतमतत्त्व कह्यौ गणधार, स्वपरभेदतैं दोइ प्रकार।
अपनौ जीव सुतत्त्व बखानि, पर अरहंत आदि जिय जानि
अरहंतादिक अच्छर जेह, अरथ सहित ध्यावैं धरि नेह।
विविध प्रकार पुन्य उपजाय, परंपराय होय सिवराय ॥ ५
आतमतत्त्वतने द्वै भेद, निरविकलप सविकलप निवेद।
निरविकलप संवरकौ मूल, विकलप आस्रव यह जिय भूल ६
जहां न व्यापै विषय विकार, है मन अचल चपलता डार।
सो अविकल्प कहावै तत्त, सोई आपरूप है सत्त ॥ ७ ॥
मन थिर होत विकलपसमूह, नास होत न रहै कछु रूह।
सुद्ध सुभावविषै है लीन, सो अविकल्प अचल परचीन ॥८
सुद्धभाव आतम दृग ग्यान, चारित सुद्ध चेतनावान।
इन्हैं आदि एकारथ वाच, इनमैं मगन होइकै राच ॥ ९ ॥
परिग्रह त्याग होय निरग्रंथ, भजि अविकल्प तत्त्व सिवपंथ।
सार यही है और न कोय, जानै सुद्ध सुद्ध सो होय ॥१०

अंतर बाहिर परिग्रह जेह, मनवच तनसौं छांड़ै नेह।
सुद्धभाव धारक जब होय, तथा ग्यान मुनिपद है सोय ११
जीवन मरन लाभ अरु हान, सुखद मित्र रिपु गनै समान।
राग न रोष करै परकाज, ध्यान जोग सोई मुनिराज॥१२॥
काललब्धिवल सम्यक वरै, नूतन बंध न कारज करै।
पूरव उदै देह खिरि जाहि, जीवन मुकत भविक जगमाहि॥
जैसैं चरनरहित नर पंग, चढ़न सकत गिरि मेरु उतंग।
त्यौं विन साध ध्यान अभ्यास, चाहै करै करमकौ नास १४
संकितचित्त सुमारग नाहिं, विषैलीन वांछा उरमाहिं।
ऐसैं आस कहैं निरवान, पंचमकाल विषैं नहिं जान ॥१५॥
आतमग्यान दृग चारितवान, आतम ध्याय लहै सुरथान।
मनुज होय पावै निरवान, तातैं यहां मुकति मग जान १६
यह उपदेस जानि रे जीव, करि इतनौ अभ्यास सदीव।
रागादिक तजि आतम ध्याय, अटल होय सुख दुख मिटि जाय ॥ १७ ॥

आप प्रमान प्रकास प्रमान, लोक प्रमान, सरीर समान।
दरसन ग्यानवान परधान, परतैं आन आतमा जान १८
राग विरोध मोह तजि वीर, तजि विकलप मन वचन सरीर।
ह्वै निचिंत चिंता सब हारि, सुद्ध निरंजन आप निहारि॥१९
क्रोध मान माया नहिं लोभ, लेस्या सल्य जहां नहिं सोभ।
जन्म जरा मृतुकौ नहिं लेस, सो मैं सुद्ध निरंजन भेस २०
बंध उदै हिय लवधि न कोय, जीवथान संठान न होय।
चौदह मारगना गुनथान, काल न कोय चेतना ठान २१

१ सम्यग्दर्शन।

फरस वरन रस सुर नहि गंध, वरग[1] वरगना[2] जास न खंध[3]।
नहिं पुदगल नहिं जीवविभाव, सो मैं सुद्ध निरंजन राव॥२२॥
विविध भांति पुदगल परजाय, देह आदि भाषी जिनराय।
चेतनकी कहियै व्योहार, निहचैं भिन्न भिन्न निरधार॥२३॥
जैसैं एकमेक जल खीर, तैसैं आनौ जीव सरीर।
मिलैं एक पै जुदे त्रिकाल, तजै न कोऊ अपनी चाल॥२४॥
नीर खीरसौं न्यारौ होय, छांछिमाहिं डारै जो कोय।
त्यौं ग्यानी अनुभौ अनुसरै, चेतन जड़सौं न्यारौ करै॥२५॥

दोहा।

चेतन जड़ न्यारौ करै, सम्यकदृष्टी भूप।
जड़ तजिकैं चेतन गहै, परमहंसचिद्रूप॥ २६॥
ज्ञानवान अमलान प्रभु, जो सिवखेतमँझार।
सो आतम मम घट वसै, निहचैं फेर न सार॥ २७॥
सिद्ध सुद्ध नित एक मैं, ग्यान आदि गुणखान।
अगन[4] प्रदेस अमूरती, तन प्रमान तन आन॥ २८॥
सिद्ध सुद्ध नित एक मैं, निरालंव भगवान।
करमरहित आनंदमय, अँभै[4] अँखै[5] जग जान॥ २९॥
मनथिर होत विषै घटै, आतमतत्त्व अनूप।
ज्ञान-ध्यान वल साधिकै, प्रगटै ब्रह्मसरूप॥ ३०॥
अंवँर[6] घन फट प्रगट रवि, भूपर करै उदोत।
विषय कषाय घटावतैं, जिय प्रकास जग होत॥ ३१॥

---

१ समान अविभाग प्रतिच्छेदोंके धारक प्रत्येक कर्मपरमाणुको वर्ग कहते हैं। २ वर्गके समूहको वर्गणा कहते है। ३ स्कन्ध। ४ निर्भय। ५ अक्षय। ६ आकाशमें।

मन वच काय विकार तजि, निरविकारता धार।
प्रगट होय निज आतमा, परमातमपद सार॥ ३२॥
मौनगहित आसन सहित, चित्त चलाचल खोय।
पूरव सत्तामैं गलैं, नये रुकैं सिव होय॥ ३३॥
भव्य करैं चिरकाल तप, लहैं न सिव बिन ग्यान।
ग्यानवान ततकाल ही, पावैं पद निरवान॥ ३४॥
देह आदि परद्रव्यमैं, ममता करैं गँवार।
भयौ परसमैं लीन सो, बांधै कर्म अपार॥ ३५॥
इंद्रीविषैं मगन रहैं, राग दोष घटमाहिं।
क्रोध मान कलुषित कुधी, ग्यानी ऐसौ नाहिं॥ ३६॥
देखै सो चेतन नहीं, चेतन देखौ नाहिं।
राग दोष किहिसौं करौं, हौं मैं समतामाहिं॥ ३७॥
थावर जंगम मित्र रिपु, देखैं आप समान।
राग विरोध करैं नहीं, सोई समतावान॥ ३८॥
सब असंखपरदेसजुत, जनमैं मरै न कोय।
गुणअनंत चेतनमई, दिव्यदिष्टि धरि जोय॥ ३९॥
निहचै रूप अभेद है, भेदरूप व्योहार।
स्यादवाद मानै सदा, तजि रागादि विकार॥ ४०॥
राग दोष कलोलबिन, जो मन जल थिर होय।
सो देखै निजरूपकौं, और न देखै कोय॥ ४१॥
अमल सुथिर सरवर भयैं, दीसै रतनभँडार।
त्यौं मन निरमल थिरविषैं, दीसै चेतन सार॥ ४२॥
देखैं विमलसरूपकौं, इंद्रियविषै विसार।
होय मुकति खिन आधमैं, तजि नरभौ अवतार॥४३॥

जैसैं भूप नसैं सब सैन, भाग जाइ न दिखावै नैन।
तैसैं मोह नास जब होय, कर्मघातिया रहै न कोय ॥ ६६॥
कीनैं चारिघातिया हान, उपजै निरमल केवलग्यान।
लोकालोक त्रिकाल प्रकास, एक समैमें सुखकी रास ॥ ६७॥
त्रिभुवन इंद्र नमैं कर जोर, भाजैं दोषचोर लखि भोर।
आवै जु नाम गोत वेदनी, नासि भयैं नूतन सिवधनी ॥६८॥
आवागमनरहित निरबंध, अरस अरूप अफास अगंध।
अचल अबाधित सुख विलसंत, सम्यकआदि अष्टगुणवंत ६९
मूरतिवंत अमूरतिवंत, गुण अनंत परजाय अनंत।
लोक अलोक त्रिकाल विथार, देखै जानै एकहि वार ॥७०॥

सोरठा।

लोकसिखर तनुवात, कालअनंत तहां वसै।
धरमद्रव्य विख्यात, जहां तहां लौं थिर रहै ॥ ७१ ॥
ऊरधगमन सुभाव, तातैं वंक चलै नहीं।
लोकअंत ठहराव, आगैं धर्मदरव नहीं ॥ ७२ ॥
रहित जन्म मृति एह, चरमदेहतैं कछु कमी।
जीव अनंत विदेह, सिद्ध सकल वंदौं सदा ॥ ७३ ॥
ते हैं भव्य सहाय, जे दुस्तर भवदधि तरैं।
तत्त्वसार यह गाय, जैवंतौ प्रगटौ सदा ॥ ७४ ॥
देवसेन मुनिराज, तत्त्वसार आगम कह्यौ।
जो ध्यावैं हितकाज, सो ग्याता सिवसुख लहै ॥ ७५ ॥

---

१ राजाके मर जानेपर। २ आयुःकर्म। ३ अनंतज्ञान वीर्य सुख दर्शन सूक्ष्म अव्याबाध अवगाहन अगुरुलघु। ४ अन्तिम शरीरसे। ५ शरीररहित। ६ मूलग्रन्थ (७४ गाथा) देवसेनसूरिका प्राकृतमें है, उसका यह अनुवाद है।

सम्यकदरसन ग्यान, चारित सिवकारन कहे ।
नय व्यवहार प्रमान, निहचें तिहुमें आतमा ॥ ७६ ॥
लाख बातकी बात, कोटि ग्रंथको सार है ।
जो सुख चाहौ भ्रात, तो आतम अनुभौ करो ॥ ७७ ॥
लीजौ पंच सुधारि, अरथ छंद अच्छर अमिल ।
मो मति तुच्छ निहारि, छिमा धारियौ उरविषं ॥ ७८ ॥
द्यानत तत्त्व जु सात, सार सकलमें आतमा ।
ग्रंथ अर्थ यह भ्रात, देखौ जानौ अनुभवौ ॥ ७९ ॥

इति तत्त्वसार ।

दर्शनदशक।

छप्पय।

देखे श्रीजिनराज, आज सब विघन विलाये।
देखे श्रीजिनराज, आज सब मंगल आये॥
देखे श्रीजिनराज, काज करना कछु नाहीं।
देखे श्रीजिनराज, हौंस पूरी मनमाहीं॥
तुम देखे श्रीजिनराजपद, भौजल अंजुलिजल भया।
चिंतामनि पारस कलपतरु, मोह सबनिसौं उठि गया॥१॥
देखे श्रीजिनराज, भाज अघ जाहिं दिसंतर।
देखे श्रीजिनराज, काज सब होंइ निरंतर॥
देखे श्रीजिनराज, राज मनवांछित करिए।
देखे श्रीजिनराज, नाथ दुख कबहुं न भरिए॥
तुम देखे श्रीजिनराजपद, रोमरोम सुख पाइए।
धनि आजदिवस धनि अब घरी, माथ नाथकौं नाइए॥२॥
धन्य धन्य जिनधर्म, कर्मकौं छिनमें तोरै।
धन्य धन्य जिनधर्म, परमपदसौं हित जोरै॥
धन्य धन्य जिनधर्म, भर्मकौ मूल मिटावै।
धन्य धन्य जिनधर्म, सर्मकी राह बतावै॥
जग धन्य धन्य जिनधर्म यह, सो परगट तुमनैं किया।
भवि खेत पापे-तप तपतकौं, मेघरूप ह्वै सुख दिया॥ ३॥
तेज सूर[3]सम कहूं, तपत दुखदायक प्रानी।
कांति चंदसम कहूं, कलंकित मूरति मानी॥

---

१ कल्याणकी, आत्महितकी। २ पापरूपअग्निसे तप्त। ३ सूर्य्यसदृश।

वारिधिसम गुण कहूं, खारमें कौन भलप्पन ।
पारससम जस कहूं, आपसम करै न पर-तनै ॥
इन आदिपदारथ लोकमें, तुम समान क्यों दीजिये ।
तुम महाराज अनुपमदसा, मोहि अनूपम कीजिये ॥ ४ ॥
तब विलंब नहिं कियौ, चीर द्रोपदिको वाढ्यौ ।
तब विलंब नहिं कियौ, सेठ सिंहासन चाढ्यौ ॥
तब विलंब नहिं कियौ, सियातें पावक टार्यौ ।
तब विलंब नहिं कियौ, नीरें मातंग उवार्यौ ॥
इहविधि अनेक दुख भगतके, चूर दूर किय सुख अवनि ।
प्रभु मोहि दुःख नासनविषें, अब विलंब कारन कवन ॥५॥
कियौ भौनितें गौन, मिटी आरति संसारी ।
राह आन तुम ध्यान, फिकर भाजी दुखकारी ॥
देखे श्रीजिनराज, पापमिथ्यात विलायौ ।
पूजा थुति बहु भगति, करत सम्यकगुन आयौ ॥
इस मारवार संसारमें, कल्पवृक्ष तुम दरस है ।
प्रभु मोहि देहु भौभौविषें, यह वांछा मन सरस है ॥ ६ ॥
जै जै श्रीजिनदेव, सेव तुमही अघनासक ।
जै जै श्रीजिनदेव, भेवं षटद्रव्य प्रकासक ॥
जै जै श्रीजिनराज, एक जो प्रानी ध्यावै ।
जै जै श्रीजिनदेव, टेव अहमेव मिटावै ॥

---

१ पराये शरीरको अर्थात् दूसरी धातुओंको। २ पत्थर, ढेला। ३ जलमेंसे। ४ हाथी। ५ दुर्जनोंने। ६ दर्शन। ७ मगन। ८ मारवाड़रूपी (वृक्षरहित मरुदेश) संसारमें। ९ भेद।

जै जै श्रीजिनदेव प्रभु, हेय करमरिपु दलनकौं ।
हूजै सहाय सँघरायजी, हम तयार सिवचलनकौं ॥ ७॥

जै जिनंद आनंदकंद, सुरवृंदवंद पद ।
ग्यानवान सव जान, सुगुन-मनि-खान आन पदं (?) ॥

दीनदयाल कृपाल, भविक भौजाल निकालक ।
आप बूझ सब सूझ, गूझ नहिं बहुजन पालक ॥

प्रभु दीनबंधु करुनामई, जगउधरन तारन तरन ।
दुखरास निकास स्वदासकौं, हमैं एक तुम ही सरन ॥ ८॥

देखँनीक लखि रूप, वंदि करि वंदनीक हुव ।
पूजनीक पद पूज, ध्यान करि ध्यावनीक ध्रुव ॥

हरप वढ़ाय वजाय, गाय जस अंतरजामी ।
दरव चढ़ाय अघाय, पाय संपति निधि स्वामी ॥

तुम गुण अनेक मुख एकसौं, कौंन भाँति वरनन करौं ।
मन वचन काय वहु प्रीतिसौं, एक नामहीसौं तरौं ॥ ९॥

चैत्यालय जो करै, धन्य सो श्रावक कहिए ।
तामैं प्रतिमा धरै, धन्य सो भी सरदहिए ॥

जो दोनौं विसतरै, संघनायक ही जानौ ।
वहुत जीवकौं धर्म,-मूल कारन सरधानौ ॥

इस दुखमकाल विकराल मैं, तेरौ धर्म जहां चलै ।
हे नाथ काल चौथौ तहां, ईतिँ भीति सव ही टलै ॥१०॥

---

१ गद ऐसा भी पाठ है। २ संदेह। ३ देखनेलायक। ४ अतिवृष्टि अनावृष्टि आदि सात। ५ इहलोक परलोक भय आदि सात।

दर्सनदसक कवित्त, चित्तसौं पढ़ै त्रिकाल ।
प्रतिमा सनमुख होय, खोय चिंता गृहजाल ॥
सुखमें निसिदिन जाय, अंत सुरराय कहावै ।
सुर कहाय सिवपाय, जनम मृति जरा मिटावै ॥
धनि जैनधर्म दीपक प्रगट, पापतिमिर छयकार है ।
लखि साहिबराय सु आँखिसौं, सरधा तारनहार है ॥११॥

इति दर्शनदशक ।

ज्ञानदशक।

कुंडलिया।

देखैं मूरत स्वामिकी, वीतराग ए आप।
रागभाव इनकौ गयौ, रही चेतना व्याप॥
रही चेतना व्याप, आपकी सोई जानैं।
गयौ भाव पर जान, ग्यान निहचै उर आनैं॥
ते सोई निजरूप, भूप सिवसुंदर पेखैं।
ग्याता आठौं जामें, स्वामिकी मूरति देखैं॥ १॥
जिननैं जिन नैन्ननसौं, देखौ दर्वविलास।
दरवित अविनासी सदा, उपजै उतपति नास॥
उपजै उतपति नास, तासैंतैं सत्ता साधी।
निजगुन गुनी अभेद, वेद सुखरीत अराधी॥
साधक साध उपाध, व्याध तजि दीनी तिननैं।
आप आपरसमगन, लगन लौं कीनी जिननैं॥ २॥
मानी क्रोधी कौन है, विनै छिमाधर कोय।
मान विनै चितधारतैं, जीवभाव नहिं होय॥
जीवभाव नहिं होय, जोय विकलप उपजावै।
नामकथन भ्रमछाप, आप निरनाम कहावै॥
नय परमान निछेप, लेपकी कौन कहानी।
आप आप निरवाच, राच हमनैं यह मानी॥ ३॥
मैं मैं काहे करत है, तन धन भवन निहार।
तू अविनासी आतमा, विनासीक संसार॥

१ प्रहर। २ उत्पादव्ययध्रौव्यसे। ३ भ्रमयुक्त है, मिथ्या है। ४ निर्वाच्य-अवक्तव्य।

विनासीक संसार, सार तेरो तोमाहीं ।
आप आप सिरमौर, और उपमा जग नाहीं ॥
बिन जानें चिरकाल, जाल जग फिरो बहुत तें ।
सुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, आतमा सो मैं सो मैं ॥ ४ ॥

करता किरिया कर्मकौ, करै जीव व्योहार ।
निहचै रतनत्रयमई, है अभेद निरधार ॥
है अभेद निरधार, धारना ध्यान न जाकै ।
साहब सेवक एक, टेक यह बरतै ताकै ॥
आप आपमैं आप, आपकौ पूरन धरता ।
सुसंवेद निजधरम, करम किरियाकौ करता ॥ ५ ॥

ग्यानी जानै ग्यानमैं, नमैं वचन मन काय ।
कायम परमारथविषै, विषै-रीति विसराय ॥
विषै रीति विसराय, राय चेतना विचारै ।
चारै क्रोध विसार, सार समता विसतारै ॥
तारै औरनि आप, आपकी कौन कहानी ।
हानी ममता-बुद्धि, बुद्धिअनुभौतैं ग्यानी ॥ ६ ॥

सोहं सोहं होत नित, साँस उसासमँझार ।
ताकौ अरथ विचारियै, तीन लोकमैं सार ॥
तीन लोकमैं सार, धार सिवखेतनिवासी ।
अष्टकर्मसौं रहित, सहित गुण अष्टविलासी ॥
जैसौ तैसौ आप, थाप निहचै तजि सोहं ।
अजपा-जाप सँभार, सार सुख सोहं सोहं ॥ ७ ॥

---

१ आत्मानुभव ।

दरव करम[1] नोकरमतें[2], भावकरमतैं[3] भिन्न ।
विकलप नहीं सुबुद्धकै, सुद्ध चेतनाचिन्न ॥
सुद्ध चेतनाचिन्न, भिन्न नहिं उदै भोगमैं ।
सुखदुख देहमिलाप, आप सुद्धोपयोगमैं ॥
हीरा पानीमाहिं, नाहिं पानी गुण है कच ।
आग लगै घर जलै, जलै नहिं एक नभदरव ॥ ८ ॥

जो जानै सो जीव है, जो मानै सो जीव ।
जो देखै सो जीव है, जीवै जीव सदीव ॥
जीवै जीव सदीव, पीव अनुभौरस प्रानी ।
आनँदकंद सुचंद, चंद पूरन सुखदानी ॥
जो जो दीसै दर्व, सर्व छिनभंगुर सो सो ।
सुख कहि सकै न कोइ, होइ जाकों जानै जो ॥ ९ ॥

सब घटमैं परमातमा, सूनी ठौर न कोइ ।
बलिहारी वा घट्टकी, जा घट परगट होइ ॥
जा घट परगट होइ, धोइ मिथ्यात महामल ।
पंच महाव्रत धार, सार तप तपै ग्यानबल ॥
केवल जोत उदोत, होत सरवग्य दसा तब ।
देही देवलैं[4] देव, सेव ठानैं सुर नर सब ॥ १० ॥

---

१ पुद्गल पिण्डको द्रव्यकर्म कहते हैं। २ कर्मके उदयको जो सहकारी द्रव्य वह नोकर्म द्रव्य है। ३ पुद्गलपिण्डमें आत्मगुण घातनेकी जो शक्ति सो भाव कर्म है। ४ मन्दिर ।

व्यानत चक्री जुगलिये, भवनपती पाताल ।
सुरगइंद्र अहमिंद्र सब, अधिक अधिक सुख भाल ॥
अधिक अधिक सुख भाल, काल तिहुं नंत गुनाकर ।
एकसमैं सुख सिद्ध, रिद्ध परमातमपद धर ॥
सो निहचै तू आप, पापबिन क्यों न पिछानत ।
दरस ग्यान थिर थाप, आपमैं आप सु द्यानत ॥ ११ ॥

इति ज्ञानदसक ।

१ भवनवासी । २ व्यंतर ।

द्रव्यादि चौबोल-पचीसी

सोरठा ।

दरब खेत अरु काल, भाव दरब षट तत्त्व नव ।
ग्यायक दीनदयाल, सो अरहंत नमौं सदा ॥ १

द्रव्यकी गिनती । सवैया इकतीसा ।

जघन एक धर्मद्रव्य, कालानू असंख्यात,
तातैं अनंते अभव्य, सव्व दव्व गहे हैं ।
ताहीतैं अनंते सिद्ध, वंदौं मन वच काय,
सिद्धतैं अनंते जीव, निगोदमैं लहे हैं ॥
यातैं अनंते निगोद, पांचौंइंद्रीआस्रवतैं,
अनंते सो परमानू, उतकिष्टे कहे हैं ।
यही द्रव्य भेद है, जघन्य मध्य उतकिष्ट,
सरधा करेतैं, सरधानी सरदहे हैं ॥ २ ॥

क्षेत्रकी गिनती ।

जघन एक आकासकौ प्रदेस अनूसम,
सर्व दर्वदेसनिकौं थानदान देत है ।
आठ परदेस मेरुतलैं जीव छुवै नाहिं,
जघनैं निगोद देह असंख्यात खेत है ॥
अंगुल जौ हाथ धनुष कोस जोजनभेद,
सैनी औ प्रतर लोक दर्वकौ निकेत है ।

---

१ चतुर्गतिनिगोदमें । २ नित्यनिगोदमें । ३ लब्ध्यपर्याप्तकनिगोदियाकी जघन्यावगाहना । ४ लोकश्रेणी ।

लोकतें अनंत है अलोक्योंत उतकिष्ट,
व्योमसों अमल मेरो आतमा सचेत है ॥ ३ ॥

कालकी गिनती।

जघन काल एक ही समैको है वर्तमान,
तीन समै अनोहार[1] आवली उसास है।
घरी दिन मास वर्ष पूरवांग आदि भेद,
इकतीस ताके अंक डेड़सौ विलास है॥
पल्य[2] सागरै छभेद नाना भांति और एक
ताहीतें अनंतता अतीत समै रास है।
याहीतें अनंत गुनें समैं है अनागतके[3],
काल उतकिष्ट सत्र ग्यानमें प्रकास है ॥ ४ ॥

भावकी गिनती।

भावको जघन्य कह्यो सूच्छम निगोदियाको,
एक समै एक अंस खुल्यो निरावर्न[4] है।
तीनसै चौंतीस स्वास छह हजार बार बार,
जनम मरन करै अंत बेर मनें है॥
भयो है कलेस घोर खुली है तनक कोर,
दूजे समै बढ़े ग्यान विधिको[5] आचर्न है।

---

१ मरने बाद जीव जबतक आहारवर्गणाको ग्रहण नहीं करता है, उस समयको उसे अनाहारक कहते हैं। २ व्यवहारपल्य उद्धारपल्य अद्धापल्य इन तीनसे व्यवहार सागर, उद्धारसागर अद्धासागर। ३ आनेवाला काल। ४ सूक्ष्मनिगोद लब्ध्यपर्याप्तक जीवके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें सबसे छोटा होता ज्ञानमान और जिसका कोई कर्म ढकनेवाला नहीं है ऐसा ज्ञान होता है, उसको निरावरण कहते हैं। ५. ज्ञानावरणादि कर्मोंका।

मति श्रुति औधि[1] मनपरजै अनेक भेद,
उतकिष्टो केवल सरव संसै हर्न है ॥ ५ ॥

छह द्रव्यके बारह अधिकार।

परिनामी[2] दोय जीव पुग्गल प्रदेसी[3] पांच,
काल विना करतार जीव भोगै फल है।
जीव एक चेतन आकास एक सर्वगत,
एक[4] तीन धर्म औ अधर्म नभदल है ॥
मूरतीक एक पुदगल एक छेत्री व्योम,
नित्य चार जीव पुदगल विना सु लहै।
हेत पंच[5] जीवकौं है क्रिया जीव पुग्गलमैं,
जुदे देस आन पच्छ भासतु विमल है[6] ॥ ६ ॥

छह द्रव्यकी और प्रदेशोंकी संख्या।

धर्म औ अधर्म एक दर्व देस असंख्यात,
व्योम एक है ताके परदेस अनंत हैं।
काल असंख्यातके प्रदेस असंख्यात जुदे,
चेतन अनंत एकके असंख नंत हैं ॥
पुग्गल अनंतानंत दर्व तीन भाँति देस,
संख भी असंख भी अनंत भी महंत हैं।
एही छहों दर्व लोक आगैं और है अलोक
देत हौं त्रिकाल धोक जामैं झलकंत हैं ॥ ७ ॥

---

१ अवधि ज्ञान। २ एक हालतको छोड़कर दूसरी हालतमें जानेवाले। ३ बहुत प्रदेशवाले। ४ एक अर्थात् अखंड द्रव्य। ५ मिथ्या दर्शन अविरति प्रमाद कषाय और योग ये बंध कारण हैं। ६ यह कवित्त पृष्ट ३४ में भी आ चुका है।

निगोद जीवसंख्या।

खंध हैं निगोद गोल लोकतैं असंख[1] गुणे,
एक खंध[2] अंडर असंख लोक कहे हैं।
एक एक अंडरमैं आवास असंख लोक,
पुलवी आकासमैं असंख लोक लहे हैं॥
एक एक पुलवी असंख लोक हैं सरीर,
एक तन सिद्धसौं अनंत जीव गहे हैं।
आठ थैंन[3]माहिं नाहिं भरे तीन लोकमाहिं
आप जान दया आन ग्याता सरदहे हैं॥ ८॥

क्षेत्रका भेद, परमाणुसमप्रदेशसे योजनतक।

अनंते परमानूकौ खंध सन्नासन्न[4] नाम,
त्रेटरैन[5] त्रसरैन रथरैन सुने है।
कुरुहरि[6] हैमवत भर्त वाल लीख तिल,
जौ अंगुल वारै भेद आठ आठ गुने हैं॥
अंगुल चौवीस हाथ चार हाथकौ है चाप,
चाप दो हजार कोस चौ जोजन मुने हैं
पंच सत गुना महा जोजनकौ पैलकूप[7],
वंदत हौं ग्यान जिन संसै सब धुने हैं॥ ९॥

---

१ लोकसे असंख्यात गुणे स्कंध होते हैं। २एक एक स्कंधमें उससे असंख्यात लोकगुणे अंडर हैं इसीतरह सर्वत्र जानना। ३ पृथिवी, जल, तेज वायु, केवली, आहारक, देव और नारकियोंके शरीरमें निगोद नहीं रहते हैं। ४ अनन्त परमाणु समूहके स्कंधको सन्नासन्न कहते हैं (यद्यपि अनन्ते परमाणु, पुंजको अवसन्नासन्न और आठ अवसन्नासन्नको एक सन्नासन्न कहते हैं, तथापि यहां उसकी विवक्षा नहीं है) ५ सन्नासन्नसे आठगुना त्रटरैन। ६ कुरुक्षेत्रके जीवोंके वाल रथरैनसे आठ गुणे हैं, इसी प्रकार हरिक्षेत्रमें समझना। ७ व्यवहारपल्यका गड्ढा।

जंबूद्वीपसे आगेके द्वीपसमुद्र कितने २ गुणे हैं ?

जंबू एक लाख दो दो दोनौं ओर लौंनोदधि[1],
सब पांच सूची[2] गुनी पचीस फलाइए ।
दीप एकलौ निकार चौंवीस समुद्रधार,
जंबूसौं चौंवीस गुणे उदधि बताइए ॥
धातखंड चार चार सब सूची तेरहकी,
गुनौ सौ उनहत्तरि पचीस घटाइए ।
जंबूसेती एक सौ चवाल गुनौ धातखंड
आगैं दधि दीप यौं ही जिनवानी गाइए ॥ १० ॥

योजनसे लेकर लोकाकाशतक क्षेत्रभेद ।

विवहारपल रोम एक एक रोमनिपै[3],
असंख्यात कोट वर्ष समै रोम राखिए ।
यह पैल उद्धार कोराकोरी पचीसगुनौ[4],
एते दीप सागरकौ राजू अभिलाखिए ॥

---

१ लवण समुद्र । २ एक समुद्र या द्वीपके सिरेसे लेकर दूसरे सिरे तककी रेखाके प्रमाणको जो कि केन्द्रमें होकर जाती है सूची कहते हैं । इसप्रकार १ लाख जंबूद्वीप, दोनों तरफ दो दो लाख लवणसमुद्र सब मिलकर पांच लाख, इसको इसीको गुणनेसे पचीस हुए । इसमेंसे जंबूद्वीपकी एक लाखसूचीको घटानेपर जंबूद्वीपसे लवणसमुद्र चौवीस गुणा भया । इसीप्रकार लवणसमुद्रके दोनो तरफ चार चार धातकी खंड है, सब मिलकर १३ हुए । इसको इसीसे गुणनेसे १६९ हुए । इसमेंसे पचीस घटानेसे १४४ गुना जंबूद्वीपसे धातकी खंड भया । इसी प्रकार सर्वत्र जानना । ३ व्यवहार पल्यके प्रत्येक रोमके ऊपर असंख्यातकोट वर्षके समय प्रमाण रोम रखनेसे उद्धार पल्य होता है । ४ उद्धार पल्यसे पचीसगुने (अढाई सागर प्रमाण) सब द्वीप समुद्र होते हैं । इतने प्रमाणहीको एक राजू कहते हैं ।

सातराजू लोकसैंनी[1] उनचासराजूनिकौ,
लोककौ[2] प्रतर दोनौं गुणौं लोक भाषिए।
भेद खेतके अनेक सैंनें कहा कोई एक,
करिकैं विवेक आप सांतरस चाखिए ॥ ११ ॥

समयसे लेकर पूर्वतक कालभेद।

असंख्यात समै एक आवली बखानी ग्यानी,
संख आवली मिलेतैं होत एक स्वास है।
सैंतीससै तिहत्तरि स्वास एक मुहूरत,
तीस एक दिन दिन तीस एक मास है॥
बारै मास वर्ष लाख चउरासी पूरवांग[3],
गुणाकर सौं पूरव आगैं भेद रास है।
नर्कस्वर्ग अवस्थित गुनथान मारगना,
ग्यानमैं प्रकास दर्व देखो घट बास है ॥ १२ ॥

कालके वारह भेद और कल्पसंज्ञा।

चारि[4] तीन[5] दोय[6] एक[7] कोराकोरी दधि चौथा,
वीयालीस घाट दो वियालीस हजार[8] हैं।
तीन दोय एक पल्य आव कोर पूरवकी[9],
वीसौं[10] सौ वीसैं[11] वर्ष नर त्रिजंच धार है॥

---

१ सात राजू प्रमाण जगच्छ्रेणी होती है। २ उनचास राजूका लोक प्रतर होता है। ३ चौरासी लाखको चौरासी लाखसे गुणा करनेसे पूर्वांग होता है। ४ प्रथम सुखमा सुखमा काल चार कोड़ाकोड़ी सागरका होता है। ५ दूसरा सुखमा काल तीन कोड़ाकोड़ी सागरका। ६ तीसरा सुखमा दुखमा दो कोड़ा-कोड़ी सागरका। ७ चौथा दुखमा सुखमी ४२,००० वर्षकम एक कोड़ाकोड़ी सागरका। ८ पांचवां दुखमाकाल २१ हजार वर्षका, इसी तरह छठा दुखमा दुखमा भी होता है। ९ चौथे कालमें उत्कृष्ट आयु एक किरोड़ पूर्व वर्षकी होती है। १० पंचममें १२० वर्षकी। ११ छठेमें वीस वर्षकी।

तीन दोय एक दिन वीतैं लेत हैं अहार,
एक बार दोय वार बहु वार कार हैं।
अवसर्पिनी छह काल उत्सर्प्पिनी उलटी,
वीस कोराकोर भन्यौ प्रभुजी उद्धार है ॥ १३ ॥

पल्य सागर और निगोद।

कूप रोम सौ सौ वर्ष विवहार पल्य वीज,
तातैं असंख्यातकौ उधार पल्य नाम हैं।
यातैं असंख्यात गुणौ पल्य अद्धा उतकिष्ट,
दस कोरा कोरीकौ इक सागर स्वाम है॥
वीस कोरा कोरी दधि ताकौ एक कल्प नाम,
ता मध्य चौवीसी दोय तिनकौं प्रनाम हैं।
निकलि निगोद दो हैंजार-दधि इहां रहै,
पावै सिव नाहीं जावै वही सही ठाम है॥ १४ ॥

भाव चेतना तीन प्रकार, पांचो ज्ञानके मूल भाव पांच, उत्तर भाव त्रेपन।

भावं एक चेतनसौं तीन कर्म फल ग्यान,
ग्यान एक पंच भेद भापत मुनीस हैं।

---

१ कल्पकाल। २ एक योजन (चारकोस) लंबे चौड़े कूपमें एक दिनसे सात दिन तकके मेड़के बच्चेके जिनका कि कैंचीसे दूसरा खंड न हो सके ऐसे भरे हुए बालोंमेंसे एक २ बालको सौ २ वर्षमें निकाले। जितने वर्षोंमें खाली होवे, उसे व्यवहार पल्य कहते हैं। ३ दश कोड़ा कोड़ी पल्यका सागर होता है। ४ सागर। ५ दो हजार सागर। ६ आत्मगुण। ७ कर्मचेतना, कर्म-फलचेतना, ज्ञानचेतना (सम्यग्दृष्टिके होनेवाली)।

मति तीनसै छतीस श्रुत ग्यान भेद वीसे,
अंग अंग-बाहज पूरव सौ चालीस हैं ॥
औधि तीनें षट भेद मनंपरजै दो भेद
केवल अभेद पांच भाव सिद्ध ईस हैं।
मूल पंच भावके तरेपन उत्तर भाव,
वंदत हों एक जहा सर्व भाव दीस हैं ॥ १५ ॥

त्रेपनभाव और चौदह गुणस्थान।

मिथ्या गुनथान भाव, चौंतीस बत्तीस दूजे,
तीजेमैं तेतीस, चौथे छत्तीसं बखानिए।

---

१ बहु, बहुविध, क्षिप्र, अनिःसृत अनुक्त, ध्रुव इनके उलटे एक, एकविध, अक्षिप्र, निःसृत, उक्त, अध्रुव, इनको अवग्रह ईहा अवाय धारणासे गुणा करनेसे ४८ हुए। इनको पांच इन्द्रिय छट्टे मनसे गुणा करनेसे २८८ हुए। व्यंजनावग्रह चक्षुः और मनसे नहीं होता, इस लिये चार इन्द्रियोंसे गुणाकरनेसे ४८ हुए। सब मतिज्ञानके भेद ३३६ हुए। २ पर्य्याय पर्य्यायसमास (सूक्ष्मनिगोद लब्ध्यपर्य्याप्तकका) अक्षर, अक्षरसमास, पद, पदसमास, संघात, संघातसमास, प्रतिपत्तिः, प्रतिपत्ति-समास, अनुयोग, अनुयोगसमास, प्राभृतप्राभृत; प्राभृतप्राभृतसमास, प्राभृत, प्राभृतसमास, वस्तु, वस्तुसमास, पूर्व, पूर्वसमास, ये २० भेद श्रुतज्ञानके हैं। ३ अंगबाह्य। ४ देशावधि, परमावधि, सर्वावधि। ५ अनुगामिनी, अननुगामिनी, वर्धमान, हीयमान, अवस्थित, अनवस्थित। ६ ऋजुमति, विपुलमति। ७ कुमति, कुश्रुत, विभंगावधि, चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य्य, पांच लब्धि, चार गति, चार कषाय, तीन लिङ्ग, मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयत, असिद्ध, छै लेश्या, जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व ये चौंतीस भाव मिथ्यात्व गुणस्थानमें हैं। ८ दूसरे गुण-स्थानमें, मिथ्यादर्शन अभव्यत्व छोड़कर ३२ भाव होते हैं। ९ पिछले ३२ में अवधिदर्शन और मिलनेसे ३३ होते हैं। १० तीन अज्ञानकी जगह तीन सम्यग्ज्ञान और औपशमिक क्षायोपशमिक क्षायिक सम्यक्त्व मिलनेसे ३६ होते हैं।

पांचैं छटैं सातैं, इकतीस आठैं अठाईस,
नौमैं अठाईस दसैं बाईस प्रमानिए ॥

ग्यारहैं इकबीस वारैं बीसैं तेरैं चौदहैं,
चौदहमैं तेरै सिद्धमाहिं पांचै जानिए।

सम्यक दरस ग्यान जीवत अनंत वल,
दर्व दिष्ट सासतो सुभाव आप मानिए ॥ १६ ॥

सामान्य विशेष २१ स्वभाव।

असंत नासत नित्य अनित्य अनेक एक,
भव्य औ अभव्य भेद औ अभेद पर्म हैं।

चेतन अचेतन अमूरत मूरत सुद्ध
असुद्ध विभाव एक परदेस धर्म है ॥

वहु परदेस उपचार दस ए विसेस
पहली तुकके ग्यारै ते समान धर्म हैं।

---

१ नरक, देव गति और तीन अशुभ लेश्या घटानेसे तथा असंयतकी जगह संयत होनेसे ३१ होते हैं। इसी प्रकार छठेमें सातवेंमें संयतासंयतकी जगह क्षायोपशमिक चारित्र तथा तिर्य्यंचगतिकी जगह मनःपर्य्यय ज्ञान जोड़नेसे ३१ होते हैं। २ शुभ आदिकी दो लेश्या क्षायोपशमिक सम्यक्त्व घटानेसे २८ होते हैं। ३ आदिकी तीन कषाय तीन वेद घटानेसे २२ भाव होते हैं ४ सूक्ष्म लोभकेबिना २१ भाव होते हैं। ५ औपशमिक सम्यक्त्व घटानेसे २० होते हैं। ६ तीन दर्शन तीन ज्ञान घटानेसे १४ होते हैं। ७ एकलेश्या घटानेसे १३ भाव होते हैं। ८ अनंतज्ञान वीर्य दर्शन सुख जीवत्व ये पांच भाव सिद्धोंमें हैं। ९ अस्तित्व नास्तित्व नित्यत्व अनित्यत्व अनेकत्व एकत्व भव्यत्व अभव्यत्व भेद अभेद और परम (पारणामिक भावकी प्रधानतासे) ये द्रव्योंके ग्यारह सामान्य स्वभाव हैं और चेतन अचेतन मूर्त अमूर्त शुद्ध अशुद्ध विभाव एकप्रदेश अनेकप्रदेश और उपचरित ये द्रव्योंके दश विशेष स्वभाव हैं।

जीवके इकीस पुदगल बीस धर्माधर्म
नभ सोलै काल [2]पंद्रै जानैं होत सर्म है ॥ १७ ॥

द्रव्य क्षेत्र काल अल्प वहुत्व तथा इनके सदृशोंके नाम समवाय।

अणूसौं अनंत काल समैसौं अनंत खेत,
नभसौं अनंतानंत भाव ग्यान मानिए।
दर्वसौं समान धर्म दर्व औ अधर्म दर्व
खेतसौं समान पंच पैंताला वखानिए॥
कालसौं समान आव सागर तेतीस तहां
सर्वारथसिद्ध नर्क माघवी भवानिए।
भावसौं समान ग्यानरूप है सरव जीव
एक आदि भेद वहु आगमतैं जानिए॥ १८ ॥

षट् द्रव्य नव तत्त्वके द्रव्य क्षेत्र कालभावका जुदा २ प्रमाण।

दर्वकौ प्रमान, जीव सिद्धसौं अनंत गुणौ,
खेतकौ प्रमान जीव लोकतैं अनंत है।
कालकौ प्रमान, जीव अनूसौं अनंत गुणौ,
भाव नभसौं अनंतानंत ज्ञानवंत है॥
पांच दर्व नव तत्त्व, इनके प्रमान चार,
पंचसंग्रै[3] ग्रंथमाहिं, भाषो विरतंत है।
इहां कहैं भेद वढ़ै थिरता न कौन पढ़ै,
जाही ताही भांति आप जानैं सोई संत हैं॥ १९ ॥

---

१ चेतनस्वभाव मूर्तस्वभाव अशुद्धस्वभाव विभावस्वभाव और उपचरितस्वभाव ये पांच घटानेसे धर्मादि तीनमें सोलह रहते हैं। २ अनेक प्रदेश घटानेसे कालमें पन्द्रह स्वभाव हैं। ३ गोमटसारका दूसरा नाम पंचसंग्रह भी है।

छहों द्रव्य लोकमें हैं।

छहों दर्व भरे लोक, कोई कहैं कछू नाहिं,
अहं शब्दसेती जीव जानियै प्रतच्छ है।
पुग्गल प्रगट देह धन आदि दीसत हैं,
धर्मविना सिद्ध चले जाहिंगे कुपच्छ है॥
अधरम दर्व विना थिरता सहाय कौन,
मास वर्ष वोदा नया, कालहीसौं लैच्छ है।
व्योम विना रहैं कहां, सरधा मुकत मूल,
मोखपुरपंथी ताहि यह राह दच्छ है॥ २०॥

छहों द्रव्य क्षेत्र काल भाव उत्पाद व्यय ध्रौव्य स्वभाव विभाव।

दर्वै सत्तारूप आपखेतँ परदेस माप,
काल समै मरजादा, भावै मूल सत्त है।
चार-मई आप तिहुं काल सर्व दर्व लसै,
गुन द्रव्य परजाय होत नास व्यक्त है॥
चारौंके सुभाव ग्यात ध्रौव्य व्यय उतपात,
सुभाव विभोव जीव जड़ सेतँ रक्त है।
पांचनिसौं कौन काज अपनौ विभाव त्याज,
कीजियै इलाज सुद्ध भाव बड़ी भक्ति है॥ २१॥

---

१ आत्मामें अहं (मैं) ऐसा स्वसंवेदन प्रत्यक्ष होता है। २ पुराना। ३ देखा जाता है। ४ धर्म धर्मीमें अभेद विवक्षासे सत्स्वरूप पदार्थके देश ही स्वद्रव्य है। ५ आकाशमें स्थित अपने देशांश ही स्वक्षेत्र है। ६ निजगुणांश (ऊर्ध्वांश पर्य्याय) स्वकाल है। ७ निज ज्ञानादिगुण स्वभाव है। ८ स्वभावपरिणमन शुद्ध जीवस्वरूप है। ९ विभावपरिणमन पुद्गलका भाग है। यहां केवल पुद्गल पर्य्यायकी ही विवक्षा है। १० सफेद।

षट्द्रव्यके दश सामान्य गुण और सोलह विशेष गुण ।

अस्ति[1] वस्त दरव अगुरू-लघु परमेय,
परदेस चेतन अचेतन अमूरती ।
मूरतीक समान दस हैं गुन दर्वनके,
जुदे जुदे आठ आठ भाषे बुध-पूरती ॥
ग्यान दर्स सुख बल वर्न रस गंध फास,
गति[2] थिति[3] अवगाह[4] वरतना[5] मूरती ।
चेतन अचेतन अमूरत विसेस सोलै,
दोके[6] षट चौके[7] तीनैं जानैं आप सूरती ॥ २२ ॥

षट्द्रव्य पंचास्तिकाय ।

जीव पुग्गल धरम अधरम व्योम पंच,
अस्तिकाय काल मिलैं षट द्रव्य कहिए ।
एक एक दरवमैं अनंत अनंत गुन,
अनंत अनंत परजाय सक्ति लहिए ॥
ब्रह्मा करै विष्णु धरै ईस हरै कभी नाहिं,
तिहुं काल अविनासी स्वयं-सिद्ध गहिए ।

---

१ अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, अगुरुलघुत्व, प्रमेयत्व, प्रदेशत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, अमूर्तत्व, और मूर्तत्व दश गुण द्रव्योंके सामान्य हैं। २ चलनेमें सहकारीपना । ३ रुकनेमें सहायपना । ४ अन्यवस्तुको अपनेमें जगहका देना । ५ वस्तुके रूपान्तर करनेमें सहाय होना। ६ जीवके ज्ञान दर्शन सुख वीर्य्य चेतनत्व और अमूर्तत्व ये छै विशेष गुण हैं। अजीवके स्पर्श रस गंध वर्ण मूर्तत्व और अचेतनत्व ये छै विशेष गुण हैं। ७ धर्ममें गतिहेतुत्व अमूर्तत्व अचेतनत्व हैं। अधर्ममें स्थितिहेतुत्व अमूर्तत्व अचेतनत्व है। आकाशमें अवगाहहेतुत्व अमूर्तत्व अचेतनत्व है। कालमें वर्तनाहेतुत्व अमूर्तत्व अचेतनत्व है।

सब भेद जानौ जड़ मिलेकौं जुदा ही मानौ,
आप आप-विषै देखै तातैं दुःख दहिए ॥ २३ ॥

अन्त-मंगल। कवित्त (३१ मात्रा)

दरव प्रछन्न काल कालानू, खेत प्रछन्न अलोक प्रदेस।
भाव ग्यान केवल मिथ्याती, काल अतीत अनागत भेस ॥
दरव खेत अरु काल भाव सब, देखौ जानौ तुमहि जिनेस।
हाथ जोरि वंदना करत हौं, हर मेरौ संसार-कलेस ॥२४॥
कवित बनाए सबनि सुनाए, मन आए गाए गुन ग्यान।
चरचा कूप अनूपम बानी, हंस भूप चिद्रूप-निसान ॥
गोमटसार धार द्यानतनैं, कारन जीव-तत्त्वसरधान।
अच्छर अरथ अमिल जो देखौ, लेखौ सुद्ध छिमा उर आन ॥

इति द्रव्य चौबोल पचीसी।

व्यसनत्याग षोड़श।

सवैया तेईसा (मत्तगयन्द)।

पापकौ ताप कलेस असेस,
निसेस[1] यथा छिनमाहिं हरैं हैं।
देव नमैं गन-मौलि दिपैं,
मनि नील मनौं अलि[2] सेव करैं हैं॥
नाम ही सांत करै जिनकौ,
तिनकौ जस इंद्र कहा उचरैं हैं।
सांतिप्रभू जिन-रायके पांय[3]-
पयोज भजैं भवतैं निकरैं हैं॥ १॥

ग्यारह प्रतिमा। सवैया इकतीसा।

दंसनविसुद्ध वरै वारै व्रतसौं न टरै,
सामायिक करै धरै पोसह[4] विधानकै।
सरव सचित्त टारि छांरिकै निसा अहार,
सदा ब्रह्मचार धार निरारंभ ठानकै॥
परिगह त्याग देत पापसीखसौं न हेत,
याके काज किया लेत ना भोजन दानकै।
श्रावक ग्यारह पालैं पहलैं विसन टालैं,
एक हू न प्रतिमा है एक विसनवानकै॥ २॥

कवित्त (३१ मात्रा)।

ग्यारै प्रतिमा भिन्न भिन्न सव, कहीं सातमैं अंगमँझार
ताके सरव भेद लखि कीनैं, आचारजों श्रावकाचार॥

---

१ चन्द्रमाके समान। २ भौंरा। ३ पाद-पयोज=चरणकमल। ४ प्रोषध-प्रतिमा।

अंग देखिकै ग्रंथ पेखिकै, जानौ सकल गृही-व्योहार ।
संजम नीव मनुप-भौ-सोभा, विसन त्याग-विधि कहूँ विचार ३

सप्तव्यसनोंके नाम । अडिल्ल छन्द ।

जूवा आमिप, मदिरा दारी[1] छोरिए ।
आखेटक[2] चोरी, पर-तियहित तोरिए ॥
महा-सूर ए सात, विपम-दुख दैनकों ।
सात नरकनैं भेजे, जग-जिय लैनकौं ॥ ४ ॥

जूआ व्यसन । कवित्त (३१ मात्रा) ।

अजँस[3]-धाम सबविसनस्वाम, इक नरक गौनकौं[4] सौन[5] निहार
सकल-आपदा-नदी-सैल[6] यह, पाप विरछकौ वीज विचार॥
धन सुभ धर्म सर्म सब खंडै, मंडै झूठ वचन-व्योहार ।
चूत भूत वस ऊत परै मति, परगट देख देख संसार ॥५॥

सवैया इकतीसा ।

आरति अपार करै, मार सांचसौं विगार,
जस सुख दर्व पुन्य प्रभुता विनास है ।
जीतेकौं त्रिपति नाहिं हारे पै न गांठिमाहिं,
लेत है उधार देत महा दुःखरास है ॥
और कौन वात तातकौ न इतवाँर[7] जात,
नारिकौं नहीं सुहात मात हू न पास है ।
चौपड़ हू त्याग धर्मध्यान लाग वड़भाग,
आयु तौ तनक सोऊ होत सदा नास है ॥ ६ ॥

---

१ वेश्यागमन। २ शिकार । ३ अकीर्तिका घर । ४ जानेके लिये । ५ जीना, सीढ़ियां । ६ पर्वत । ७ विश्वास ।

आमिष-व्यसन ।

पानी पौक गँदी देह लोकमाहिं कहैं ऐह,
पाकसेती पाक गंधसेती गंध होत है ।
जलसेती मेवा नाज उत्तम सरब साज,
भूँत-भयौ मांस कैसैं उत्तम उदोत है ॥
हिंसा विना वनै नाहिं करकैं नरक जाहिं,
सहैज भयौ अनंत जीवकौ निगोत है ।
नाम लैनौ छूवनौ देखनौ नाहिं संतनिकौं,
अंगीकार कौन वात वँधै नीच गोत है ॥ ७ ॥
फिरत अनादि-काल एक एक जीवनिसौं,
तात मात सुत नारि नाते वहु भए हैं ।
एक जीव घात कियैं सव ही कुटुंब हत्यौ,
हिंसाके भावनिसौं निज हू मर गए हैं ॥
जोई जीव मरै सोई क्रोधकी लगनसेती,
मारै भव भव ताहि वैर-भाव छए हैं ।
जीतवता चाही जिनौं जीवौंकौं विराधे नाहिं,
भांति भांति पोष सुख आपनिकौं लए हैं ॥ ८

मदिरा-व्यसन ।

कवित्त (३१ मात्रा)

मदिरा पीय मातसौं कु-नँजर, महानिलज ताकौं कहि कोय ।
देखौ और राहमैं चाटैं, स्वान पूतमुख मीठा होय ॥

---

१ पवित्र । २ अपवित्र । ३ प्राणीसे पैदा हुआ । ४ आप ही आप हुआ अर्थात् स्वयं मरे हुए प्राणीका मांस । ५ बुरी नजर–कामवासना ।

और लैन आयौ कहि हमकौं, दीजै इसतैं अधिका होय ।
ऐसौ मद को गहै विचच्छन, भांग खाय नहिं उत्तम सोय ॥९॥

वेश्या—व्यसन ।

मत्तगयन्द सवैया ।

माँसकौं खात सुहात सदा मद[1], बात मृषा[2] तन नीचनि भींटा[3] ।
कीरत दाहक जी[4] रत चाहक, दामकी गाहक ज्यौं गुर[5]-चींटा ॥
क्रूर सुभाव उपाव विना नर, अंबर छूवत लेत हैं[6] छींटा ।
नर्कसखी लख आन मिलैं, गनिका कहँ जेम कुहारीकौं[7] चींटा ॥

शिकार—व्यसन ।

सवैया इकतीसा ।

दर्व नाहिं हरै पर नरसौं न बात करै,
वेश्या मदकौ न काज जूवा नाहिं जानती ।
पंज ऐब सरै विना सदा दाँत धरै तिना,
पुरसौं दई निकास वनवास ठानती ॥
कछू नहीं पास भय-त्रास रच्छासौं निरास
सबकौं सहाय दिलीपति तोहि मानती ।
साहनिका साह पातसाह महंमदसाह
साहबसौं मृगी दीन वीनती वखानती ॥ ११ ॥

चोरी—व्यसन ।

भावौ कोई दर्व हरौ भावौ कोई प्रान हरौ,
दोऊ हैं समान केई मूढ़ यौं कहत हैं ।

---

१ शराब । २ झूठ । ३ छुआ हुआ । ४ मनमें संभोग चाहनेवाली । ५ जैसे गुड़पर चींटे आ लगते हैं । ६ यदि किसीसे वेश्या का वस्त्र छू जावे, तो उसे छींटा लेने पड़ते हैं—स्नान करना पड़ते हैं । ७ कुल्हाड़ीमें जो लकड़ी पोई जाती है, उसे चींटा या वेंट कहते हैं । ८ चाहै ।

दर्व लैन काज प्रान दैन जात रनमाहिं,
याकौ नाव जीतबसौं जीतव रहत हैं ॥
प्रान हरैं एक नास दर्वसौं कुटंब त्रास,
प्रानसेती दर्व-दुःख अति ही महत हैं ।
यातैं चोर भाव निरवार ह्वै धा[1]नतदार
सत्तकी पदवी सार सज्जन लहत हैं ॥ १२ ॥

परस्त्रीव्यसन ।

साधनिनैं त्रिया जात लखी सुता[2] सुसी[3] मात
हीनसक्त[4] सबै छांड़ि व्याही एक वरी है ।
रावनकौं देखौ सब परनारि सेई कब,
अबलौं अकीरति दसौं दिसामैं भरी है ॥
चोरी दोष जिहमाहिं संतान रहत नाहिं,
हाकिमकौ दंड पंच फिटकार परी है ।
एते दुःख इहां आगैं पूतली नरक जहां,
कच्छ-लंपटी ह्वै कौन जाकी बुद्धि खरी है ॥ १३ ॥

सातों व्यसन जूआसे उत्पन्न होते हैं ?

* कंथा[5] यह स्वामी? नहीं सफरी[6] गहन जाल
खेलत सिकार? कभी मांस चाह भएतैं ।

---

१ दयानतदार अर्थात् ईमानदार। २ पुत्री। ३ बहिन। ४ हीनशक्ति होनेके कारण—ब्रह्मचर्यकी सामर्थ्य न होनेके कारण। ५ कथरी। ६ मछली पकड़नेका जाल।

* एक राजाको जूआ खेलनेकी आदत पड़ गई थी। उसे छुड़ानेके लिए उसका मंत्री साधूका वेष धरकर आया। साधूका जब राजा भक्त हो गया, तब एक दिन राजाने उससे जो प्रश्न किये और उनके जो उत्तर पाये, वे सब इस कवित्तमें वर्णित हैं।

मांस हू भखत? कभी दारूकी खुमारीमांहिं
सुरापान करो? कभी वेश्या-घर गएतैं ॥
वेश्या हू गमन? परनारी जोपै मिलै नाहिं
परनारी भोगो? कभी दाम चोर लएतैं ।
चोरी हू करत? कभी जूवे माहिं हार होय
सबै गुन भरे नष्ट भाव परनएतैं ॥ १४ ॥

एक एक व्यसनके धारक पुरुष ।

छप्पय ।

पंडपूत दुख द्यूत, भूप बक मांस दुखी भुव ।
जादौं मदजल छार, चारदत वेस्यावस हुव ॥
ब्रह्मदत्त कु सिकार धार, सिवभूत चोर विध ।
रावन तिय अविवेक, एक इक विसन गई रिध ॥
ए सात विसन दुखमूल जग, सात नरक करतार हैं ।
करि सात तत्त्व सरधान दस, लच्छन पार उतार हैं॥१५॥
सात विसन इक थूल, भूल परनामनिकेरी ।
जब जब चलै कुराह, वाहि तब फेरि सबेरी ॥
जथासकति व्रत धरौ, करौ नरभौ सफला इम ।
धन जोवनकौ चाव, आव चंचल चपला जिम ॥
यह विसनत्याग श्रावक कथा, निज परहित द्यानत कही ।
सुनि विसन राग दुखखानि है, मानहिंगे सज्जन सही ॥१६

इति व्यसनत्याग षोडश ।

सरधा चालीसी ।

दोहा ।

वंदौं हो परमातमा, जगग्यायक जगभिन्न ।
दरपन सब परगट करै, होय न सबसौं चिन्न ॥ १ ॥

नास्तिक निन्दा ।

पट मत मानैं ईसकौं, जाप ध्यान तप दान ।
महा निंदमत नासतिक, सदा पापकी खान ॥ २ ॥

नास्तिकके चार प्रश्न ।

कहै जीव नाहीं कहीं, पुन्य पाप नहिं दोय ।
सुरग नरक दोनौं नहीं, करि फल लहै न कोय ॥ ३ ॥

चौपाई ।

नास्तिकप्रश्न—लोहमई इक मंदिर करौ,
छिद्र विना तामैं नर धरौ ।
ताकौं काढ़ो जब मरि जाय,
किहि मग जीव गयौ समझाय ॥ ४ ॥

उत्तर—ता मंदिरमैं राखौ ढोल, ताहि बजावौ करौ किलोल ।
बाहर सुनियै छेक न होय, तैसैं जीव दरव है लोय ॥५

प्रश्न—फिरि बोल्यौ-इक प्रानी लेय, ताकौं तौलौ ठीक करेय ।
मूए पीछैं तोलौ सोय, घटै नहीं जी कैसैं होय ॥६॥

उ०—मसक एकमैं भरिए बाय¹, मुखकौं बाँधि तौल मन लाय ।
पौनै काढ़ि फिरि तौलि सुजान, घटै नहीं त्यौं चेतनमान

१-२ हवा ।

प्रश्न—चोर[1] एकले दो खँड करौ, सौ हजार लाखौं विसतरौ।
जुदे जुदे देखौ निरधार, दीसै नहीं कहीं जिय सार ८

उत्तर—अरनैकी लकड़ी लै वीर, टूंक किरोर करौ किन धीर
विना घसैं न अगनि परगास, त्यों आतम अनुभौअभ्यास

प्रश्न—भूजल अगन पवन नभ मेल, पांचौं भए चेतना खेल।
ज्यौं गुड़ आदिकतैं मद होय, मद ज्यौं चेतन थिर नहिं कोय

दोहा।

उत्तर—पांचौं जड़ ए आप हैं, जड़तैं जड़ ही होय।
गुड़ आदिकतैं मद भयौ, चेतन नाहीं सोय ॥११॥
भू जल पावक पौन नभ, जहां रसोई[2] जान।
क्यौं नहिं चेतन ऊपजै, यह मिथ्या-सरधान॥१२॥

प्रश्न—जल वुदवुदवत जीव हैं, उपजैं और विलाय।
देह साथ जनमैं मरैं, जैसें तरवरछाय॥ १३ ॥

चौपाई।

उत्तर—बालक मुखमैं थनकौं लेय, दावै अंचै दूध पिवेय।
जो अनादिकौ जीव न होय, सीखविना क्यौं जानै सोय १४
मरिकैं भूत होंय जे जीव, पिछली वातैं कहैं सदीव।
सिर चढ़ि वोलैं निज घर आय, तातैं हंस अमर ठहराय १५

प्रश्न—पुन्य पाप भाषैं जगमाहिं, पै काहूनैं देखे नाहिं।
भिड़हीं[3] चाल चलै संसार, समझै कोई समझनिहार१६

---

१ जंगलकी। २ जहां रसोई बनती है, वहां पांचों भूत एकत्र होते हैं। ३ भेड़चाल, जहां एक भेड़ जावे, वहां उसके पीछे सब जाती हैं।

उत्तर—एक भूप सुख करै अनेक, पेट भरि सकै नाहीं एक।
परगट दीखै धोखा कौन, चार वरन छत्तीसौं पौंन[1] ॥१७॥
प्रश्न—सुरग नरक नाहीं निरधार, जिन देखे सो कहौ पुकार।
खंजर वेग? कहैं सब लोग, लरकै डरपावैं हित जोग ॥१८॥
करिकैं धरम सुरग गयौ, कह्यौ न फिरि जिह आय।
भयौ पापतैं नारकी, क्यौं नहिं आयौ भाय ॥ १९ ॥

चौपाई।

उत्तर—पापी पकरयौ औगुनकार, पगवेरी गल संकल धार।
घेरैं रहैं निकास न होय, त्यौं आवै नहिं नारक कोय ॥२०॥
न्हाय सुगंध वसन सुम-माल, नेवज दीप धूप फल थाल।
पूजन चल्यौ दिसाकौं जाय, तैसैं नहिं आवै सुरराय ॥२१॥
तुम निचिंत तप करौ न वीर, हम तप करैं धरैं मन धीर।
जो[2] परलोक न हम तुम सोय, है परलोक तुमैं दुख होय २२
प्रश्न—खेती कीनी सुपनैंमाहिं, पै काहूनैं खाई नाहिं।
कोई काटै कोई खाय, कोई हाथ धरैं मरि जाय ॥ २३ ॥
उत्तर—कोई काहूकौं दे दाम, ताहीपै मांगै अभिराम।
जोई खाय पेट ता भरै, जहर खाय है सोई मरै ॥ २४ ॥

दोहा।

जो काहूकौ धन हरै, मारै काहू कोय।
जनम जनम सो क्रोधतैं, हरै प्रान धन दोय ॥२५॥

---

१ जातियां। २ यदि परलोक नहीं है तो हम तुम बराबर है, और यदि कहीं हुआ तो तुम्हें दुख भोगना पड़ेगा हम आनन्दसे रहैंगे।

चौपाई ।

जो तरु बोवै सो फल होय, नरतैं नर पसुतैं पसु होय।
करै सुपावै बोवै लुनै, परगट बात लोग सब सुनै ॥ २६ ॥

दोहा ।

जीव धरम परलोक फल, चारौं हैं निरधार।
तातैं सरवग सेइयै, वांछितफलदातार ॥ २७ ॥

चौपाई ।

मिथ्यातीकी शंका—सरवग कहा कहां है सोय,
देखो सुनो न हमनैं कोय।
ऐसे मिथ्या वचन सुनेय, जैनी हित लखि उत्तर देय २८
समाधान—इस पिरथी इस कालमँझार,
न कहौ तौ तुम वच सत सार।
और लोक अरु कालमँझार, है सरवग सब जाननहार २९
शंका—तीन लोक तिहुं कालनि माहिं,
हम जानैं हैं सरवग नाहिं।
समाधान—तुम जाने तिहुँ जग तिहुं काल,
तुम ही सरवग दीनदयाल ॥ ३० ॥

दोहा ।

जब यह वचन प्रगट सुन्यौ, जान्यौ जिनमत सार।
छांड़ि नासतिक निपुन नर, कर जोरे सिर धार ॥ ३१ ॥

अथ पंच मतवालोंके वचन ।

चौपाई ।

कोई कहै छहौं मतमाहिं, निज निज क्रिया करैं सिव जाहिं।
जैसैं एक महल षट द्वार, छहौं राह पहुचैं नर नारि ॥ ३२ ॥

दोहा।

उत्तर—कहै लाख नौंका वरू(?), सबको एक दुवार।
बहुत भेद मतकल्पना, एक जैन सिवकार ॥ ३३ ॥

चौपाई।

अंधे पांच खरे इक ठौर, आगैं गज इक आयौ दौर।
एक एक अँग सबनैं गहा, सो सरधान जीवमैं लहा ॥३४॥
सूंड़ि पकरि गज मूसल होय, छाज कानतैं मानैं कोय।
माना थंभ पकरि पग अंग, पेट पकरि चौंतरा अभंग ॥३५
पूँछ पकरि लाठी सरदहा, पाँचौंनैं गजभेद न लहा।
झगरैं लरैं करैं बहु रार, समझाए सब देखनहार ॥ ३६ ॥

उपदेश वर्णन।

सरवग देव सुगुरु निरग्रंथ, दया धरम तीनौं सिवपंथ।
पहली यह सरधा थिर करौ, पीछैं सकति देखि व्रत धरौ ३७

दोहा।

अंतरतत्त्व सु आप लखि, बाहर दया निहार।
दोनौं धरि करि हूजियै, सिव-वनिता-भरतार ॥ ३८ ॥
निकटभव्य जे पुरुष हैं, तिनकौं यह उपदेस।
दीरघ-संसारी सुनैं, धारैं अधिक कलेस ॥ ३९ ॥
द्यानत जिनमत न्याय लखि, किए छंद चालीस।
पढ़ैं सुनैं तिनके हियैं, सरधा विस्वाबीस ॥ ४० ॥

इति सरधाचालीसी।

---

१ सूप। २ देखनेवाले सूझतेने।

अथ सुखबत्तीसी ।

दोहा ।

सिद्ध सरब वंदौं सदा, सुखसरूप चिद्रूप ।
जाकी उपमा देनकौं, वसत न तिहुँजगभूप ॥ १ ॥

सिद्धोंका सुखवर्णन ।

चौपाई ।

जो कोई नर औगुनधार, नख सिख बंध बँध्यौ निरधार ।
एक सिथिल कीनें सुख होय, सब टूटें ता सम नहिं कोय॥२
वाय पित्त तप कफ सिर-चाह, कोढ़ जलोदर दम अरु दाह ।
एक गए कछु साता गहै, सरब गए परमानँद लहै ॥ ३ ॥
एक सास्त्र जो पढ़ै पुमान, कछु संदेह होय हैरान ।
ताकौं समझैं हरप अपार, क्यों न सुखी सब जाननहार ॥४

दोहा ।

नरक गरभ जनमन मरन, अधिक अधिक दुख होय ।
जहाँ एक नहिं पाइयै, सुखिया कहियै सोय ॥ ५ ॥

नरकदुःख ।

तन दुख मन दुख खेत दुख, नारक असुर करंत ।
पांचौं दुख ये नरकमैं, नारक जीव सहंत ॥ ६ ॥

तिर्य्यंचदुःख ।

भूमि खोदि जल गरम करि, अगिनि दाह दुख जोय ।
पौन वीजना तरु कटैं, त्रस निरोध दुख होय ॥ ७ ॥

चौपाई ।

छुधा तृपा करि पीड़ित रहै, गलमैं फाँस सीस तप सहै ।
मार खाय अरु मोल विकाय, विन विवेक पसुगति दुख दाय ८

खग¹ मृग मीन दीन अति जीव, मारैं हिंसक भाव सदीव।
देह मरैं महा दुख पाय, भौ भौ वैर चल्यौ सँग जाय ॥९॥

मनुष्यगतिदुःख।

हीन होय अरु गर्भ विलाय, जनमत मरैं ज्वान मर जाय।
इष्ट वियोग अनिष्ट सँयोग, महादुखी नर व्यापै सोग॥१०॥
मूतनि हगनि महा दुख वीर, द्रव्य उपावन गहर गँभीर।
चाहदाहदुख कह्यौ न जाय, धन्न सिद्ध अविनासी काय ११

दोहा।

रूखा भोजन करज सिर, और कलहिनी नार।
चौथे मैले कापड़े, नरक निसानी चार ॥ १२ ॥
उद्दिम विन अरु मांगना, वेटी चलनाचार।
सब दुख जिनके मिट गए, तेई सुखी निहार ॥ १३ ॥

चौपाई।

रस-लोहू-अरु मांस वखान, मेद हाड़ अरु मज्जा जान।
वीरज सात धात नहिं जहां, सुद्ध सरूप विराजैं तहां॥१४॥

दोहा।

कान आंख मुख नाक मल, मूत पुरीषै² पसेवै³।
सातौं मल जाकैं नहीं, सोई सुखिया देव ॥ १५ ॥

देवगतिदुःख।

चौपाई।

हीन होय पर-संपति देख, मरन वार दुख करै विसेख।
देव मरै एकेंद्री होय, जनम मरन वसि डोलै सोय ॥१६॥

---

१ पक्षी। २ पाखाना। ३ पसीना।

चारयौं गतिमैं दुःख अपार, पांचपरावर्तन[1] संसार।
करम काटि जे सिव-पुर गए, तिनके सुख कौनैं वरनए॥१७

सिद्धस्वरूपवर्णन।

दोहा।

तीन लोकके सीसपै, ईस रहैं निरधार।
छहौं दरस मानैं सदा, एक अंग लखि सार॥१८॥

चौपाई।

सुर-नर-असुर-नाथ थुति करैं, साध तपैं सो पद मन धरैं।
ध्यावैं ब्रह्मा विष्णु महेस, विन जानैं बहु करैं कलेस॥१९॥
जो जो दीसैं दुख जगमाहिं, ताकौ एक अंस हू नाहिं।
जा दुखकौं सुख जानैं जीव, सरव करम तन भिन्न सदीव॥२०
इह भव भै पर भव भै दोय, रोग मरन भै सबकौं होय।
रच्छक नहीं चोर भै महा, अकस्मात जीतैं सुख लहा॥२१
देसभूप परभूप विगार, बहु बरसै बरसै न लगार।
मूसे तोते टीड़ी बधैं, सात ईति बिन सब सुख सधैं॥२२॥
फरस दंति[2] रस मीन[3] पतंग, रूप गंध अलि[4] कान कुरंग[5]।
एक एक वस खोवैं प्रान, पांचौं नहीं सुखी सो मान॥२३
व्यापै क्रोध लराई करै, व्यापै काम नारि वस परै।
व्यापै मोह गहै दुख भूर, जहां नहीं सो सुख भरपूर॥२४
दोष अठारह जिनकैं नाहिं, गुन अनंत प्रगटे निजमाहिं।
अमर अजर अज आनँदकंद, ग्यायक लोकालोक सुछंद२५
व्यापै भूख जलै सब अंग, व्यापै लोभ दाह सरवंग।
तन दुरगंध महादुखवास, जहां नहीं सोई सुखरास॥ २६

---

१ द्रव्य क्षेत्र काल भाव भव। २ हाथी। ३ मछली। ४ भौंरा। ५ हरिण।

दोहा ।

अमल अनाकुल अचल पद, अमन अवचन अकाय ।
ग्यानस्वरूप अमूरती, समाधान मन ध्याय ॥ २७ ॥

चौपाई ।

नरक पसू दोन्यौं दुखरूप, बहु नर दुखी सुखी नरभूप ।
तातैं सुखी जुगलिए जान, तातैं सुखी फनेस बखान ॥२८
तातैं सुखी सुरगकौ ईस, अहमिंदर सुख अति निस दीस।
सब तिहुँ काल अनंत फलाय, सो सुख एक समै सिवराय२९

दोहा ।

परम जोति परगट जहां, ज्यौं जलमैं जलबुंद ।
अविनासी परमातमा, निराकार निरदुंद ॥ ३० ॥
सिद्धनिके सुख को कहै, जानै विरला कोय ।
हमसे मूरख पुरुषकौं, नाम महा सुख होय ॥ ३१ ॥
द्यानत नाम सदा जपै, सरधासौं मनमाहिं ।
सिववांछा वांछाविना, ताकौं भौदुख नाहिं ॥ ३२ ॥

इति सुखबत्तीसी ।

विवेक-बीसी।

छप्पय।

जनम जरा मृति अरति, राग भै दोष मोह मद।
चिंता विसै नींद, भूख तिस सोग स्वेद गद ॥
खेद अठारै चूरि, दूरि घातिया भगाए।
गुन अनंत भगवंत, छयालिस परगट गाए ॥
देवाधिदेव अरहंत पद, सुर-नर-पति पूजा करैं।
वंदौं त्रिकाल तिहुँ जोगसौं, विघनपुंज छिनमैं हरैं ॥ १ ॥

ज्ञानी प्रशंसा।

कीरतिकी रति नाहिं, मान कविता न करनकौ।
ग्यान गान गुदरान(?) जैन परवान धरनकौ ॥
आपद संपद सबै, फबै पुग्गलके माहीं।
मैं निज सुद्ध विसुद्ध, सिद्ध सम दूजौ नाहीं ॥
इम आठ पहर जाकी दसा, गुसा खात हू ग्यानलै।
द्यानत सोई ग्याता महा, कहा करै जमराज भै ॥ २ ॥
ग्यानकूप चिद्रूप, भूप सिवरूप अनूपम।
रिद्ध सिद्ध निज वृद्ध, सहज समृद्ध सिद्ध सम ॥
अमल अचल अविकल्प, अजल्प, अनल्प सुखाकर।
सुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, सुगुन-गन-मनि-रतनाकर ॥
उतपात-नास-ध्रुव साध सत, सत्ता दरव सु एकही।
द्यानत आनँद अनुभौ दसा, वात कहनकी है नहीं ॥ ३ ॥
क्रोध कर्मपै करै, मूलसेती इह भानौं।
मान महा परचंड, त्रिजगपति हौं किह मानौं ॥
कपट-खान परधान, स्वाद अनुभौ न बतावै।

लोभी दूजौ नाहिं, सुगुन धन दै न दिखावै ॥
भै करै चहूँ-गति गमनकौ, दया विसन लीनौ पकर ।
तव करम साहके हुकमतैं, चढ़यौ मुकति गढ़ ग्वालियर॥४
तिय मुख देखनि अंध, मूक मिथ्यात भननकौं ।
वधिर दोष पर सुनन, लुंज षटकाय हननकौं ॥
पंगु कुतीरथ चलन, सुंन्न हिय लोभ धरनकौं ।
आलसि विषयनिमाहिं, नाहिं वल पाप करनकौं ॥
यह अंगहीन किह कामकौ, करै कहा जग वैठकैं ।
द्यानत तातैं आठौं पहर, रहै आप घर पैठकैं ॥ ५ ॥
होनहार सो होय, होय नहिं अन-होना नर ।
हरष सोक क्यौं करै, देख सुख दुःख उदैकर ॥
हाथ कछू नहिं परै, भाव-संसार वढ़ावै ।
मोह करमकौ लियौ, तहां सुख रंच न पावै ॥
यह चाल महा मूरखतनी, रोय रोय आपद सहै ।
ग्यानी विभाव नासन निपुन, ग्यानरूप लखि सिव लहै॥६
अरचैं नित अरहंत, सुगुरुपदपंकज चरचैं ।
परचैं तत्त्वनिमाहिं; धरम कारज धन खरचैं ॥
पात्र दान नित दैहिं, लैहिं व्रत निरमल पालैं ।
छुधित त्रिषित जन पोख, मोखमारगमल टालैं ॥
धरमी सज्जनसौं हित धरैं, इन गृहस्थ थुति बुध करैं ।
जे मोह-जालमैं फँसि रहे, ते चहुंगति दुख-दौं जरैं ॥ ७ ॥
तत्त्व दोय परकार, सु-पर भाष्यौ जिन-स्वामी ।
पर अरहंत सरूप, पुन्यकारन जग नामी ॥
आप तत्त्व दो भेद, सहित विकलप निरविकलप ।
निरविकलप निरवंध, वंध विकलप ममता जप ॥

निजदरव भाव नोकर्मसौं, भिन्न सरूप विवेक है।
सरधान आन दुख दान सब, द्यानत अनुभौ टेक है॥८॥
निहचै अरु विवहार, ताल दो हाथन बाजै।
दरवतने परजाय, सौंठ गुड़ भारत भाजै (?)॥
उदै उद्यमी भाव, दोय कर मथ घी लहियै।
ग्यान क्रियासौं मोख, पंग अँध मिलि पथ गहियै॥
इमि स्यादवाद नै समझकै, तत्त्वज्ञान निहचै क्रिया।
द्यानत सोई ग्याता पुरुष, बाहर मन अंतर दिया॥९॥
भोग रोगसे देखि, जोग उपयोग बढ़ायौ।
आन भाव दुख दान, ग्यानकौ ध्यान लगायौ॥
सकलप विकलप अलप, बहुत सब ही तजि दीनैं।
आनँदकंद सुभाव, परम समतारस भीनैं॥
द्यानत अनादि भ्रमवासना, नास कुविद्या मिट गई।
अंतर बाहर निरमल फटक, झटक दसा ऐसी भई॥१०॥

पंचभेद धर्मवर्णन।

एक दया उर धरौ, करौ हिंसा कछु नाहीं।
जति श्रावक आचरौ, मरौ मति अव्रतमाहीं॥
रतनत्रै अनुसरौ, हरौ मिथ्यात अँधेरा।
दसलच्छन गुन वरौ, तरौ दुख-नीर सबेरा॥
इक सुद्ध भाव जल घट भरौ, डरौ न सु-पर-विचारसैं।
ए धर्म पंच पालै नरौ, परौ न फिरि संसारसैं॥११॥

सच्चा साधु।

सोई साँचौ साध, व्याध भै नाहीं जाकैं।
सोई साँचौ साध, आध व्यापै ना ताकैं॥

सोई साँचौ साध, वाध लाहेकौं जानै।
सोई साँचौ साध, लाध आपौ भौ भानै॥
सोई जोगी भोगी नहीं, ताहीकी ल्यौ लाइए।
सोई ग्याता ध्याता वही, सोई साता पाइए॥ १२॥

छप्पय (सर्व लघु)।

सदय हृदय नित रहत, कहत नहिं असत बचन मुख।
दत अनदत नहिं गहत, चहत नहिं छिन मनमथ-सुख।
सब परिगह परिहरत, करत थिर मन वच तन तिय।
दुख सुख अरि मित जनम, मरन सम लखत हरख हिय॥
सहत सुबल धर परिसह सरब, दरब अमल पद मन धरत।
तजि थविरकलप जिनकलप तनि, बनि मुनिवर सिवतिय वरत॥ १३॥

दयाविचार।

अंगहीन धन भी न, लीन बहु रोग लोग हुव।
जीवभाव परभाव, चहै जीवन न मरन ध्रुव॥
तीन लोककौ राज लेय, नवि देय प्रान छिन।
यह विचार मनमाहिं, राजकौं हरै मोह विन॥
ऐसे प्यारे निज प्रानकौ, दान समान सु दान नाहिं।
तप सील भाव सब ही रहैं, सुखसौं करुना ग्यान माहिं १४
सुरग राग व्रत नाहिं, नरक अति दुखी भयंकर।
पसु विवेक नहिं रंच, मनुप तप विरत जयंकर॥
सो तैं नरभौ पाय, कियौ परमारथ कछु ना।
नाम तिहारौ बड़ौ, राय चेतन पर चछु ना॥
जिनधर्म रसायन पायकै, जिन अपना कारज किया।
सो धन्य पुरुष संसारमैं, तिन ही नर-लाहा लिया॥ १५॥

वहिर भाव सब खोय, होय अंतर आतम सम।
परमातम लख भ्रात, वात यह बड़ी अनूपम ॥
देव धरम गुरु जान, आन सरधान अकंपत।
पूजा दान विधान, करौ सफली घर संपत ॥
अरु बहुत बात कहियै कहा, ग्यान क्रियामैं मन धरौ।
तुझ बीती रीती आव सब, अबै समझि कारज करौ ॥१६॥
एक बूंद लहि सीप, अमल मुकताफल होई।
एक बूंद गहि सर्प, महाविष उपजै सोई ॥
एक बूंद तरु कंदलि[1], सुद्ध कर्पूर विराजै।
ताते तए मँझार, तासकौ नाम न पाजै[2] ॥
इम स्वाति बूंद बहु भेदसौं, संगति फल परवानियै।
तिम सुगुरु वचन नर भेदसौं, भेद अनेक पिछानियै ॥१७॥

एक सौ सैंतालीस शुभाशुभक्रियाओंका त्याग।

मन वच तनसौं एक, एक मन वच इक मन तन।
इक वच तन इक वचन, एक मन जान एक तन ॥
जोगभेद ए सात, सात कृत कारित अनुमत।
उनंचास विध वरत,-मान सु अतीत अनागत ॥
इक सौ सैंतालिस सब क्रिया, पुन्य पाप ममता तजौ।
निज परमाँनद समरस दसा, आप आपमैं नित भजौ १८

कुकवि सुकवि वर्णन।

कुमति रात तम नैन, प्रगट मारग नहिं पावै।
कुकवि कुस्रुत रज डारि, अंध भौ-वन भरमावै ॥

---

1 केलेके वृक्षमें। 2 पावै।

सुकवि ग्यान रवि जोति, मुकतिकौ पंथ चलावै ।
भविनि[1] राह दिखलाय, आप सिव पदवी पावै ॥
जिम मोह मिटै वैराग बढ़, सो वानी उर लेखियै ।
धनि द्यानत तारन तरन जग, सुगुरु जिहाज विसेखियै १९

अन्तमंगल ।

नमौं देव अरहंत, सिद्ध वंदौं जग ग्यायक ।
आचारज उवझाय, साधु तीनौं सुखदायक ॥
पंचै[2] समान न आन, ध्यान तिनकौ करि लीजै ।
और उपाव न कोय, मनुष-भौ लाहो लीजै ॥
द्यानत विवेकवीसी सदा, पढ़ौ महागुनकार है ।
निज आनँदमगन सदा रहौ, सव ग्रंथनकौ सार है ॥२०॥

इति विवेकवीसी ।

---

१ भव्य जीवोंको । २ पंच परमेष्ठी ।

भक्ति-दशक।

सवैया इकतीसा।

रिषभ अजित संभौ अभिनंदन सुमति,
पदम सुपास चंदाप्रभु जिन गाईये।
सुविधि सीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमल,
अनंत धरम सांति कुंथु उर भाईये॥
मल्लि मुनिसुवरत नमि नेमि पारसजी,
वर्धमान सुखदान हिये आन ध्याईये।
आदि मेर दक्खिनके वर्तमान बीस कहे,
नाए सीस निस दीस रिद्धि सिद्धि पाईये॥ १॥

आदिनाथ तीर्थंकरके भवान्तर।

जयवर्मा दिच्छावल विद्याधर महावल,
दूजे स्वर्ग ललितांग वज्रजंघ दानी जू।
भोगभूमिमाहिं जाय सम्यक दरस पायौ,
स्रीधर ईसानमैं सुविधि भूप ध्यानी जू॥
सोलहैं सुरग इंद्र वज्रनाभि चक्री भए,
सर्वारथसिद्धि बसे आदिनाथ ग्यानी जू।
बसे मोखदेस जाय द्वादस अवस्था पाय,
गावै मनवचकाय द्यानत कहानी जू॥ २॥
गरभ जनम तप ग्यान निरवान भोग,
लोग कहैं महाजोग धारयौ वन जाय जी।
वादी सिच्छ विक्रिया अवधि स्रुत मनपर्जै,
केवली गनेस धरे को तज्यौ वताय जी॥

चामकी अपावन महा दुर्गंध नारि छारि,
मोख नारि कंठ लाई सीलवान राय जी।
द्यानत चरित्र तेरे हमकौं पवित्र करौ,
बड़ेई विचित्र 'राग विना' ल्यो बुलाय जी ॥ ३ ॥
चोरीकौं अघोरी थोरी वारमैं दया दयाल,
[1]कियौ है निरंजन तैं अंजनके नामतैं।
पांडौं[2]से जुवारी अविचारी राजरिद्धि हारी,
किरपा तिहारी सिव धारी भव धामतैं ॥
कीचक सौ नीच चाही द्रौपदी सती जौं[3]वीच,
सोऊ तौ लियौ नगीचै[4] धोय कीच कामतैं।
द्यानत अचंभ कहा तपसौं वैकुंठ लहा,
अधम उधारन हौ स्वामी जी प्रनामतैं ॥ ४ ॥
धरममैं अलसानौ खान पानकौं सयानौ,
कहालौं वखानौं सव जानौ वात हमरी।
चाहत हौं मोप वरयौ दोषनिकै कोष पोष,
कोटीधुज भयौ चाहौं गांठमैं न दमरी ॥
दया भक्ति नई कई (?) पामरी तिहारी दई,
घरमैं है उठौ नाहिं डारि लोभ कमरी।
द्यानत कहाऊं दास यह तौ बड़ौ लिवास,
कीजियै उदास नास जाय आस चैमरी[5] ॥ ५ ॥
बड़े धनवान इंद धरनिंद चक्रवर्त्ति,
जेऊ जाहि जाचैं ऐसे साहव हमारे हैं।

---

१ अंजन चोर। २ पाण्डव। ३ मनमें। ४ समीप। ५ चमारिन नीच।

फरसतैं न्यारे रस न्यारे रूप गंध न्यारे,
सवदतैं न्यारे पै सब जाननहारे हैं ॥
जैसा कोई भाव धरै तैसा सोई फल वरै,
आरसी सुभाव रागदोपसेती न्यारे हैं ।
पास कछु राखैं नाहिं दाता मनवांछितके,
ऐसे देव जानैं जिन पातिग[1] विदारे हैं ॥ ६ ॥

सब सुख लायक सरव गेय ग्यायक,
सकल लोकनायक हौ घायक करैं[2]नके ।
मैन फैन नासत हौ नैन ऐन भासत हौ,
वैन हु प्रकासत हौ पापके हरनके ॥
कर्म भर्म चूरत हौ पर्म धर्म पूरत हौ,
हुनर वतावत हौ भौ-जल तरनके ।
द्यानतके ठाकुर हौ दासपै कृपा कर हौ,
हर हौ हमारे दुख जनम मरनके ॥ ७ ॥

देखौ जिनराज जिन राजकौ गुमान देखौ,
मान देखौ देव मान मान पाईयत है ।
जपके कियैतैं जप तपकौ निधान होत,
ध्यानके कियैतैं आन ध्यान ध्याईयत है ॥
नामके लियैतैं पर नामकी न रहै चाह,
चाहके कियैतैं चाह दाह घाईयत है ।
ऐसे जिन साहबके द्यानत मुसाहव,
भए हैं पद पूज दूज चंद गाईयत है ॥ ८ ॥

---

१ पातक पाप । २ इन्द्रिय विपय ।

अर्हं अरहंत अरिहंत भगवंत संत,
ब्रह्मा विष्णु सिव जिन वीतराग वुद्ध हौ ।
दाता देव देवदेव परब्रह्म सुरसेव,
मुनीस रिसीस ईस जगदीस सुद्ध हौ ॥
अनादि अनंत सार सरवग्य निराकार,
जित-मार निराधार साहव विसुद्ध हौ ।
भगवान गुनखान जती व्रती धनी नाथ,
राजा महाराजा आप द्यानत सुवुद्ध हौ ॥ ९ ॥
ग्रंथ हैं अपार सव केतक पढ़ैगा कव,
जामैं ना परैगी सुधि तामैं पचि मरि है ।
दान जोग लच्छ लच्छ कोरि जोरि पापनितैं,
तिनहीकी थापनितैं दुर्गतिमैं परि है ॥
संजम अराध तीनौं जोग साध पुन्य महा,
चित्तके चलायैं घट दुःकृतसौं भरि है ।
द्यानत जो पूछै मोहि प्रानी सावधान होय,
वीतराग नाव तोहि वीतराग करि है ॥ १० ॥
आवके वरस घनै ताके दिन केई गनै,
दिनमैं अनेक स्वास स्वासमाहिं आवली ।
ताके वहु समै धार तामैं दोष हैं अपार,
जीव भावके विकार जे जे वात वावली ॥
ताकौ दंड अव कहा लैन जोग सक्ति महा,
हौं तौ वलहीन जरा आवति उतावली ।
द्यानत प्रनाम करै चित्तमाहिं प्रीत धरै,
नासियै दया प्रकास दासकी भवावली ॥ ११ ॥

इति भक्तिदशक ।

धर्मरहस्यबावनी।

मंगलाचरण। सवैया तेईसा (मत्तगयन्द)।

पंचनिमैं कहियै परमेसुर, पंच हु अच्छर नाम दियेतैं।
'ओंनम'कार सबै सिर ऊपर, पंचनितैं उतपत्ति कियेतैं॥
लोक अलोक त्रिकालमैं नाहिं, कोई तिनकी सम देख हियेतैं।
आठहि रिद्धि नवौं निधि सिद्धिकौं,द्यानत पाइयै गाय लियेतैं
भौं-अरि हंत भए अरिहंत, जपैं नित संतनिके दुख-त्राता।
सिद्धि भई निज रिद्धिकी सिद्धकौं,नाम गहैं लहैं सेवक साता।
साधत मोखकौं तीनंहु साध मैं, साध अराधमैं द्यानत राता।
ए पंद इष्ट महा उतकिष्ट सु, मंगल मिष्ट सुदिष्टके दाता॥२॥
जा पदमैं सब केवली द्यानत, जानत सो अरहंत हियेतैं।
जा पद सुद्ध सबै जिय रिद्धिकौं, पाइयै सिद्धकौं नाम लियेतैं॥
जी गुण थानक सातके वंदिय, सूरि गुरू मुनि जाप दियेतैं।
चोर उदंगल संचक वंचक, पंचक मंगलचार कियेतैं॥३॥

अरहंतस्तुति।

गर्भ छमास अगाऊ रचे पुर, जन्म सुरासुर मेरु न्हुलावैं।
देव रिसीस विरागि करैं थुति, ग्यानविभौ हम कौन वतावैं॥
आपनि जातकी वात कहा सिव, वातनितैं परकौं पहुंचावैं।
पंचकल्यानक थानक द्यानत,जानत क्यौं न महा सुख पावैं४
केवलग्यान अखैद्दगवान, महासुखखान सुवीरज पूरा।
द्यानत इंद नरिंद फनिंदनि, वंदित घाति किये चकचूरा॥
चौतिस आठ नमौं गुन पाठ, दुवादस कोठनिकौ हित पूरा।
भौं-अरिहंत सु मो अरिहंतहु, नाम जपौं तुम ठाम हजूरा॥५॥

---

१ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु।

मानुपतैं थुति देव करैं बहु, देवनितैं अति इंद्र वखानैं ।
इंद्रनितैं स्रुतकेवलि भासत, केवलितैं गनजी अधिकानैं ॥
ताहूपै ओर न पुव्व किरोरन, काल गये हम कौन समानैं।
द्यानत पाय परैं सिर नाय, विसेस वताय कहा हम जानैं ॥६॥

आदिनाथस्तुति ।

आदि नरेसुर आदि मुनीसुर, आदि जिनेसुर आदिवतारी ।
सागर कोर किरोर अठारह, आरज रीति कुरीति निवारी ॥
स्वर्ग विलासकै मोख निवासकै, राह चलाय कुराह विदारी ।
द्यानत देव पसू नर को कहि, नारककौं सुखकारक भारी ॥७॥

चंद्रप्रभस्तुति ।

पावन वावन चंदन मोहके, द्रोहकी दाह हरै न हरै तू ।
ताप लियैं रविरूप उजासक, सांत अरूप प्रकास करै तू ॥
द्यानत चंद असंखतैं जोति, अनंत गुनी प्रभु चंद धरै तू ।
अद्भुत राग विरागि कहावत, रागनिके घर रिद्धि भरै तू ॥८॥

शान्तिनाथस्तुति ।

सांति जिनेस निसेस दिनेसतैं, तेज विसेस सुरेस न वोलैं ।
कामपदी वर चक्र-विभौधर, आपनि रिद्धि कहैं किह तौलैं ॥
वंदत चर्न निकंदत मर्न सु, वर्न दुई भव-वंधन खोलैं ।
द्यानत हाथ गहौ किन नाथ, रहैं तुम साथ नहीं भव डोलैं ।९।

नेमिनाथस्तुति ।

नेमकुमारसौं पेम किए विन, केम कहौ सुख हे मन पावै ।
आनँद-लायक भौ-गद-घायक, स्यौ-पद-दायक ताहि न ध्यावै ।
तीरथ दूरि अनेकनि धावत, गावत जीभ कहा घसि जावै ।
द्यानत आप समान करै तोहि, चाहत और कहा सु वतावै १०

पार्श्वनाथस्तुति ।

पारसकौं भजि आरसकौं तजि, जा रसका रसता रस पावै ।
कार सजाय सु आरस पाय, सुधारस काय-जरा जरि जावै ॥
पारस पास कुधात विनास, सुधात प्रकास घरी न लगावै ।
नागिनि नाग किए वड़ भाग सु, द्यानत ओर न कौन गिनावै॥

महावीरस्तुति ।

वीर महा महावीर जिनेसुर, गोतम मान-धनेसुर नाए ।
बालक चालमैं सील धरेसुर, चंदना देखत बंध खुलाए ॥
मैंड़क हीन किए अमरेसुर, दान सवै मन-वांछित पाए ।
द्यानत आज लौं ताहीकौं मारग, सागर है सुख होत सवाए॥

सिद्धस्तुति ।

सिद्धकीरिद्धि प्रसिद्ध कहा कहुं, सूच्छम औधहु ग्यानी न जानैं
लोक अलोक त्रिकाल समाय, गए किम थूलकौं मान प्रवानैं॥
वैन न आवत बुद्धि न पावत, चित्तमैं प्रीतिसौं नाम हू आनैं ।
द्यानत ठानत जा पदकौं तप, सो पद आप ही दैं भगवानैं १३

आचार्यस्तुति ।

पंच अचार विना अतिचार, करावनहार सु पांच हु धारी।
चारि हु ग्यान दुआदस वान, रचैं परवान लहैं रिधि भारी।
वैकुल सुद्ध करैं प्रतिबुद्ध सु, द्यानत भव्यनके उपकारी ।
तास अचारजके पद-वारज, मंगल-कारज धोक हमारी।१४।

उपाध्यायस्तुति ।

ग्यारह अंग सु चौदह पूरव, आप पढ़ैं सु पढ़ैं सव, यातैं ।
जीव अपार परे भवधार, निहार विचार दयामय वातैं ॥
आतम ग्यान सहैं दुख जान, करैं श्रुति ग्यान सुबुद्ध कहातैं।
द्यानत ते उवझायनि पायनि, गायनिके गुन गाय हियातैं १५

सर्वसाधुस्तुति ।

भाँतन-भोग तज्यौं गहि जोग, सँजोग वियोग समान निहारैं।
चंदन लावत सर्प कटावत, पुष्प चढ़ावत खर्ग प्रहारैं ॥
देहसौं भिन्न लखैं निज चिन्ह, न खिन्न परीसहमैं सुख धारैं।
द्यानत साध समाधि अराधिकै,मोह निवारिकैं जोति विथारैं
भू जल पावक वृच्छ ससी रवि, मेघ नभं गुन आवुह सारैं।
सीत नदीतट ग्रीषम भूधर, पावस वृच्छतलैं निस टारैं ।
वज्र परै नहिं ध्यान टरै, सिव-चाहक चाहकी दाह विडारैं।
द्यानत साध समाधि अराधिकैं,मोह निवारिकैं जोति विथारैं

श्रावकस्तुति ।

दंसन सुद्ध गहैं व्रत वुद्ध, विरुद्ध समायिककी विधि टालैं।
पोसह ठान सचित्त अखान, तजैं निसि खान सु सील सँभालैं॥
आरँभ छंड परिग्रह डंडन, पापकी वात कहैं न तिकालैं ।
द्यानत भोजन लैंहिं उडंड, इकादस भूमि सरावक चालैं १८
आठ धरैं गुनमूल दुआदस, वृत्त गहैं तप द्वादस साधैं ।
चारि हु दान पिवैं जल छान, न राति भखैं समता-रस लाधैं ॥
ग्यारह भेद लहैं प्रतिमा सुभ, दर्सन ग्यान चरित्त अराधैं ।
द्यानत त्रेपन भेद क्रिया यह, पालत टालत कर्म-उपाधैं ।१९।

जिनवाणीस्तुति ।

देव गुरू सुभ धर्मकौं जानियै, सम्यक आनियै मोखनिसानी।
सिद्धनितैं पहलैं जिन मानियै, पाठ पढ़ैं हूजियै स्रुतग्यानी ॥
सूरज दीपक मानक चंदतैं, जाय न जो तम सो तम हानी।
द्यानत मोहि कृपाकर दो वर,दो कर जोरि नमौं जिनवानी ॥

ईषसवाद(?) न याद महा जड़,काव्य-कला कवि सीस धरी है।
विस्न असक्त विरक्त किए तिन, देख विसेख क्रिया पसरी है॥
सूम बड़े सुनि ताप चढ़ै तिन, दान झरी उघरी न घरी है।
द्यानत बात कहा यह मात, क्रिया तुमतैं सिव नारि वरी है॥

प्रतिमा-माहात्म्य ।

वंदहु श्रीअरहंतके बिंबकौं, धात पखानके भव्य बनाए।
बैन बिना सिव राह बतावत, आसन ध्यान अनोपम गाए॥
द्यानत आन सिंगार न सोहत, मोहत तीन हु लोक सदा ए।
पूजन गावन ध्यावन को कहि,देखत ही पद वांछित पाए॥२२
केवलग्यानि इहां न सुखेतमैं, सिद्ध प्रसिद्ध न आँखिन पेखै।
सूरि गुरु महावीर मनैं किय, साध नजीक न जाय विसेखै॥
बानि विसुद्ध लसै न धसै बुध, द्यानत सीख यही उर लेखै।
पंच-निकारक भौ जल तारक,प्रात उठैं प्रतिमा मुख देखै॥२३॥

दर्शनस्तुति ।

इंद फनिंद नरिंदतैं कासतैं, रूप अनूप कह्यौ नहिं जाई।
दीपक मानिक चंदकी सूरकी, जोतितैं देहकी जोति सवाई॥
चंदतैं चंदनहूतैं कपूरतैं, पालेतैं सीतल बानि बताई।
द्यानत ए गुनकौं नहिं पार सु, केवलग्यानिकी कौन बड़ाई॥२४
रंचक राग नहीं जिनरायकै, सर्व परिग्रह त्याग दिया है।
दोष कहा कहियै विन कारन, आयुध एक न संग लिया है॥
साम्यतया निज ग्यान भया सब,कर्म विनास प्रकास किया है।
आनँदकंद महा सुख साहब, द्यानतनैं तकि याद किया है २५

ध्यान ।

पाँवनिसौं कछु पावनौं नाहिं है, याहीतैं आवन जान तजा है।
हाथनिसौं करना कछु काम न,लंब किए कर आप भजा है॥

आंखिनसौं सब देखि लियौ प्रभु, नाक अनी लव ध्यान सजा है
काननिसौं सुननौं न लियौ वन, बांधि निराकुल ध्यान धजा है

अवाञ्छिकदशा।

लोगनिसौं मिलनौं हमकौं दुख,साहनिसौं मिलनौं दुख भारी।
भूपतिसौं मिलनौं मरनैं सम, एक दसा मोहि लागत प्यारी ॥
चाहकी दाह जलै जिय मूरख, बे-परवाह महा सुखकारी।
द्यानत याहीतैं ग्यानी अवंछक, कर्मकी चाल सबै जिन टारी

महावीर भगवानकी वन्दनाके लिए श्रेणिकका गमन।

ग्यान प्रधान लहा महावीरनैं, सेनिक आनँद भेरि दिवाई।
मत्त मतंग तुरंग बड़े रथ, द्यानत सोभत इंद्र सवाई ॥
बांभन छत्रिय वैस जु सूद, सु कामिनि भीर घटा उमड़ाई।
कान परी न सुनै कोऊ बान सु, धूरके पूर कला रवि छाई २८

आदिनाथकी ध्यानावस्था।

ग्रीषम काल जलै भुवि जाल,खरे गिरि सीस सिलापर स्वामी।
ईंधन कर्म उदासकी पौनतैं,ध्यानकी आगि जलै अभिरामी ॥
ता निकलौ कन जाम उभै दिन,सीस दिपै छबिसौं रवि नामी।
आदि जिनेसुर हौ परमेसुर, वंदत पायँ करौ सिवगामी ॥२९

चार प्रकारके मनुष्य।

द्यानत उत्तम आतम चिंत, करैं न डरैं जमराज वलीतैं।
मध्यम पूजन दान करैं, निकरैं दुरगीत (?) अँधेर गलीतैं ॥

१—कायोत्सर्गायताङ्गो जयति जिनपतिर्नाभिसूनुर्महात्मा,
मध्याह्ने यस्य भास्वानुपरि परिगतो राजते स्मोग्रमूर्तिः।
चक्रे कर्मेन्धनानां अतिबहु दहतो दूरमौदास्यवात-
स्फूर्जत्सद्ध्यानवह्नेरिव रुचिरतरः प्रोद्गतो विस्फुलिङ्गः ॥
—पद्मनन्दिपञ्चविंशतिका।

अद्धम जी रुजगार बखानत, ठानत पेटमैं आगि बलीतैं ।
अद्धम अद्धम पाप उपार्जत, गाज उठैं मुख बात चलीतैं॥३०॥

भावनाचतुष्क ।

थावर जंगम जीव सबै, समता धरि आप समान बखानैं ।
दर्सन ग्यान चरित्त गुनाधिक, देख विसेख विनै अति ठानै॥
भूख त्रषादि महा दुखवंतनि, संत भयौ करुना मन आनै ।
साम्य दसा विपरीतनसौं बुध, द्यानत चार विचच्छन जानै

ज्ञाताको उपदेश ।

मैल भर्यौ दुरगंध महाजल, गंग सुगंग प्रसंग हुएतैं ।
काठ अपार निहारि भयौ दव, लागत नैंकसी आग फुएतैं॥
द्यानत क्यौं नहिं देखहु वारिधि, वारिदकौ जल बूँद चुएतैं ।
आतमतैं परमातम होत है, बाती उदोत है दीप बुएतैं॥३२॥
जाहीकौं ध्यावत ध्यान लगावत, पावत हैं रिसि पर्म पदीकौं।
जा थुति इंद फनिंद नरिंद, गनेस करैं सब छांड़ि मदीकौं॥
जाहीकौं वेद पुरान बतावत, धारि हरै जमराज वदीकौं ।
द्यानत सो घट माहिं लखौ नित, त्याग अनेक विकल्प नदीकौं

ज्ञातादशा ।

धातनके घर नीव महा वर, सोच नहीं छिनमैं ढहिजातैं ।
पुत्र पवित्र सु मित्र विचित्र न, चित्र जहां लखिए जम खातैं॥
द्यानत इंद फनिंद नरिंदकी, संपत कंपत काल-कलातैं ।
हांनन दीननकै सुख कौंन, प्रवीन कहा विषयारस रातैं?॥३४॥

१—सत्त्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थ्यभावं विपरीतवृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव ॥
—अमितगतिसूरि ।

वात कहैं न गहैं हट रंचक, वाद विवाद मिटैं सव यातैं।
कान सुनैं वहु वान मुनैं लह, हंस सुभाव सुकारज रातैं॥
वोलत डोलत पापनि छोलत, खोलत मोख किवार धकातैं।
द्यानत संतनकी यह रीत, दया रस पीत अनीतनि यातैं।३५।

मूढ़दशा।

पापकी वातनि प्रातकी प्रातलौं, जापकी वात न एक घरी हू।
खानकौं आप सु वाप सुता सुत, दानके भाव न नैंक लरी हू॥
भौन चुनावनकौं गहना धरि, जैनके भौन न ईंट परी हू।
ता पर चाहत हौ सुख द्यानत, जानत मोहिन मौति मरी हू॥
भूख गई घटि, कूख गई लटि, सूख गई कटि, खाट पस्यौ है।
वैन चलाचल नैन टलावल, चैन नहीं पल, व्याधि भस्यौ है॥
अंग उपंग थके सरवंग, प्रसंग किए जन नाक सस्यौ है।
द्यानत मोह चरित्र विचित्र, गई सव सोभ न लोभ टस्यौ है॥
वालक वालखियालिनि ख्याल,जुवानि त्रियान गुमान भुलानैं
मे घरवार सबै परिवार, सरीर सिंगार निहार फुलानैं॥
वृद्ध भए तन वृद्धि गए खसि, सिद्धत काम न खाट तुलानैं (?)।
द्यानत काय अमोलक पाय, न मोख दुवार किवार खुलानैं॥
प्रात उठैं सुमथैं विकथा रस, कै जल छान तमाखु भरावैं।
रात ही जात तगाद उगाहनि, भोजन त्यार भए हिग खावैं॥
सोच करैं रुजगारके कारन, काम कहा किहके घर जावैं।
संकट चूरत मंगल मूरत, द्यानत पारसनाथ न गावैं ३९
जामहिं खाध किधौं विदिता, सठ ता रुजगार लगोई रहै है।
जामहिं नित्त नफा सव जानत, ताहि लग्यौ यह नाहिं कहै है॥
स्वारथ देस विदेस भमै धन, कर्मवसात लहै न लहै है।
द्यानत आतम स्वारथ है ढिग,आलस त्याग करौ न चहै है४०

हाट वनायकैं वाट लगायकैं, टाट विछायकैं उद्यम कीना।
लैनकौं वाढ़ सु दैनकौं घाट, सुवाँटनि फेरि ठगे वहु दीना॥
ताहूमैं दानकौ भाव न रंचक, पाथरकी कहुँ नाव तरी ना।
द्यानत याहीतैं नर्कमैं वेदनि, कोर किरोरन ओर सही ना ४१
खानकौं आतर ध्यानकौं कातर, मान महातर-डार चढ़े हैं।
दैनकौं आरस लैन महा रस, वैन कहा रस रीति गढ़े हैं॥
काम अनाहक दामके गाहक, राम अचाहक चाह मढ़े हैं।
द्यानत या कलिकालके पंडित, ग्यान नहीं उर, पाठ पढ़े हैं४२

उपदेश।

क्रोध फसे गति नर्क वसे दुख,-नाग डसे फिर कोप कला रे।
माया लए तिरजंच गए वहु, कष्ट सए फिर माया वला रे॥
द्यानत कामके भावनि भाव, निवाह न होय कुलोभ जला रे।
त्यागि कषाय छिमा सुखदाय, सुनाय कहूं अव दाव भलारे४३
नर्कनिमाहिं कहे नहिं जाहिं, सहे दुख जे जव जानत नाहीं।
गर्भमझार कलेस अपार, तलैं सिर था तव जानत नाहीं॥
धूलके वीचमैं कीच नगीचमैं, नीच क्रिया सव जानत नाहीं।
द्यानत दाव उपाव करौ जम, आवहिगो अव जानत नाहीं४४

उद्यम।

अंवर डार अडंवर टार, दिगंवर धार सु संवर कीना।
मंगल आस उदंगल नास, सु जंगल वास सुधातम भीना॥
कोह निवारिकैं लोह विडारिकैं, मोह विदारिकैं आपप्रवीना।
कर्मकौं भेदिकैं पर्मकौं वेदिकैं,द्यानत मोखविषैं चित दीना४५
निंदक नाहिं छमा उरमाहिं, दुखी लखि भाव दयाल करैं हैं।
जीवकौ घात न झूठकी वात न, लैंहि अदात न सील धरैं हैं॥
गर्व गयौ गल नाहिं कहूं छल, मोम सुभावसौं जोम हरैं हैं।
देहसौं छीन हैं ग्यानमैं लीन हैं, द्यानत ते सिवनारि वरैं हैं४६

देवतैं आय वड़ा कुल पाय, हुए भुवि राय सदा सुख कीनैं।
सेवग जोगनि जाचक लोगनि, दान सबै मनवंछित दीनैं॥
त्यागकैं मौन भये सिव सौन, करैं थुति कौन महा रस भीनैं।
साधके पायनमैं सिर नाय, कहैं जस होत हैं पापतैं हीनैं॥४७

साधुके अष्टगुण।

भूमि समान छमा गुनवान, अकास सरूप अलेप रहे हैं।
निर्मल ज्यौं जल आग ज्यौं तेज, सदा फलदायक वृच्छ गहे हैं॥
पापमहातमनासक सूरज, आनँददायक चंद लहे हैं।
मेघ समान सबै विध पोपक, आठ महा गुण साध कहे हैं ४८
जो दुख देख विसेख दुखी जन, तामहिं धीरजसौं थिर ठाढ़े।
ग्रीपम सैल सिला तरु पावस, सीतमैं चौपथ भावनि गाढ़े॥
वज्र परै न समाधि टरै निज, आतम लौ रत आनँद वाढ़े।
द्यानत साधनकौ जस को कहि, वंदत पाप महा वन दाढ़े ४९
एककौं देखनि जात सबै जग, केई देखैं केई देख न पावैं।
एक फिरैं नित पेटके काज, मिलै नहिं नाज दुखी बिललावैं॥
सो यह पुन्यरु पाप प्रतच्छ, न राग विरोध सुधी सम भावैं।
द्यानत आतम काज इलाज, सुखी जनमाहिं सुखी कहलावैं
वैठि सभा रस रीति सुनाय, कला कवि गायकै मूढ़ रिझावैं।
ऐसे अनेक भरे भुवि लोकमैं, आपनि डूवत और डुवावैं॥
ते धनि जे परमातम ग्यान, वखान सुमारगमाहिं लगावैं।
द्यानत ते विरले इस कालमैं, आपमैं आप जथारथ ध्यावैं५१
धर्म पचास कवित्त उभैजुत, भक्ति विराग सुग्यान कथा है।
आपनि औरनिकौं हितकार, पढ़ौ नर नारि सुभाव तथा है॥
अच्छर अर्थकी भूल परी जहाँ, सोध तहां उपकार जथा है।
द्यानत सज्जन आपविषैं रत, हो यह वारिधि शब्द मथा है ५२

इति धर्मरहस्यवावनी।

दान बावनी।

छप्पय।

वंदौं आदि जिनिंद, वृत्त-तीरथ परगास्यौ।
नमौं स्रियांस नरिंद, दान-तीरथ अभ्यास्यौं॥
दोऊ चक्र अवक्र, धर्मरथकौं लहि नामी।
सिवपुर पुर बहु गए, जाहिं जे हैं आगामी॥
ए बड़े पुरुष संसारमैं, कौन महातम ऊचरै।
सोई जानौ मानौ चतुर, विरत दान रुचिसौं करै॥१॥

सवैया इकतीसा।

सबके अंतरजामी तीनलोकपति स्वामी,
आदिनाथ प्रभु नामी गामी सिव भौनके।
तिनकौं दियौ अहार हथिनापुर मझार,
ताके गुन कहैं सार ऐसे गुन कौनके॥
उज्जल सरद घन चंद जस व्यापि रह्यौ,
लोकमैं सुगंध फैलि जाय चलैं पौनके।
तेई सिरीअंस मोहि, लोभकौ विधंस करौ,
धरौ हियै ग्यान हरौ दुख आवागौनके॥ २॥
कुरुवंसी-भूप-मनिमालमधि नायक है,
सिरीअंस दानेस्वर दानीमैं गिनाईयै।
बार मासके उपास किये आदिनाथ तास,
दियौ जी गिरास जास कैसैं जस गाईयै॥
आनँद भयौ अकास बरसे रतन रास,
तबतैं पृथ्वीकौं वसुधा कहि बुलाईयै।

सो दिन अजौं लौं विद्ध अखैतीज है प्रसिद्ध,
कौनसी न रिद्ध सिद्ध नाम लेत पाईयै ॥ ३ ॥

सवैया तेइसा । (मत्तगयन्द)

दुल्लभ मानुष भौ सु विभौ जुत, पाय कहा गरवाय अनारी ।
आव कला कमला पट पेखनि, देखनिकौं चपला उनहारी ॥
लोभ महा तम कूप परे तिन, देखि दया हम चित्त विचारी ।
तास निकारन कारन वैन, कहैं पकरौ निकरौ मतिधारी॥४॥
उत्तम नारि सपूत कुमार, भयौ धन सारतैं मोह बढ़्यौ है ।
वार न पार समुद्र विषैं सुभ, दान विधान जिहाज चढ़्यौ है॥
खेवट भावसौं प्रीति भई तव, भीति गई सुख राह पढ़्यौ है।
धर्म जिहाज इलाज विना, दुख वारिधितैं जिय कौन कढ़्यौ है

अडिल्ल ।

वहुत जीव हितकार, सार धन संग्रहा ।
पात्र दान विधि जान, सफल गिरही कहा ॥
पावै सुभगतिद्वार, धारकै दानकौं ।
ज्यौं वारिधि तरि जाय, पायकैं यानकौं ॥ ६ ॥

सवैया तेईसा ।

देस विदेस कलेस अनेक, करोर उपाय कमाय रमा रे ।
नारि सुहात न पूत ददात न, आपनि खात न जोरि जमा रे॥
ऐसौ महा धन प्यारौ लहा जन, संत कहैं सुनि वैन हमारे ।
ता इक दान सु गति(?) विना दुख, चेति अबै फिरि नाहिं समारे

कवित्त ।

भोजन आदि माहिं जो जन धन, नित प्रति खात जात है सोय।
ताकौ सुपनै विषै न दरसन, ताते तए वूँद अवलोय ॥

मुनिवर दान जोग सुभ खरच्यौ, सोई दरव लहै परलोय।
इक वट वीज सुखेत वोयकैं, फल अनेक पावै सव कोय ॥८॥
जिन अहार दीनौं मुनिवरकौं, तिननैं धर्यौ मोखपुर माहिं।
निज हू अमर नगर घर कीनौं, उच्च संगतैं धोखा नाहिं ॥
जैसैं राज चुनैं जिनमंदिर, तिनकै साथहि ऊरध जाहिं।
देहिं दान अभिमान लोभ तजि, धन चंचल है ढरती छाहिं ९

अडिल्ल।

जो थोरौ हू दान भगतिसौं देत है।
साधुनिकौं सु अनंतगुनौ फल लेत है ॥
जैसैं खेतमझार वीज कछु डारियै।
तातैं अति वहु पुंज प्रतच्छ निकारियै ॥ १० ॥

कवित्त।

जिननैं दान दियौ साधुनिकौं, निरमल मन वच काय लगाय।
तिननैं पुन्य वीज उपराज्यौ, जातैं भौ वारिधि तरि जाय ॥
ताकी इंद करै अभिलाषा, कव मैं देहुं मनुज भव पाय।
तू क्यौं ढील करत है प्रानी, जानी वात देहि मन लाय ॥११॥

अडिल्ल।

मोख हेत रतनत्रै, मुनिवर धरत हैं।
काय सहाय उपाय, सु भोजन करत हैं ॥
मुनिकौं दान भगतिसौं, जिन स्रावक कर्यौ।
तिन गृह जननैं, सिव मारगमैं लै धर्यौ ॥ १२ ॥

कवित्त। (३१ मात्रा)

जप तप संजम सील विविध वृत, स्रावककैं संपूरन नाहिं।
आरंभ झूठ वचन चंचल मन, पाप पुंज वाढ़ै घर माहिं ॥

दान एक पूरौ सब गुनमैं, देकैं सुरग लोकमैं जाहिं ।
मन वच काय सुद्ध ह्वै दीजै, कीजै नहिं वांछा तिह ठाहिं १३
भौन-सैलतैं दान तनक जल, सरता जेम बढ़ै विसतार ।
लछमी सलिल वढ़ै दिन दिनप्रति,सुजसफैन सिवदधिलग सार
सम्यकवंत पुरुप सरधासौं, दियौ दान सुभ पात्र विचार ।
बात कहत नहिं वस्तु लहत है, 'देय लेय' परगट व्यौहार १४
धरि परिगहकौ भार माहिं नहिं, थिरता परमातमकौ ग्यान ।
सिव विन तीनौं अर्थ सधत हैं, साधैं साध चार सुख दान ॥
चारौं हाथ वीच हैं जाके, देय प्रीतिसौं पात्रै दान ।
"भवन दान वन माहिं तपस्या," यह तौ परगट वात जहान१५

सोरठा ।

सिव-पुर-पंथी साध, नाम रटै पातग हटै ।
चारौं दान अराध, तिरै जगत अचिरज कहा ॥१६॥

सवैया तेईसा । (मत्तगयन्द)

भौन कहा जहां साध न आवत, पावन सो भुव तीरथ होई ।
पाय प्रछालकैं काय लगायकैं, देहकी सर्व विथा नहिं खोई ॥
दान करयौ नहिं पेट भरयौ वहु, साधकी आवन वार न जोई ।
मानुप जोनिकौं पायकैं मूरख,कामकी वात करी नहिं कोई१७
देव कहा जहां भाव विकार, भजौ कि न देव विरागमई है ।
साधु कहा जिसकैं नहिं ग्यान, गुरू वह जास समाधि भई है ॥
धर्म कहा जिसमैं करुना नहिं, धर्म दया अघरीति खई है ।
दानविना लछमी किह कारन, 'हाथ दई तिन साथ लई है'१८

कवित्त । (३१ मात्रा)

गुन वहु भए ग्यान नहिं पायौ, वहुत भोग नहिं वृत्त लगार ।
धनकौं पाय दान नहिं दीनौं, गुन धन भोगनिकौं धिक्कार ॥

तीन जगत वस करन हरन दुख, धरम मंत्र न जपै सुखकार।
'बहते पानी हाथ न धोवै', फिरि पछिताय होय का सार॥१९॥
पात्र दानमैं जो धन खरचै, इह पर भौ सुख विविध प्रकार।
आप देस परदेस भोगवै, राजलच्छमी कहियै सार॥
दान विना इह भौमैं दारिद, पर भौ दुरगति दुःख अपार।
दान समान न आन पुन्य कछु, देहि ढील मति करै लगार२०
काय पायकैं व्रत नहिं कीनैं, आगम पढ़ि नहिं मिटी कषाय।
धनकौं जोरि दान नहिं दीनौं, कहा काम कीनौं इह आय॥
लीनौं जनम मरनकै कारन, रतन हाथसौं चलौ गमाय।
तीनौं वात फेरि कब पावै, शास्त्रग्यान धन नर-परजाय २१

सवैया इकतीसा (मनहर)।

पापकौ इलाज त्याज पुन्य काजके समाज,
खात है परायौ नाज आनँदकौ खेत है।
ग्यानकौं जगावत है मानकौं भगावत है,
पारकौं लगावत है, जैनधर्म केत है॥
मानुष जनम पाय, तप कीजै मन लाय,
भौसागर सुखसेती, तरिवेकौं सेत है।
बुरौ धन घरमाहिं, पूजा दान बनै नाहिं,
दुर्गतिके दुख हौहिं तासौं कहा हेत है॥ २२॥

अडिल्ल (२१ मात्रा)।

श्रीजिनचरनकमलकी पूजा ना करी।
देखि संयमी दान भगति नहिं आदरी॥
धाममाहिं वसि काम, कहा तैनैं किया।
गहरे जलमैं, नरभौकौं पानी दिया॥ २३॥

भौ सागरमैं भमत, कठिन नरभौ लहै ।
भौ-तन-भोग विराग, धन्य जो तप गहै ॥
जौ न बनै तौ घरमैं, अनुव्रत पालियैं ।
पात्रदानविधि, दिन दिन अधिक संभालियै ॥२४॥
चल्यौ धामतैं गाम, बहुत तोसा लिया ।
राहमाहिं दुख नाहिं, सदा सुख तिन किया ॥
भवतैं पर-भव जात, दान व्रत जो धरै ।
अद्भुत पुन्य उपाय, साह्वी सो करै ॥ २५ ॥

सवैया तेईसा (मत्तगयन्द) ।

या जगमैं नर भोग विथारन, कीरत कारन काम बनावै ।
पाप उदैमहिं जोग बनैं नहिं, आपकौं दुःखकी वेलि बढ़ावै ॥
दैनके भाव सदा अति उत्तम, दान दियैं बहु-पुन्य कमावै ।
दानकौं देत है भाव समेत है, सो जगमैं जनस्यौ कहलावै २६

गीता ।

निज सत्रु जो घरमाहिं आवै, मान ताकौं कीजियै ।
अति ऊंच आसन मधुर वानी, बोलिकैं जस लीजियै ॥
भगवान सुगुन-निधान मुनिवर, देखि क्यौं नहिं हरखियैं ।
पड़गाहि लीजै दान दीजै, भगति वरखा वरखियै ॥२७॥

कुंडलिया ।

दान देत है साधकौं, नित प्रति प्रीति लगाय ।
जा दिन मुनि आवैं नहीं, दुख मानै अधिकाय ॥
दुख मानै अधिकाय, पुत्र मृतुतैं अति भारी ।
अहो कर्म दुर्भाग्य, बात तैं कहा विचारी ।
विफल आज दिन गयौ, भयौ नहिं धर्महेत है ।
चित उदार तजि लोभ, साधकौं दान देत है ॥ २८ ॥

सवैया इकतीसा।

साधनकौं दान देय सो तौ फल-पुंज लेय
ताकौं लखि अभिलाखै सो भी फल पावै है।
चंदकांत मनि देखौ सुधा झरै चंद देखि,
भावना ही फलै जो कै नीकै मन भावै है॥
धन होतैं साध पाय दान देत जो न मूढ़,
धरमी कहावै आप मायाकौं बढ़ावै है।
बिजली कपट परलोक सुख-गिरि फोड़ै
जापैं दान बनि आवै मोहि सो सुहावै है ॥ २९॥

अडिल्ल (२१ मात्रा)।

ग्रास अर्ध चौथाई नित प्रति दीजियै।
जथा सकति ज्यौं आपन भोजन कीजियै॥
आवत है जम भील न ढील लगाइयै।
मनवांछित धन साध समा कब पाइयै॥ ३०॥

दोहा।

मिथ्याती पसु दानरुचि, भोग भूमि उपजंत।
कल्पवृच्छ दस सुख लहै, क्यौं न लेत नर संत॥३१॥

कवित्त (३१ मात्रा)।

जैसैं खान निधान पाय तजि, और ठौर खोदै अग्यान।
तैसैं घरमैं दैन जोग सब, नैननि देखै मुनि गुन खान॥
दानबुद्धि जाकैं नहिं उपजै, तासौं महा मूढ़ को आन।
पुन्य जोगतैं द्रव्य कमायौ, सो न लगायौ उत्तम थान॥३२॥
ज्यौं नर रतन गमाय जलधिमैं, ढूढ़ै भागौं पावै कोय।
त्यौं चिरकाल भमत भवसागर, कठिन मनुष भौ प्रापति सोय

दैननि जोग सँजोग दरवकौ, दान देय नहिं मूरख जोय।
चढ़ै सछिद्र जिहाज रतन लै, सागर पार कौन विधि होय ३३

चौपाई।

जो धनवान करै नहिं दान, इह भौ जस पर भौ सुख खान।
ता नरकौ साहव है और, सेवक भेजौ रच्छा-ठौर ॥ ३४॥

सवैया तेईसा।

संजममैं तन-भोग लखै पन, इंद्रनसौं रन जीतवौ चाहै।
ध्यान विषै मन चाह रहै वन, कोप नहीं छन सांत दसा है॥
पूजा विषै मन पोख दुखी जन, दान विषैं धनकौं निरवाहै।
धर्म लगै लछमी अपनी वह, आन लहै धन औरनका है।३५।
पुन्य घटै विघटै लछमी घर, दान दियैं न घटै धन भाई।
सोच निवारहु कूप निहारहु, काढ़ततैं जल वाढ़त जाई॥
पात्रकौं दान निरंतर ठान, हियैं सरधान महासुखदाई।
खाय गयौ वह खोय गयौ नर, लेय गयौ जिह और खिलाई३६

कवित्त (३१ मात्रा)।

खान पान पट भौन गौनमैं, लोभ अकीरतवान वखान।
पूजामाहिं नाहिं जल फल सुभ, दीजै नीरस दानविधान॥
इह परलोक थोक सुख चूरै, महालोभ पूरै दुखदान।
लोभी होइ लोभ तजि भाई, देय हाथ ले साथ निदान॥३७॥

सवैया तेईसा।

लच्छि भई न भई घरमैं, नरमैं उपगार महा मन ढीलौ।
जन्म भयौ न भयौ तिनकौ, जिनकौ चित नाहिं दया रस गीलौ
संखकी भांति मुए जगमैं, जिनकौ कोऊ नाम सुनैं नहि कीलौ।
दोष नहीं पर नाउ न लैं जन, लेत हि होत अहारकौ हीलौ ३८

रोडकी।

स्वान पेट निज भरै, भूप हू पेट भरै है।
कहा बड़ाई भई, खाय दुरगंध करै है॥
पात्रदान नित देइ, लेइ नर-भौ-फल तेई।
अंत रहै कछु नाहिं, नाम तिनकौ जग लेई॥ ३९॥

कवित्त (३१ मात्रा)।

इंद फनिंद नरिंदन स्वामी, गामी सिवमारगके साध।
लोक अलोक सकल परकासत, निरमल रतनत्रै आराध॥
तिनकी थिरता होत असनतैं, दै भोजन करि भगति अगाध।
यह गृहि-धर्म कौन नहिं चाहै, एक दान बिन सबै उपाध ४०

अडिल्ल।

धरा धरामैं द्रव्य, पैंड़ इक ना टलै।
परिजन मरघट थाप, आप घरकौं चलै॥
भली विचारी लकड़ी, जो साथैं जलै।
आगैं दीरघ राह, धरम कीनौं फलै॥ ४१॥
जस सौभाग्य सरूप, सूर सुख कुल भला।
जाति लाभ सुभ नाम, विभौ पंडित कला॥
सरब संपदा पात्र,-दानतैं पाइयै।
जतन करौ किन जीव, बहुत क्या गाइयै॥ ४२॥

सवैया तेईसा।

मौन करौं सुत नारि वरौं, धन गाढ़ि धरौं कठिनी महिं खैहौं।
काम घने इतने करने, अब दान सदा मनवंछित दैहौं॥
लोभ मलीन प्रवीन लखै निज, जानहुंगा जब ही कर लैहौं।
सोचत सोचत आय गई थिति, तौ न कहै अबकैं मरि जैहौं४३

सूमकौ जीवन है जगमैं कहा, आप न खाय खवाय न जानैं।
दर्वके बंधनमाहिं बंध्यौ दृढ, दानकी बात सुनैं नहिं कानैं॥
तातैं बढ़ौ गुन कागमैं देखियै, जात बुलायकैं भोजन ठानैं।
लोभ बुरौ सब औगुनमैं इक, ताहि तजै तिसकौं हम मानैं ४४
दीनकौं दीजियै होय दया मन, मीतकौं दीजियै प्रीति बढ़ावै।
सेवक दीजियै काम करै बहु, साहब दीजियै आदर पावै॥
सत्रुकौं दीजियै वैर रहै नहिं, भाटकौं दीजियै कीरति गावै।
साधकौं दीजियै मोखके कारन, 'हाथ दियौ न अकारथ जावै'।

अडिल्ल।

दाता पुरुषनि पास, नास ह्वै जात है।
रहौं सूर घर माहिं, सुहाग बिलात है॥
विद्या पंडित धाम, सौति दुख को सहै।
लछी कृपनकौं पाय, महा साता गहै॥ ४६॥

कवित्त (३१ मात्रा)।

उत्तम पात्र साध सिवसाधक, मध्यम पात्र सरावग सार।
जघन पात्र समकिती अविरती, बिन समकित कुपात्र ब्रत-धार
समकित विरत-रहित अपात्र हैं, पांच भेद भाखे निरधार।
उत्तम मध्यम जघन भेदसौं, एई पंद्रै पात्र विचार॥४७॥
उत्तम मध्यम जघन पात्रतैं, तीनौं भोगभूमिसुख होय।
लहै कुभोग कुपात्र दानतैं, दान अपात्र दियैं दुख होय॥
बीज सु खेत डारि फल खइयै, ऊसर डारि बीज मति खोय।
तातैं मन वच काय प्रीतिसौं, पात्रदान दीजौ सब कोय॥४८॥

१ शूरं त्यजामि वैधव्यादुदारं लज्जया पुनः।
सापत्न्यात्पण्डितमपि तस्मात्कृपणमाश्रये॥

सास्त्र अभै आहार ओषधी, चारौं दान बड़े संसार।
निहचैं सुरग मुकतिके दाता, दाता भुगता देखि निहार॥
गो गज राज वाजि दासी रथ, कनक भूमि तिल मंदिर नारि।
दसौं कुदान पापके कारन, देत लेत सो नरक मझार ४९
जो दीजै चैत्याले कारन, भूमि आदि बहु वस्तु अपार।
तामैं श्रीजिनविंब विराजैं, चमर छत्र सिंहासन सार॥
पूजा करैं पढ़ैं जिनवानी, चारौं संघ मिलैं निरधार।
बहुत काललौं वढ़ै जैनमत, धरम मूल पर-भौ-सुखकार।५०।
दान बखान किया हमनैं यह, कृपन दुःख सबकौं सुखदाय।
पाय चमेली अलिगन गुंजै, काग न जानैं गुन समुदाय॥
चंद किरनितैं कुमुदनि विकसै, पाथर कौन भांति हरखाय।
भान तेज दसदिसि उजियारौ, एक उलू दुख नाहिं उपाय५१
रतनत्रै आभरन विराजैं, वीरनंदि गुरु गुनसमुदाय।
तिनके चरन कमल जुग सुमिरत, भयौ प्रभावग्यानअधिकाय।
तब श्रीपद्मनंदिनैं कीनैं, दान प्रकास काव्य सुखदाय।
पद्मनंदिपद वंदि बनाई, दानबावनी द्यानतराय॥५२॥

इति दानबावनी।

चारसौ छह जीवसमास।

दोहा।

वंदौं नेमि जिनंद पद, सब जीवन सुखदाय।
वालब्रह्मचारी भए, पसुगनबंध छुड़ाय ॥ १ ॥
जीवसमास अनेक विध, भाखे गोमटसार।
नेमिचंद गुरु वंदिकैं, कहूं एक अधिकार ॥ २ ॥

चौपाई।

पृथ्वीकाय दुभेद बखान, कोमल माटी कठिन पखान।
पानी पावक पौंन विचार, नित्य इतर साधारन धार ॥३॥
सातौं सूच्छम सातौं थूल, इनकै चौदै भेद कबूल।
कहीं प्रतेककाय दो जात, परतिष्ठत अप्रतिष्ठत भ्रात ॥४॥

दोहा।

दूब वेलि छोटा विरख, बड़ा विरख अरु कंद।
पंच भेद परतेकके, लखत नाहिं मतिमंद ॥ ५ ॥
जब इनमाहिं निगोद हैं, तब परतिष्ठत जान।
जब निगोद नहिं पाइए, अपरतिष्ठ तब मान ॥ ६ ॥
जाति दसौं परतेककी, वे चौदह चौवीस।
परज अपरज अलब्धसौं, भेद बहत्तरि दीस ॥ ७ ॥
वे ते चौ इंद्री त्रिविध, परज अपरज अलब्ध।
विकलत्रैकै भेद नव, हिंसा करै निपिद्ध ॥ ८ ॥

चौपाई।

करम भूमि तिरजंच विख्यात, गर्भज सनमूर्छन दो जात।
गरभज परज अपरज प्रवीन, अलबध हू सनमूर्छन तीन॥९॥

सैनी पंच असैनी पंच, दसौं भेद जलचर तिरजंच ।
दसौं भेद थलचर पसुकाय, दसौं व्योमचर उड़ें सुभाय १०
करम भूमि तिरजंच मझार, तीस भेद भाखे निरधार ।
भोग भूमि अब सुनौ सुजान, थलचर नभचर दो सरधान ११
परज अपर्जापति दो भेद, चारि भेद जानौं विन खेद ।
उत्तम मधम जघन भूतनै, बारै भेद जिनागम भनैं ॥ १२ ॥

दोहा ।

पंचेद्री तिरजंचके, कहे छियालिस भेद ।
तेरै भेद मनुष्यके, समझौ गरभ उछेद ॥ १३ ॥

चौपाई ।

उत्तम भोगभूमि सुख खान, उत्तम पात्रदानफल जान ।
मध्यम जघन भोग भुव दोय, चौथे कुभोग भू नर जोय १४
पंचम मलेछ खंड मझार, छट्ठे आरज गरभज सार ।
परज अपरज दुवादस जान, अलवधि नर इनमें नहिं मान १५

अडिल्ल ।

नारि जोनि थन नाभि, कांखमैं पाइए ।
नर नारिनकै, मल मूतरमैं गाइए ॥ १६ ॥
मुरदेमैं संमूर्छन, सैनी जीयरा ।
अलवध परजापती, दया धरि हीयरा ॥ १७ ॥

सोरठा ।

नरक पटल उनचास, परज अपरजापत कहे ।
जीवसमास प्रकास, सातौंमैं अट्ठानवै ॥ १८ ॥

चौपाई ।

त्रेसठ पटल सुरगके पाठ, भुवनपती दस व्यंतर आठ ।
जोतिस पांच छियासी भए. परज अपरजापति गति लए १९

दोहा।

नरक माहिं अठानवै, पसु इक सौ तेईस।
नर तेरै सब देवकै, सतक बहत्तरि दीस ॥ २० ॥

अडिल्ल।

परजापत एक सौ, छियासी जानियें।
अपरजास एक सौ, अठ्यासी मानियें ॥
अलबध परजापत्त जीव, चौंतीस हैं।
चव सत पट पर करुना, करैं मुनीस हैं ॥ २१ ॥

दोहा।

नियत एक चेतनमई, भेद सरब व्यौहार।
निहचै अरु व्यौहारका, जाननहारा सार ॥ २२ ॥
सुदया समता आपमैं, यह परदया विचार।
द्यानत सुपरदया करैं, ते विरले संसार ॥ २३ ॥

इति चारसौ-छह-जीवसमास।

दशस्थानचौवीसी ।

छप्पय ।

रिषभदेव रिपदेव, वीर गंभीर धीर धुनि ।
चार वीस जगदीस, ईस तेईस दुगुन गुनि ॥
सुरग-ठाम निज नाम, मात पुर तात वरन तन ।
आव काय सुभ चिन्न, मुकत आसन दस वरनन ॥
जस गाय पुन्य उपजाय वुधि, पाय करौं मंगल अमर ।
सिर नाय नमौं जुग जोर कर, भो जिनिंद भव-ताप-हर॥१॥

ऋषभदेव ।

रिषभदेव रिपिनाथ, वृपभ लच्छन तन सोहै ।
नाभिराय-कुल-कमल, मात मरुदेवी मोहै ॥
चौरासी लख पुव्व आव, सत पंच धनुप तन ।
नगर अजोध्या जनम, कनक वपु वरन हरन मन ॥
सर्वार्थसिद्धतैं गमन पद,-मासन केवल ग्यान वर ।
सिर नाय नमौं जुग जोरि करि, भो जिनिंद भव-ताप-हर॥२॥

अजितनाथ ।

अजित अजित रिपु अजित, हेम तन गज लच्छन भन ।
पिता राय जितसत्रु, अत्र (?) खरगासन आसन ॥
लाख वहत्तरि पुव्व, आव पुर जनम अयोध्या ।
धनुष चारिसै साठि, गाढ़ वच वहु प्रतिवोध्या ॥
तजि विजय थान परधान पद, वसे विजैसैना उदर ।
सिर नाय नमौं० ॥ ३ ॥

संभवनाथ ।

संभव संभव-हरन, पुरी सावंत्ती[1] जानौं ।
मात सुपैना रूप, भूप दिढ़राज प्रवानौं ॥
खरगासन सुख स्वादि, आदि ग्रीवकतैं आए ।
चिह्न तुरंग उतंग, रंग कंचनमै गाए ॥
थिति साठि लाख पूरब भुगति, धनुष चारिसै लखि चतुर ।
सिर नाय नमौं० ॥ ४ ॥

अभिनन्दन ।

अभिनंदन अभिनंद,-कंद सुख भूप स्वयंवर ।
माता सिद्धारथा, कथा सुवरन तन मनहर ॥
तीन सतक पंचास, धनुष तन नगरि विनीता ।
पुव्व लाख पंचास, तास कपि लांछन मीता ॥
खरगासन विजय विमानतैं, करम नास परकास कर ।
सिर नाय नमौं० ॥ ५ ॥

सुमतिनाथ ।

सुमति सुमतिदातार, सार वस वैजयंत मन ।
भूप मेघरथ तात, मात मंगला कनक तन ॥
पुव्व लाख चालीस, ईस तन धनुष तीनसै ।
चक्रवाक लखि चिह्न, खरग आसन सुख विलसै ॥
छहमास अगाऊ गरभतैं, भयौ विनीता सुरन्नगर ।
सिर नाय नमौं० ॥ ६ ॥

पद्मप्रभ ।

पदम पदम भवि भमर, पदम लांछन सुखदाई ।
धरन भूप गुनकूप, सरूप सुसीमा माई ॥

---

1 श्रावस्ती नगरी ।

अंतम ग्रीवक वास, दुसै पंचास चाप तन ।
खरगासन वहु सकत, रकंत तन हरख करन मन ॥
थिति तीस लाख पूरव पुरी, कौसंबी सब जन सुघर ।
सिर नाय नमौं० ॥ ७ ॥

सुपार्श्वनाथ ।

देत सुपास सुपास, पंच ग्रीवकतैं आए ।
सुपरतिष्ठ भूपाल, पृथीसैना मन भाए ॥
नगर बनारस धाम, स्वाम खरगासन राजैं ।
चिन्ह साथिया वीस, लाख पूरव थिति छाजैं ॥
तन हरित वरन दोसै धनुष, सुर ढारैं चौंसठ चमर ।
सिर नाय नमौं० ॥ ८ ॥

चंद्रप्रभ ।

चंदप्रभू प्रभ चंद, चंदपुर चंद चिन्ह गन ।
महासैन विख्यात, मात लछमना स्वेत तन ॥
वैजयंततैं आय, काय खरगासनधारी ।
आव पुव्व दस लाख, भए सबकौं सुखकारी ॥
डेड़सै धनुष तन भविक जन, हंस पाय तुम मानसर ।
सिर नाय नमौं० ॥ ९ ॥

पुष्पदन्त ।

सुबुधि सुबुधि करतार, सार प्रानतके थानी ।
महा भूप सुग्रीव, जीव जयवामा रानी ॥
उज्जल वरन सरीर, धीर खरगासन जानौ ।
काकंदीपुर साख, लाख दो पूरव मानौ ॥

---

१ लाल ।

तन धनुष एक सौ भौ-रहित, सहित चिह्न जलचर मकर।
सिर नाय नमों० ॥ १० ॥

शीतलनाथ।

सीतल सीतल वचन, भद्रपुर आरन स्वर वर।
दिढरथ तात विख्यात, सुनंदा माता अवतर ॥
नवै धनुषकी देह, धीर कंचनमय गायो।
आव पुव्व इक लाख, खरगआसन सुख पायो ॥
श्रीवृच्छ चिह्न केवल प्रगट, भिन्न भिन्न भाख्यो सुपर।
सिर नाय नमों० ॥ ११ ॥

श्रेयांसनाथ।

भज श्रेयांस श्रेयास, स्वर्ग सोलमके वासी।
विसुराज महाराज, मात नंदा परकासी ॥
असी चाप तनमाप, आप गैंडेको लच्छन।
खरगासन भगवान, सिंहपुर कनक वरन तन ॥
चौरासी लाख वरस भुगत, दुख-दावानल-मेघ-झर।
सिर नाय नमों० ॥ १२ ॥

वासुपूज्य।

वासुपूज्य वसुपूज्य, भूप वसु विधिसों पूजो।
दसम लोकतैं आय, रकत सुभ काय न दूजो ॥
सत्तर चाप सरीर, धीर चंपापुर आए।
लंछन महिप मनोग, जोग पद्मासन गाए ॥
थिति लाख बहत्तरि वरसकी, जयावती माता सुमर।
सिर नाय नमों० ॥ १३ ॥

विमलनाथ ।

विमल विमल अवलोक, लोक द्वादस वस स्वामी ।
कंपिल्लापुर आय, काय कंचन जग नामी ॥
कृतवर्मा भूपाल, भाल जयस्यामा माता ।
सूकर चिन्ह निसान, साठि धनु तन अति साता ॥
थिति साठि लाख वरसन सुखी, खरगासन सवतैं जु वर।
सिर नाय नमौं० ॥ १४ ॥

अनंतनाथ ।

सुगुन अनंत अनंत, अंत सुर सोल जिनेस्वर ।
सिंघसैन नृपराय, माय जयस्यामाके घर ॥
कनक वरन परगास, तास पंचास चाप तन ।
आव लाख है तीस, ईसकौ सेही लंछन ॥
खरगासन कौसलपुर जनम, कुसल तहां आठौं पहर।
सिर नाय नमौं० ॥ १५ ॥

धर्मनाथ ।

धर्म धर्म परकास, वास सरवारथसिध भुव ।
भान राज जस ख्यात, मात सुप्रभादेवी हुव ॥
खरगासन निहपाप, चाप चालीस पंच तन ।
आव लाख दस वरस, सरस कंचनमय है तन ॥
लखि वज्र चिन्ह सुभ रतन पुर, पार न पावै सुर निकर ।
सिर नाय नमौं० ॥ १६ ॥

शान्तिनाथ ।

सांति जगत सब सांति, भोगि सरवारथसिधि रिधि ।
कामदेव तन कनक, रतन चौदहौं नवौं निधि ॥

विस्वसैन नृप तात, मात ऐरा मृगलंछन।
हथनापुरमें आय, काय चालीस धनुप तन ॥
थिति लाख वरस आसन पदम, नाम रटैं अघ जाय टर।
सिर नाय नमौं० ॥ १७ ॥

कुंथुनाथ।

कुंथु कुंथु रखवार, सार सरवारथसिधि वस।
हस्तिनागपुर आय, काय चामीकर हर सस ॥
सूरसैन नृप जैन, ऐन स्रीकांता सुभ मन।
पंचानवै हजार, वरस पैंतीस धनुप तन ॥
खरगासन लंछन छाग सुभ, तारे जिन वैराग धर।
सिर नाय नमौं० ॥ १८ ॥

अरनाथ।

अर अरि-करि-हर सिंघ, जयंत विमान जानि जन।
भूप सुदरसन सार, मित्रसैना माता भन ॥
हस्तिनागपुर आय, चाप तन तीस विराजै।
थिति चौरासी सहस, वरस कंचन छवि छाजै ॥
खरगासन लंछन मीन सुभ, वैन जलद सर-भविक भर।
सिर नाय नमौं० ॥ १९ ॥

मल्लिनाथ।

मल्लि करम-रिपु-मल्ल, थान अपराजित जानौं।
मिथिलापुर अवतार, सार घट चिन्ह पिछानौं ॥
कुंभराज महाराज, खरगआसन सरदहियै।
धनुष पचीस सरीर, सहस पचपन थिति लहियै ॥

देवी प्रजावती कनक तन, अमल अचल अविकल अजर
सिर नाय नमौं० ॥ २० ॥

मुनिसुव्रत ।

मुनिसुव्रत व्रत वर्ग, स्वर्ग प्रानतकै थानी ।
भूप सुमित्र पवित्र, मित्र सुभ सोमा रानी ॥
राजगृहीमैं आय, काय कज्जल छवि छाजैं ।
वरस सहस थिति तीस, वीस तन चाप विराजै ॥
लच्छन कछुआ आसन खरग, दीनदयाल दया नजर।
सिर नाय नमौं० ॥ २१ ॥

नमिनाथ ।

नमि नमि सुरनरराज, राज सरवारथसिधि कर ।
विजयराज महाराज, विप्पला रानी उर धर ॥
आव वरस दस सहस, पुरी मिथिला सुखदाई ।
पंद्रै धनुष सरीर, खरगआसन लौं लाई ॥
तन कनक वरन लच्छन कमल,ग्यान भान हर भ्रम तिमर
सिर नाय नमौं० ॥ २२ ॥

नेमिनाथ ।

नेमि धरम-रथ-नेमि, जयंत विमान वास किय ।
समुदविजै महाराज, सिवादेवी जानौ जिय ॥
नगर द्वारिका नाम, स्याम तन जन-मन-हारी ।
आव वरस इक सहस, चाप दस रजमति छाँरी ॥
खरगासन आसन मोखकौं, संख चिन्ह हरिवंस-नर ।
सिर नाय नमौं० ॥ २३ ॥

पार्श्वनाथ।

पास पास अघ नास, वास प्रानत करि आए।
अस्वसैन अवदात, मात वामा मन भाए॥
नगर बनारसि थान, जान फनि लच्छन नामी।
आव एक सौ बरस, खरग आसन सिवगामी॥
तन हरित वरन नव कर धरन, वज्र प्रगट संवर सिखर।
सिर नाय नमौं० ॥ २४ ॥

वर्धमान।

वर्धमान जस वर्ध, थान अच्युत विमान गति।
नगर कुंडपुर धार, सार सिद्धारथ भूपति॥
रानी प्रियकारनी, बनी कंचन छवि काया।
आव बहत्तर बरस, जोग खरगासन ध्याया॥
तन सात हाथ मृग नाथपति, तुमतैं अबलौं धरम जर।
सिर नाय नमौं जुग जोरि कर, ० ॥ २५ ॥

समुच्चय चौबीस तीर्थंकर।

रिषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पदम सम।
जिन सुपास प्रभु चंद, सुविधि सीतल श्रेयांस नम॥
वासपूज्यजी विमल, अनंत धरम पंदरमा।
सांति कुंथु अर मल्ल, सु मुनिसोव्रित वीसमा॥
नमि नेमि पास वीरेस पद, अष्ट सिद्धि नौ रिद्धि धर।
सिर नाय नमौं० ॥ २६ ॥

पांच कुमारतीर्थंकर।

वासुपूज्य सुरपूज्य, मल्ल विधिमल्लजयंकर।
नेमि देह जस नेम, पास भौ-पास-छयंकर॥

---

१ दो पुस्तकोंमें 'ब्राह्मी' पाठ है।

महावीर महावीर, धीर पर-पीर-निवारन ।
बड़े पुरुष संसार, सार संपति सुखकारन ॥
ए पंच कुमरपदई सुमर, कठिन सील वालक उमर ।
सिर नाय नमौं० ॥ २७ ॥

कलपवृच्छ कलपतैं, चिंततैं चिंतामनि मन ।
पारस हू परसतैं, करैं हित एक जनम जन ॥
भगत अकल्प अचिंत, अपरस तिहारी नामी ।
भौ भौ सब सुख देहि, कौन उपमा है स्वामी ॥
हौं निपट सिथिलताके विषैं, चपल चित्त निसदिन फिकर।
सिर नाय नमौं० ॥ २८ ॥

महापुरान प्रवाँन, जान आठौं विध वरनन ।
वासठ ठान वखान, जान दो लच्छन आसन ॥
होय कोय संदेह, नेह करि तहां निहारौ ।
सुद्ध छंद सो सुद्ध, फेरिकै कवित समारौ ॥
हौं अलपवुद्धि वुद्धनविषैं, एक वात लीनी पकर ।
सिर नाय नमौं० ॥ २९ ॥

जै जै मल ब्रह्मचरिज, अटल वल सकल वनाए ।
एक एक जिन स्वाम, नाम दस दस गुन गाए ॥
सुनत सुनत चित चुनत, धुनत दुख-संतत प्रानी ।
द्यानतराय उपाय, गाय जिन पाय कहानी ॥
गद जनम जरा मृतु नहिं भगत, भगति एक ओषध विगर।
सिर नाय नमौं जुग जोरि कर, भो जिनंद भवतापहर ३०

इति दशस्थानचौवीसी ।

ब्यौहार-पचीसी ।

अरहंतस्तुति-सवैया इकतीसा ।

सरवग्यपदधारी तीनलोकअधिकारी,
क्रोध लोभ परिहारी ऐसौ महाराज है ।
सबकौं समान गिना राग दोष भाव विना,
पास नहिं तिना सक्र सौकौ सिरताज है ॥
ताहीकौ बखान्यौ धर्म सोई सांचौ सोई पर्म,
औरकौ कह्यौ अधर्म झूठकौ समाज है ।
सिवपुर बाटके बटाउनिकौं संबल है,
सुखकौ दिवैया महाकालमाहिं नाज है ॥ १ ॥

दयाधर्मस्वरूप ।

साध और स्रावक सकलव्रत जातैं पलै,
गलै जास विना सुख संपतिकी जननी ।
धर्मतरुमूल पाप धूल पुंज महा पौन,
विद्या उपजावनकौं बड़ी एक गननी ॥
उच्च मोख भौनकी नसैनी इच्छपद दैनी,
जैनी प्रान-दया करौ दोषनिकी हननी ।
अदयाकौ नाम दसौं दिसामाहिं सुंन गिना,
दया पुंन विना एक बात हू न बननी ॥ २ ॥
दान दियैं कहा सिद्धि ध्यान कियैं कहा रिद्धि,
पाठ पढ़ैं कहा वृद्धि जीवनकौं जोरिकैं ।

---

१ बटोही-मुसाफिर । २ कलेवा-पाथेय । ३ दुर्भिक्षके समयमें । ४ अ-नाज-अन्न.

कविता वखान करी लोगनिमें रीझ परी,
तपमाहिं बुद्धि धरी चंचलता छोरिकैं ॥
एक विना सबै हेय, ऐसी दया क्यौं न लेय,
छहौं धर्ममाहिं ध्येय पाप डोरि तोरिकैं ।
कोमलता हियेकी सहेली आप ही अकेली,
स्वर्गकी नवेली लिधि करैं दुख चोरिकैं ॥ ३ ॥

महालोभदशा ।

पाय दो अटपटात जात हू थकत जात,
कटि हू पिरात गात वात व्रात घनी है ।
छाती छवि छीज गई पीठ हू सकुच भई,
हाथ हलैं चलैं नई जरा पौन घनी है ॥
नैन गह्यौ रूप औंर आंखि लाज तजी ठौंर,
खाल दांत सुनैं कौंन आन गली अनी है ।
काल असवारीपै कुस्वारी मृत बालनकी, (?)
डूबै जहां बांस तहां पोरी किन गनी है ॥ ४ ॥

दानस्वरूप ।

अजस विहार करैं वारिधि हू जाय परैं,
आपदा प्रसंग हरैं विघ्न (?) एक हू कहां ।
क्रोधकी न जौंन होय लोभकी न पौंन होय,
नरककौ न गौंन होय कौंन कहै दुख तहां ॥
पापकौ विनास होय भोगभूमिवास होय,
स्वर्गमें निवास होय शत्रु को रहै जहां ।
साधनकै दानतैं निधान-पुंज ब्योस देत,
या समान दूसरौ न मोटौ गुन है इहां ॥ ५ ॥

सज्जनता ।

दानकौं विसन जापै ग्यानमैं रिस न कांप,
खानकौं न तिसना पै मिसना सरलता ।
सोमता सुभाव लियें जोमकी न बात हियें,
मोमरीति लई गई मानकी गरलता ॥
भोगनसौं विरमात जोगनसौं निजरात,
लोगनकी सुनत बात दोपसैं न लरता ।
रोस रीति भाननकौं तोप प्रीति ठाननकौं,
मोखफल खाननकौं वई है वर लता ॥ ६ ॥

शोकनिवारण ।

पीतम मरेकौं सोच करै कहा जीव पोच,
तजे तैं अंनते भव सो कछू सुरत है ।
एक आवै एक जाय ममतासौं बिललाइ,
रोज मरे देखै सुनै नैक ना झुरत है ॥
पूतसौं अधिक प्रीत वह ठानै विपरीत,
यह तौ महा अनीत जोग क्यौं जुरत है ।
मरनौ है सूझै नाहिं मोहकी गहलमाहिं,
काल है अवैया स्वास नौवति घुरत है ॥ ७ ॥

धनतृष्णानिवारण ।

एकनकैं सैकड़े हजार लाख कोटि दर्व,
रोज आवै रोज जाहि ताहि ना खबर है ।
एकैं हाट हाट माहिं वाट वाट विललाहिं,
कौड़ी कन पावैं नाहिं नैक ना सबर है ॥

---

1 मिस–छल ।

सुभासुभ परतच्छ चच्छसौं विलोकत है,
पाप घन जोरि धन भानकौं अवर है।
धन परजन तन सबसौं निराला आप,
सुच्छ लखै दच्छ कर्म नासकौं जवर है ॥ ८ ॥

ममतानिवारण ।

भोगक कियेतैं पापकर्मकौ संजोग भूरि,
संजम धरेतैं पुन्य कर्मकौ निवास है।
धनकै बढ़ेतैं मोह भावनकी वढ़वार,
आसकै निरोधसेती बोधकौ प्रकास है ॥
परगह भार गहैं आरंभ अपार होय,
संग-निरवार करैं दयाकौ विलास है।
द्यानत कुटुंब माहिं ममता छूटै है नाहिं,
एकरूप भए सम सुखता अभ्यास है ॥ ९ ॥

आशा ।

केई विषै भोग पाय त्यागैं मन वच काय,
ह्वैकैं मुनिराय पाय वंदनीक भए हैं।
केई विषैमैं निवास चित्तमैं रहैं उदास,
ग्यानकौ प्रकास भववास पर गए हैं ॥
किनहीकैं विषै नाहिं वांछा हू न उरमाहिं,
चाह दाह हीन आप-लीन परनए हैं।
हमैं विषै योग उपयोग सुद्ध दोनौं नाहिं,
वृथा आस-पास परे दोषनिसौं छए हैं ॥ १० ॥
देस देस धाए गढ़ बांके भूपती रिझाय,
धल हू खुदाए गिरि ताए पारा ना मस्यौ ।

सागरकौं तरि धाए मंत्र हू मसान ध्याए,
पर घर भोजन ससंक काक ज्यौं करखौं ॥
बड़े नाम बड़े ठाम कुल अभिराम धाम,
तजिकैं पराए काम करे काम ना सख्यौं ।
तिसना निगोड़ीनें न छोड़ी बात भौंड़ी कोऊ,
मति हू कनौड़ी कर कौड़ी धन ना सख्यौं ॥ ११ ॥

हर्षशोकत्यागके छह दृष्टान्त ।

आंब फल छाहिं खरबूजे फल छाहिं नाहिं,
नींनमाहिं फल नाहिं छाहिं ही सहाय है ।
आक फूल छाहिं नाहिं कंटक थूहर माहिं,
कांटे हैं बंबूर राह आए दुखदाय हैं ॥
पुन्य पाप उतकिष्ट मध्यम जघन्य भेद,
जैसा उदै तैसा धन दारा सुत पाय हैं ।
हरख सोक कीयैं कहा बीज बोय वृच्छ लहा,
दावा तजि साखी होय आव बीती जाय है ॥१२॥

वाद विवादमें मत पड़ो ।

साधरमी जन माहिं जो चरचा बनै नाहिं,
भेपधारी सिप्यनिमैं कहैं जे अवन हैं ।
सेतपटधारी जे पुजारी लौंके ढूंढ़िये हैं,
बांभन वैरागी औ संन्यासी जे कठन हैं ॥
मीमांसक आदि जात जिनसौं मिलै न बात,
राग दोप कियैं घात ग्यानकै पतन हैं ।
समता सरूप धरौ ऐंच खैंचमैं न परौ,
ग्रंथ नाय करौ हरौ दोप भरे जन हैं ॥ १३ ॥

शीतकालपरीषह।

कंज मुरझात कपिहूकौ मद गल जात,
दहत वृच्छनि पात रंक रोम खरे हैं।
सीतकी विथा अपार पानी जमै वारवार,
पौन लगै तीर धार लोक दुख भरे हैं॥
तप-भौनमाहिं साधि ध्यान ऊपमा अराधि,
नदी तट चौपथमैं कर्मनिसौं अरे हैं।
जोगी वड़े धीर वीर पावैं भव नीर तीर,
देहु मोखलच्छि हियैं भद्र भाव धरे हैं॥ १४॥

ग्रीष्मकालपरीषह।

ग्रीषमकौ तेज सूर गरमी परत भूर,
सूकत है जलपूर धूर पांवकौं धरे।
धूप है अगनिरूप लू फुलिंगकौ सरूप,
दिनमैं दुखी अनूप रात नींद कों करे॥
भूमिकी तपतिसौं दसौं दिसा तपै है सैल-
सिलापर निराधार खरे साध भै हरे।
ग्यान जोत उर धार तमकी हरनहार,
वंदत हौं पाय जातैं मेरे भव भय टरे॥ १५॥

वर्षाकालपरीषह।

स्याम घटा अति घोर वरसै करत सोर,
रहै नाहिं एक ओर मूसलसी धार हैं।
मानौं जल पियौ छार सोई वम्यौ है अपार,
नदी दौरै टूटि टूटि खरते पहार हैं॥
कारी निस वीजली गरज और झंझा पौन,
तामैं साध वृच्छ तलैं ठाड़े निरधार हैं।

आप सुद्ध ध्यावत हैं कर्मकौं वहावत हैं,
तेई मोख पावत हैं नमौं सुखकार हैं ॥ १६ ॥

ज्ञानकी कार्यकारिता।

सीत ताप पावसकौं सहैं धीर वीर होय,
भेदग्यान भए विना आपसौं विकल है।
तीन कर्म सेती भिन्न सदा चेतना ही चिन्न,
ताकी न खवरि कैसें जगसौं निकल है ॥
वरसौं लौं धूल धोय न्यारिया सुखी न होय,
धातकी पिछान विना दाम एक न लहै।
आप ग्यान जानत है साम्य भाव आनत हैं,
घोर तप ठानत है कर्मसौं विकल है ॥ १७ ॥

हितोपदेश।

भ्रम्यौ तू अनंती वार सम्यक न लह्यौ सार,
तातैं देव धर्म गुरू तीनौं ठहराय रे।
लाग रह्यौ धन धाम इनसौं है कहा काम,
जपै क्यौं न जिन नाम अंत सो सहाय रे ॥
क्रोध है कठिन रोग छिमा ओषधी मनोग,
ताकौ भयौ है सँजोग संगत उपाय रे।
पूरव कमायौ सो तौ इहां आय खायौ अव,
करि मन लाय जो पै आगैं जाय खाय रे ॥ १८ ॥
वाग चलनैंकौं त्यार ढीलौ तीरथ मझार,
झूठ कहनकौं हुस्यार सांच ना सुहाय रे।
देखत तमासा रोज दर्सनकौ नाहिं खोज,
विकथा सुनन चोज सास्त्रकौं रिसाय रे ॥

खान पानकौं खुस्याल व्रत सुनैं विकराल,
स्रावककी कुल चाल भूलौं वहु भाय रे।
पूरव कमायौं सो तौं इहां आय खायौ अव,
करि मन लाय जो पै आगैं जाय खाय रे॥ १९॥

उद्यमी पुरुष। अनंगशेखर छन्द।

मिथ्यात जात घातकैं सुधा सुभाव रातकैं,
अवृत्तकौं निपातकैं सुवृत्तकी दसा वरी।
कुराग दोस नासकैं कुआसकौं निरासकैं,
प्रसांतता प्रकासकैं उदास रीत आदरी॥
सरीर प्रीत छारकैं अनेक रिद्धि डारकैं,
सुसिद्धिकौं निहारकैं स्वरिद्धि सिद्धि लौं धरी।
अकर्म कर्म ह्वै गया सुघ्यान घ्यानमैं भया,
महा स्वरूप देखकैं सुवंदना हमौं करी॥ २०॥
छुधा त्रिषा न भैं करै न सीत तापसौं डरै,
न राग दोषकौं धरै न काम भोग भोगना।
त्रिभेद आप धारकैं त्रिकर्मसौं निवारकैं,
त्रिजोगसौं विचारकैं त्रिरोगका मिटावना॥
अराधना अराधकैं कपायकौं विराधकैं,
सु सामभाव साधकैं समाधका लगावना।
बहाय पाप पुंजकौं जलाय कर्म कुंजकौं,
सुमोख माहिं जाहिंगे इहां न फेर आवना॥ २१॥

भगवानसे यथार्थ विनती। सवैया—इकतीसा।

तारक स्वरूप तेरौ जानत है मन मेरौ,
ध्यान माहिं घेरौ घिरै नाहिं को उपाय है।

तात मात भ्रात नात सात-धात-जात गात,
हमसौं निराले सदा चित्त क्यौं लुभाय है ॥
क्रोध मान माया लोभ पांचौं इंद्रीविषै सोभ,
महा दुखदाय जीव काहे ललचाय है।
न्याव तौ तिहारे हाथ द्यानत त्रिलोकनाथ,
नावत हौं माथ करौ जो तुमैं सुहाय है ॥ २२ ॥

शिक्षा।

चाह रहै भोगनिसौं लागत है लोगनिसौं,
वेऊ तौ फकीर तोहि कैसैं सुख करैंगे।
जाकी छांहिं छिन माहिं चाह कछू रहै नाहिं,
ताहि क्यौं न सेवै तेरे सब काम सरैंगे ॥
ग्रीषम तपत सैल नीचैं बहु जलकुंड,
धाराधर आए बिन कौन ताप हरैंगे।
गंगा जमना अनेक नदी क्यौं न चली जाहु,
चातककौं स्वाति बूंद महाराज झरैंगे ॥ २३ ॥
आए तजि कौन धाम चलिवौ है कौन ठाम,
करते हौ कौन काम कछू हू विचार है।
पूरब कमाय लाय इहां आय खाय गए,
आगैंकौ खरच कहा बांध्यौ निरधार है ॥
बिना लियैं दाम एक कोस गामकौं न जात,
उतराई दियैं बिना कौन भयौ पार है।
आजकाल बिकराल काल सिंह आवत है,
मैं कह्यौ पुकार धर्म धार जो तू यार (?) है ॥ २४ ॥

धर्ममहिमा।

धर्म नास करै ताकौं धर्म भी विनास करै,
धर्म रच्छा करै ताकी धर्म रच्छा करै है।
दुखी करैं दुख जाय सुखी करैं सुख पाय,
नर्क दुःखतैं निकाल मोख माहिं धरै है॥
धर्म करैं जय होय पाप करैं छय होय,
भासत हैं सब लोय ताहि क्यौं विसरै है।
आगिमैं जलत नाहिं पानीमैं गलत नाहिं,
जगमैं जैवंत सदा धर्म धरैं तरै है॥ २५॥
चाहत धन संतान नई देह मिलै आन,
डरै कालसेती सदा तनहीमैं रहै है।
वांछा अरु भय दोऊ भाव भखौ दीसत है,
नाना भांति सुख देखि साता नहिं लहै है॥
पाप देखि रोवै पाप खोवै नाहिं महामूढ़,
स्वान-वान डारि कोऊ सिंह-वान गहै है।
द्यानत व्यौहारकी पचीसी पढ़ौ संत सदा,
ग्यान बुद्धि थिर होय आन नाहिं वहै है॥ २६॥

इति व्यवहारपचीसी।

१ आदत।

आरतीदशक।

इह विध मंगल, आरती कीजै।
पँच परम पद भजि, सुख लीजै ॥ इह० ॥ टेक ॥
प्रथम आरती, श्रीजिनराजा।
भव-जल-पार उतार जिहाजा ॥ इह० ॥ १ ॥
दूजी आरति, सिद्धन केरी।
सुमिरन करत मिटै भवफेरी ॥ इह० ॥ २ ॥
तीजी आरति सूरि मुनिंदा।
जनम मरन दुख दूरि करिंदा ॥ इह० ॥ ३ ॥
चौथी आरति श्रीउवझाया।
दर्सन देखत पाप पलाया ॥ इह० ॥ ४ ॥
पंचमि आरति साध तुमारी।
कुमतिविनासन सिव अधिकारी ॥ इह० ॥ ५ ॥
छट्ठी ग्यारह प्रतिमाधारी।
स्रावक वंदौं आनँदकारी ॥ इह० ॥ ६ ॥
सातमी आरती श्रीजिनवानी।
द्यानत सुरग मुकतिकी दानी ॥ इह० ॥ ७ ॥

जिनराजकी आरती।

आरती श्रीजिनराज तुमारी।
करम दलन संतन-हितकारी। टेक ॥
सुर नर असुर करत तुम सेवा।
तुम हि देव देवनिकै देवा ॥ आरती० ॥ १ ॥

पंच महाव्रत दुद्धर धारैं।
राग दोष परनाम विडारैं ॥ आरती० ॥ २ ॥
भवभयभीत सरन जे आए।
ते परमारथ पंथ लगाए ॥ आरती० ॥ ३ ॥
जो तुम नाम जपै मन माहीं।
जनम मरन भय ताकौं नाहीं ॥ आरती० ॥ ४ ॥
समोसरन संपूरन सोभा।
जीते क्रोध मान छल लोभा ॥ आरती० ॥ ५ ॥
तुम गुन हम कैसे करि गावैं।
गनधर कहत पार नहिं पावैं ॥ आरती० ॥ ६ ॥
करुनासागर करुना कीजै।
द्यानत सेवककौं सुख दीजै ॥ आरती० ॥ ७ ॥

मुनिराज-आरती।

आरती कीजै श्रीमुनिराजकी।
अधम उधारन आतम काजकी ॥ टेक ॥
जा लच्छीके सब अभिलाखी।
सो साधनि कर्दम वत नाखी ॥ आरती० ॥ १ ॥
सब जग जीति लियौ जिन नारी।
सो साधनि नागिन वत छारी ॥ आरती० ॥ २ ॥
विषयन सब जग बौरे[1] कीनैं।
ते साधनि विष वत तजि दीनैं ॥ आरती० ॥ ३ ॥
भूकौ राज चहत सब प्रानी।
जीरन तृन वत त्यागत ध्यानी ॥ आरती० ॥ ४ ॥

---

१ बावरे (पागल)।

सत्रु मित्र दुख सुख सम मानैं ।
लाभ अलाभ बराबर जानैं ॥ आरती० ॥ ५ ॥
छहौं काय पीहर[1] व्रत धारैं ।
सबकौं आप समान निहारैं ॥ आरती० ॥ ६ ॥
यह आरती पढ़ै जो गावै ।
द्यानत मनवांछित फल पावै ॥ आरती० ॥ ७ ॥

नेमिनाथ तीर्थंकरकी आरती ।

किह विध आरति करौं प्रभु तेरी ।
अगम अकथ जस बुधि नहिं मेरी ॥ टेक० ॥
समुदविजै सुत रजमति छांरी ।
यौं कहि थुति नहिं होय तुम्हारी ॥ किह० ॥ १ ॥
कोट खंभ वेदी छवि सारी ।
समोसरन थुति तुमतैं न्यारी ॥ किह० ॥ २ ॥
चारग्यानजुत तिनके स्वामी ।
सेवकके प्रभु यह वच खामी ॥ किह० ॥ ३ ॥
सुनकैं वचन भविक सिव जाहीं ।
सो पुदगलमैं तुम गुन नाहीं ॥ किह० ॥ ४ ॥
आतम जोति समान बताऊं ।
रवि ससि दीपक मूढ़ कहाऊं ॥ किह० ॥ ५ ॥
नमत त्रिजगपति सोभा उनकी ।
तुम सोभा तुममैं निज गुनकी ॥ किह० ॥ ६ ॥
मानसिंघ महाराजा गावै ।
तुम महिमा तुम ही बनि आवै ॥ किह० ॥ ७ ॥

---

१ पीड़ानाशक (अहिंसाव्रत) ।

निश्चय आरती ।

इह विध आरति करौं प्रभु तेरी ।
अमल अबाधित निज गुन केरी ॥ टेक ॥
अचल अखंड अतुल अविनासी ।
लोकालोक सकल परगासी ॥ इह० ॥ १ ॥
ग्यान दरस सुख बल गुन धारी ।
परमातम अविकल अविकारी ॥ इह० ॥ २ ॥
क्रोध आदि रागादि न तेरे ।
जनम जरा मृतु कर्म न नेरे ॥ इह० ॥ ३ ॥
अवपु अबंध करन-सुखनासी ।
अभय अनाकुल सिवपदवासी ॥ इह० ॥ ४ ॥
रूप न रेख न भेख न कोई ।
चिनमूरति मूरति नहिं होई ॥ इह० ॥ ५ ॥
अलख अनादि अनंत अरोगी ।
सिद्ध विसुद्ध सु आतमभोगी ॥ इह० ॥ ६ ॥
गुन अनंत किम वचन बतावै ।
दीपचंद भवि भावन भावै ॥ इह० ॥ ७ ॥

आत्माकी आरती ।

करौं आरती आतमदेवा ।
गुन परजाय अनंत अभेवा ॥ टेक ॥
जामैं सब जग वह जगमाहीं ।
वसत जगतमैं जग सम नाहीं ॥ करौं० ॥ १ ॥
ब्रह्मा विस्नु महेसुर ध्यावैं ।
साधु सकल जिहके गुन गावैं ॥ करौं० ॥ २ ॥

बिन जानैं जिय चिर भव डोलैं।
जिहि जानैं छिन सिव-पट खोलैं ॥ करौं० ॥ ३ ॥
व्रती अव्रती विध व्यौंहारा।
सो तिहु काल करमतैं न्यारा ॥ करौं० ॥ ४ ॥
गुरु सिख उभैं वचन करि कहिए।
वचनातीत दसा तिस लहिए ॥ करौं ॥ ५ ॥
सुपर भेदकौ देखि उछेदा।
आप आपमैं आप निवेदा ॥ करौं० ॥ ६ ॥
सो परमातम पद सुखदाता।
होहि बिहारीदास विख्याता ॥ करौं० ॥ ७ ॥

गौरी राग, आरती।

कहा लै पूजा भगत बढ़ावैं।
जोग वस्तु कहांतैं लै आवैं ॥ टेक ॥
छीरउदधि जलमेरु न्हुलावैं।
सो गिरि नीर कहां हम पावें ॥ कहा० ॥ १ ॥
समोसरनविधि सरव बनावैं।
सो न बनै मुख क्या दिखलावैं ॥ कहा० ॥ २ ॥
जल फल स्वर्ग लोकतैं ल्यावैं।
सो हमपैं नहिं कहा चढ़ावें ॥ कहा० ॥ ३ ॥
नाचैं गावैं वीन बजावैं।
सो न सकति किम पुन्य उपावैं ॥ कहा० ॥ ४ ॥
द्वादसांग स्रुत जो थुत गावैं।
सो हम बुद्धि न कहा बतावैं ॥ कहा० ॥ ५ ॥
चार ग्यान धर गनधर गावैं।
सो थिरता नहिं चपल कहावैं ॥ कहा० ॥ ६ ॥

द्यानत प्रीतिसहित सिर नावैं।
जनम जनम यह भक्ति कमावैं॥ कहा०॥ ७॥

वर्धमानकी आरती, राग गौरी०।

करौं आरती वर्धमानकी।
पावापुर निरवान थानकी॥ टेक॥
राग विना सब जग-जन तारे।
दोष विना सब कर्म विडारे॥ करौं०॥ १॥
सील धुरंधर सिव-तिय-भोगी।
मनवचकायन कहियै जोगी॥ करौं०॥ २॥
रत्नत्रयनिधि परिगह डारी।
ग्यान-सुधा-भोजन व्रत-धारी॥ करौं०॥ ३॥
लोकअलोकव्यापि निज माहीं।
सुखमय इंद्री सुख दुख नाहीं॥ करौं०॥ ४॥
पंचकल्यानकपूज्य विरागी।
विमल दिगंबर अंबरत्यागी॥ करौं०॥ ५॥
गुनमनिभूषन भूषन स्वामी।
जगत उदास जगंतरजामी॥ करौं०॥ ६॥
कहै कहां लौं तुम सब जानौ।
द्यानतकी अभिलाख प्रमानौ॥ करौं०॥ ७॥

ऋषभनाथकी आरती।

कहा ले आरती भगत करैं जी।
तुम लायक नहिं हाथ परैं जी॥ टेक॥
छीर जलधिकौ नीर चढ़ायौ।
कहा भयौ मैं भी जल लायौ॥ कहा०॥ १॥

उज्जल मुक्ताफलसौं पूजौ ।
हम पै तंदुल और न दूजौ ॥ कहां० ॥ २ ॥
कलपवृच्छ-फलफूल तुम्हारै ।
सेवक क्या ले भगति विथारै ॥ कहा० ॥ ३ ॥
तनसौं चंदन अगर न लागै ।
कौन सुगंध धरैं तुम आगै ॥ कहा० ॥ ४ ॥
नख सम कोटि चंद रवि नाहीं ।
दीपक जोति कहो किह माहीं ॥ कहा० ॥ ५ ॥
ग्यानसुधाभोजन ब्रतधारी ।
नेवज कहा करैं संसारी ॥ कहा० ॥ ६ ॥
द्यानत सकत समान चढ़ावै ।
कृपा तिहारीतैं सुख पावै ॥ कहा० ॥ ७ ॥

परमात्माकी आरती ।

मंगल आरती आतमराम ।
तन मंदिर मन उत्तम ठाम ॥ टेक ॥
सम रस जल चंदन आनंद ।
तंदुल तत्त्व-सरूप अमंद ॥ मं० ॥ १ ॥
समैसार फूलनकी माल ।
अनुभौ सुख नेवज भरि थाल ॥ मं० ॥ २ ॥
दीपक ग्यान ध्यानकी धूप ।
निर्मल भाव महा फलरूप ॥ मं० ॥ ३ ॥
सुगुन भविक जन इक रंग लीन ।
निहचै नौधा भगति प्रवीन ॥ मं० ॥ ४ ॥
धुनि उत्साह सु अनहद ग्यान ।
परमसमाधिनिरत परधान ॥ मं० ॥ ५ ॥

बाहज आतम भाव वहाव ।
अंतर है परमातम ध्याव ॥ मं० ॥ ६ ॥
साहव सेवक भेद मिटाय ।
द्यानत एकमेक हो जाय ॥ मंगल० ॥ ७ ॥

मंगल आरती ।

मंगल आरती कीजै भोर, विघनहरन सुख करन किरोर ॥१
अर्हत सिद्ध सूरि उवझाय, साध नाम जपियै सुखदाय ।मंगल०
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वासुपूज्य चंपापुर धार ।
पावापुर महावीर मुनीस, गिरिकैलास नमौं आदीस ॥मंगल०
सिखर समेद जिनेसुर वीस, वंदौं सिद्धभूमि निसदीस ।
प्रतिमा स्वर्ग मर्त्य पाताल, पूजौं कृत्य अकृत्य त्रिकाल॥मंगल०
पंचकल्यानक काल नमाम, परमौदारक तन गुनधाम ।
केवलग्यानआतमाराम, यह षटविध मंगलअभिराम॥मंगल०
मंगल तीर्थंकर चौवीस, मंगल सीमंधर जिन वीस ।
मंगल श्रीजिनवचन रसाल, मंगल रत्नत्रय गुनमाल ॥मंगल०
मंगल दसलच्छन जिनधर्म, मंगल सोलैकारन पर्म ।
मंगल चारै भावन सार, मंगल चार संघ परकार ॥मंगल०॥७॥
मंगल पूजा श्रीजिनराज, मंगल सास्त्र पढैं हितकाज ।
मंगल सतसंगति समुदाय, मंगल सामायिक मन लाय॥मंगल०
मंगल दान सील तप भाव, मंगल मुक्तवधूकौ चाव ।
द्यानत मंगलआठौं जाम, मंगल महाभक्तिजिनस्वाम॥मंगल०

इति आरतीदशक ।

दशबोल पचीसी।

मंगलाचरण, छप्पय।

एक सरूप अभेद, दोय विध विधि-निषेधमैं।
रतनत्रै करि तीन, चार विध दर्वादिकमैं॥
पंचम गति सुचि ठौर, आप षटकारक राजै।
सातौं भैकरि भिन्न, आठ गुनसहित विराजै॥
नव नो-कषाय दस बंध हरि, तास रूप हिरदै धरौं।
पूजौं ध्याऔं गाऔं सदा, जिह तिह विध भव जल तरौं॥

एक बोलके चौवीस भेद।

बंदौं वानी एक, एक ध्यानी अघनासक।
एक दरव आकास, एक केवल सब भासत॥
परमानू इक चलै, एक कालानू परसै,
एक समै निरअंस, एक तीर्थंकर दरसै॥
इक गुरु निरग्रंथ जिहाज सम, एक दया-मारग भला।
इक समै जीव रिजुगति करै, एक आप अनुभौ कला॥२॥
एक ग्रान चौदहैं बंध, इक तेरम जिनवर।
एक मेर मरजाद, एक मिथ्यात घातकर॥
जघन देह इक समै, राजु चौदै अनु जावै।
धर्म अधर्म विमान, एक वसि सिव पद पावै॥
सुत ग्यान करम विन इक समै, जीव तत्त्व नौं परिनमै।
इक नभ प्रदेस बहु देसकौं, ठौर देत जिनवचनमै॥३॥

दो बोलके चौवीस भेद।

नमौं दुविध जिनराय, जीव निरजीव बखानैं।
सिद्ध और संसार भेद, त्रस थावर जानैं॥

कही प्रतेक निगोद, नित्त ईतर साधारन ।
सूच्छम थूल वखान, पंचइंद्री मन विन मन ॥
आगम अध्यातम कथन सुन, सुपर भेदकौं परनए ।
थिरकंलप त्यागि जिन कलप धरि, केवलग्यान दरस भए
वंदौं वंदसरूप, साध स्रावग सुखदायक ।
नित्त अनित्त प्रवान, गुनी गुन सबके ग्यायक ॥
पुन्य पाप परकासि, तास फल सुख दुख भाखैं ।
रूप अरूप निहार, दोय परिगह नहिं राखैं ॥
दो भेद ग्यान वरनन करैं, दरव भावसौं पूजियै ।
निहचै व्यौहार सँभार मन, दोय दयामय हूजियैं ॥५॥

तीन बोलके चौबीस भेद ।

तीन साध आराध, वचन मन काय लायकर ।
तीन पात्र सरधान, तीन विध आतम मन धर ॥
तीन लोककौं जान, काल तीनौं अवधारौ ।
संख असंख अनंत, दरव गुन परज विचारौ ॥
संसै-विमोह-विभ्रमरहित, ध्यान ध्येय ध्याता मुनौ ।
करतार करम किरिया समझि, ग्यान ग्येय ग्याता सुनौ ६
सामायिक तिहुँ वार, तीन सब सल्ल नसाऊं ।
तीनौं दरसन मोह, जनम मृत जरा मिटाऊं ॥
तजि तीनौं अग्यान, तीन समकित मन आनौं ।
तीन समै अनहार, देवगुरुधर्म प्रवानौं ॥
लखि भाव पारनामी त्रिविध, तीन करमसौं भिन्न है ।
तजि राग दोष अरु मोहकौं, तीन चेतना चिन्न है ॥७

१ स्थविरकल्प ।

चार बोलके चौबीस भेद ।

चतुरानन भगवान, दान विध च्यारि बतावैं ।
च्यारि अराधन धारि, च्यारि अरथनिकों पावैं ॥
च्यारि संघ आराधि, च्यारि विध बेद बखानैं ।
नमैं च्यारि विध देव, च्यारि निच्छेप जानैं ॥
बहु घाति करम चकचूर करि, जरि संग्या चारौं गईं ।
चहु ध्यान बखान विधानसौं, च्यारि भावना मन भईं ॥
सहित अनंत चतुष्ट, च्यारि चौकरी विनासी ।
च्यारि कषाय जलाय, च्यारि विकथा नहिं भासी ॥
ग्यान च्यारि परकार, च्यारि दरसन परगासक ।
पुग्गलके गुन च्यारि, नारि चहु सील विनासक ॥
सहि च्यारि जात उपसर्गकों, च्यारि भेद मन वस किया ।
तिन बंध च्यारि परकार हरि, चहु गतिकों पानी दिया ॥

पांच बोलके चौबीस भेद ।

नमौं पंच पद सार, पंच इंद्री वस कीजै ।
पंच लबधिकों पाय, पंच स्वाध्याय पढ़ीजै ॥
चारित पंच विचारि, पंच परमाद विसारौं ।
अंतराय विध पांच, पांच मिथ्यात निवारौं ॥
पांचौं सरीर ममता तजौं, नींद पांच नहिं कीजियें ।
धरि पंच महाव्रत भावसौं, पंच समिति चित दीजियें ॥
सिद्ध पंच ही भाव, पांच पैताले जानौं ।
पंचाचार विचार, पंच सिवकारन मानौं ॥

पंच जोतिषी देव, पंच गोले[1] साधारन ।
पढ़ पंचास्तिकाय[2], मूलके भाव पंच गन ॥
भव पंच परावरतनि निकलि, पंच नरक दुखसौं डरौ ।
बहु भेद पंच थावर समझि, पंच कल्यानकपद धरौ ११

छह बोलके चौबीस भेद ।

नमौं छमतमैं सार, दर्व पट्ट भेद प्रकासक ।
बाहज तप पट भेद, भाव तप पट दुखनासक ॥
पट अनायतन तजौ, हानि पट वृद्धि अगुरु लघु ।
पुग्गलकै पट भेद, क्रिया पट गेह माहिं अघ ॥
षट नरक जाय नारी कुमति, पट विध समकित वरनयौ।
पूजादि कर्म पट्ट पापहर, पडावसिकसौं सुख भयौ ॥१२॥
पट मंगल बंदामि, छहौं परजापति जानौं ।
षट सैना चक्रेस, संघनन पट परवानौं ॥
संसथान पट जान, छविधि परजै नैं धारौ ।
छहौं काल परवान, काय पट दया विचारौ ॥
जिय मरन बेर पट दिसि चलै, पट लेस्या जो धारि है।
पट अवधि ग्यानके भेद पट, विध निहचै व्यौहार है१३

सात बोलके चौबीस भेद ।

सात नरक भयकार, व्यसन सातौं तज भाई ।
सात खेत धन खरचि, प्रकृति सातौं दुखदाई ॥
सक्र सात विध सैन, रतन सब सात कृष्ण घर ।
सात अचेतन रतन, सात चेतन चक्रेसर ॥

---

१ स्कंध-अंडर-आवास-पुलवि-देह गोलाकार पांच साधारण हैं। २ पांच अस्तिकाय ।

लखि सात धातमय तन असुचि, मौन सात विध धारकैं।
दाता गुन सातौं सात विध, अंतरायकौं टारकैं ॥१४॥
सात भंग सरधान, जान तन जोग सात हैं।
समुद्घात हैं सात, सात संजम विख्यात हैं ॥
तीन जोग विध सात, सात तन मैल बखानैं।
सात स्वरनके भेद, सीलव्रत सातौं जानैं ॥
निज नाम सात सातौं उदधि, यहां सात ही खेत हैं।
प्रभु नाम ईति सातौं टलैं, सात तत्त्व सिवहेत हैं ॥१५॥

आठ बोलके चौवीस भेद।

आठ मूलगुन पाल, आठ मद तजौ सयानैं।
सम्यक आठौं अंग, ग्यानके आठ बखानैं ॥
आंठ ठौर न निगोद, आठ गुन सुरगन छाजैं।
आठ जुगलके देव, आठ विध व्यंतर राजैं ॥
पूजियैं आठ विध देव जिन, आठौं अंग नवाइयैं।
देहरे आठ मंगल दरव, आठ पहर लौं लाइयैं ॥ १६॥
आठौं प्रवचन धार, जोगके आठ अंग हैं।
आठ रिद्धि दातार, फरसके आठ भंग हैं ॥
आठ समै दंडादि, आठ उपमान बखानैं।
आठ भेद सत आदि, आठ लौकांतिक जानैं ॥
अंगुल उत्तमभुव रोम वसु, आठ प्रातिहारज भले।
सब आठ ध्यान-पावकविषैं, काठ करम आठौं जले ॥१७॥

नव बोलके चौवीस भेद।

नवौं पदारथ धार, दरसनावरनी नौ विधि।
नौ नै नैगम आदि, चक्रधारीकैं नौ निधि ॥

---

१ पृथ्वी, जल, तेज, वायु, केवलीका शरीर, तथा आहारक ये छह और देव नारकीके शरीर, इन आठ स्थानोंमें निगोदजीव नहीं होते हैं।

नौ नारायन जानि, मानि नौ हैं बलभद्र ।
प्रतिनारायण नवौं, नवौं नारद हरि हितकर ॥
नौ नै गुन परजै दरवकी, आव बंध नौं वार हैं ।
नौ गुनथानकके भेद नौं, समकित नौं परकार हैं ॥१८॥
छायक गुन नौं नमौं, सील नौं वारि संभारौं ।
प्रायश्चित नौ भेद, सांत रस नौंमैं धारौं ॥
नौ ग्रैवक उर धार, नौ नउत्तरे भरे बुध ।
जोनि-भेद नौं जान, मान मंगल नौं पद सुध ॥
नौ गुनथानक नव कोरि मुनि, नौं गुरु अच्छर अंक सव ।
नौ दानतनी विध जानकैं, नौधा भगति विना गरव १९

दश बोलके चौवीस भेद ।

पूजौं दस अवतार, जनम दस गुन जिन साहव ।
घाति घाति दस सुगुन, दसौं समकित भाखे सब ॥
इंद्र आदि दस भेद, भवनवासी दस जानैं ।
पुग्गल दस परजाय, सूत्र दस भेद वखानैं ॥
दस दोपरहित आलोचना, काम कुचेष्टा दस तजैं ।
भुव आदि जीवके भेद दस, वैयावृत दस विध भजैं २०
दसौं दिसा मन रोकि, प्रान दस भिन्न चेतना ।
दरवतने दस भेद, संग दस साथ लेत ना ॥
दस विध हैं दिगपाल, निरजरा दस विध जानी ।
दसौं विसेख सुभाव, अंक दस सिवपदवानी ॥
दस विध कुदान फल नरक दुख, दस सामानिक गुन दरव
सुभ समोसरनमैं दस धुजा, धरमध्यान दस विध सरव ॥

षट् नय ।

असत कथन उपचार, जीवकौं जन धन जानौ ।
असत विना उपचार, काय आतमकौं मानौ ॥

सांच कथन उपचार, हंसकौं राग विचारौ।
सांच विना उपचार, ग्यान चेतनकौं धारौ॥
निहचैं असुद्ध नर भेदनैं, रागसरूपी आतमा।
आदेय सुद्ध निहचैं समझि, ग्यानरूप परमातमा॥२२॥

व्यवहार और निश्चय नयसे द्रव्य कर्म, भाव कर्म, शुद्ध भावका कर्ता कौन है?

दरव करमकौं करै, जीव व्यौंहार वतावै।
दरव करम पुद्गलसरूप, निहचै नै गावै॥
भाव करम करतार, धार व्यौंहार सु पुद्गल।
भाव करम आतमारूप, निहचै नैकौं वल॥
दोनौं असुद्ध जिय मोहमैं, पुग्गल खंध लगावना।
अनुभवौ सुद्ध पुद्गल अनू, जीव ग्यानमय भावना २३

शिक्षारूप श्रद्धान।

न रचौ विषयनि माहिं, करौ परचौ इनमैं नर।
खरचौ दरव सुखेत, सदा अरचौ श्रीजिनवर॥
चरचौ वारंवार, अतरचौ (?) मन सुखदायक।
पुद्गल धर्म अधर्म, व्योम जम जड़ जी ग्यायक॥
सव अकृत अनादि अजर अमर, गुन परजाय दरवमई।
प्रतिभासैं केवल आरसी, माहिं मोहि सरधा भई॥२४॥

कविकृत लघुता।

वृषभसैन गुनसैन, गोतम नरोत्तम गनधर।
सकल पाय सिर नाय, पुन्य उपजाय वुद्धि वर॥
कहे कवित हितकार, सार जहां हीन अधिक अति।
छमा वरौ सुख करौ, दोप मति धरौ विपुलमति॥
यह शब्द ब्रह्म वारिधि लहर, गनत पार को पाय है।
द्यानत ग्यानी आतम मगन, यह पुद्गल-परजाय है २५

इति दश-बोल-पचीसी।

जिनगुणमालसप्तमी ।

अशोकपुष्पमंजरी (एक गुरु एक लघुके क्रमसे ३१ वर्ण)

मान थंभ देख औ सरोवरी भरी बिसेख,
खातका गभीर पेख पुष्प वारि राज हीं ।
रूपकोट नाटसाल भाग दो वनै विसाल,
वेदिका धुजा सताल माल आदि छाजहीं ॥
हेमकोट कल्पवृच्छ बाग सोहने प्रतच्छ,
रत्नपुंज धाम आवली मनोग गाजहीं ।
वज्र कोट चार पौल बार कोट सोल भीत,
वीच वेदिका त्रिपीठ संभुजी विराजहीं ॥ १ ॥

जन्मके दश गुण । सवैया इकतीसा ।

बल तौ अतुल वीर स्रसकौं न होय नीर,
हितमित वानी सव प्रानीकौं सुहावनी ।
आदि संसथान है गभीर संहनन धीर,
रूपकी सोभा अनूप सबकौं रिझावनी ॥
सहस आठ लच्छन सरीर लोहू है खीर,
देहकी सुगंध और गंधकौं लजावनी ।
मलकौ न लेस लीयैं उपजें दसौं जिनेस,
मेर करैं न्हौन सो सुरेस भक्त भावनी ॥ २ ॥

घातिया कर्मोंके नाशसे दश गुण ।

जोजन सौ सौ सुभिच्छ व्योम चलैं अंतरिच्छ,
चारौं मुख चारौं दिस सव विद्यापत हैं ।
जीवकौं न वध होय उपसर्ग नाहीं कोय,
कौलाहार लेत नाहिं ग्यानसुधा-रत हैं ॥

निर्मल सरूप माहिं तनकी न परै छाहिं,
नख केस बढ़ैं नाहिं आंख ना लगत हैं।
घातिया करम नासि दसौं गुन परगासि,
जिनकी भगत कीयें पाप-भै भगत हैं॥ ३॥

देवोंकृत चौदह गुन।

अरध मागधी भाषा सबै रितु फल फूल,
सिंह स्याल प्रीति रीति आरसी अवनि हैं।
पौंन वुहारै मेघ जल कन सुगंध झारै,
पाय तलैं कंज धारै आनंद सवनि हैं॥
निर्मल गगन और दसौं दिसा उज्जल हैं,
फलैं खेत सोभैं भूमि धर्म चक्र मनि हैं।
आठौं मंगलीक सार सुर करैं जैजैकार,
चौदैं अतिसय तेरैं देवकृत धनि हैं॥ ४॥

आठ प्रातिहार्य।

फूल सनमुख वरखत मानौं वंदनिकौं,
देव दुंदुभीके बाजैं भाजैं पापभार जी।
सिंघासन तीनसेती तीनलोकसाहब हौं,
तीन छत्र कहैं रतनत्रय दातारजी॥
जानौं अच्छर सुपेद चौंसठि चमर ढुरैं,
औ कहा असोक वृच्छ हू असोक धारजी।
भामंडल आरसी है वानी सुधा-धारसी है,
नमौं आठ प्रातिहारजके सिरदारजी॥ ५॥

अनंतचतुष्टय।

लोकालोक दर्व गुन परजाव तिहूं काल,
टांकी ज्यौं उकेर राखै ग्यानमैं प्रकास है।

चंद भान असंख्याततैं अनंतगुनी जोति,
सोऊ नाहिं लगै ऐसैं दर्सनकी रास है ॥
निरावाध सास्वतौ अनाकुल अनंत सुख,
अंस हू न लोकमाहिं इंद्री सुखभास है ।
सत इंद्रसेती जोर वलकौ नहीं है ओर,
अनंतचतुष्टै नाथ वंदौं अघ नास है ॥ ६ ॥

छयालीस गुणवर्णन ।

दसौं जनमत सार दसौं घात घात कर,
चौदै सुरकृत प्रातिहारज आठौं गहे ।
अनंतचतुष्टै कहिवतकौं छियालीस हैं,
गुन हैं अनंत तेरे ग्यानी ग्यानमैं लहे ॥
तारनकौं मान मेघ धारके प्रवांन और,
संभूरमनि-लहर तातैं अधिके कहे ।
कौन भांति भाखे जाहिं थिरता औ वुद्धि नाहिं,
द्यानत सेवकने न्यारे न्यारे सरदहे ॥ ७ ॥

इति जिनगुनमालसप्तमी ।

समाधिमरण।

जोगीरासा।

गौतम स्वामी वंदौं नामी, मरनसमाधि भला है।
मैं कब पाऊं निसदिन ध्याऊं, गाऊं वचन कला है॥
देवधरम गुरु प्रीति महा दिढ़, सात विसन नहिं जानै।
तजि बाईस अभच्छ संयमी, बारह व्रत नित ठानै॥ १॥
चक्की उखरी चूल बुहारी, पानी त्रस न विराधै।
बनिज करै परद्रव्य हरै नहिं, कर्म छहौं इम साधै॥
पूजा सास्त्र गुरूकी सेवा, संजम तप बहु दानी।
पर उपगारी अल्प अहारी, सामायिकविधग्यानी॥ २॥
जाप जपै तिहुं जोग धरै थिर, तनकी ममता टारै।
अंतसमै वैराग सँभारै, ध्यानसमाधि विचारै॥
आग लगै अरु नाव जु डूबै, धर्मविघन जब आवै।
चार प्रकार अहार त्यागिकै, मंत्रसु मनमैं ध्यावै॥ ३॥
रोग असाध्य जरा बहु दीखै, कारन और निहारै।
बात बड़ी है जो बनि आवै, भार भवनकौ डारै॥
जो न बनै तौ घरमैं रहिकैं, सबसौं होइ निराला।
मात पिता सुत तियकौं सौंपै, निज परिगह अहि काला॥४॥
कुछ चैत्यालै कुछ स्रावक जन, कुछ दुखिया धन देई।
छिमा छिमा सबसौं करि आछै, मनकी सल्य हनेई॥
सत्रुनिसौं मिलि निज कर जोरै, मैं बहु करी बुराई।
तुमसे पीतमकौं दुख दीनैं, ते सब बकसौ भाई॥ ५॥
धन धरती जो मुखतैं मांगै, सो सब दे संतोखै।
छहौं कायके प्रानी ऊपर, करुना भाव विसेखै॥

नीचैं घर वैठै इक जागैं, कुछ भोजन कुछ पै लै ।
दूधाधारी क्रमक्रम तजिकैं, छाछि अहार पहं लै (?) ॥६॥
छाछि त्यागिकैं पानी राखैं, पानी तजि संथारा ।
भूमिमाहिं थिर आसन मांडै, साधरमी ढिग प्यारा ॥
जब तुम जानौं यह न जपै है, तब जिनबानी कहियौं ।
यौं कहि मौन लियौ सन्यासी, पंच परमपद गहियौं ॥७॥
च्यारौं आराधन मन ध्यावैं, बारैं भावन भावैं ।
दस लच्छन मुनिधर्म विचारैं, रत्नत्रय मन लावैं ॥
पैंतिस सोलै षट पन चारौं, दो इक वरन विचारैं ।
काया तेरी दुखकी ढेरी, ग्यानमई तू सारैं ॥ ८ ॥
अजर अमर निज गुनगन पूरौ, परमानंद सुभावैं ।
आनँदकंद चिदानँद साहब, तीन जगतपति ध्यावैं ॥
छुधा तृषादिक होंहिं परीषह, सहैं भाव सम राखैं ।
अतीचार पांचौं सब त्यागैं, ग्यानसुधारस चाखैं ॥ ९ ॥
हाड़ चाम रहि सूकि जाय सब, धरमलीन तन त्यागैं ।
अदभुत पुंन उपाय सुरगमैं, सेज उठै ज्यौं जागैं ॥
तहाँसौं आवै सिवपद पावै, विलसै सुक्ख अनंता ।
द्यानत यह गति होहि हमारी, जैनधर्म जैवंता ॥ १० ॥

इति समाधिमरण ।

आलोचनापाठ।

प्रथम नमौं अरहंतानं, दुतिय नमौं सिद्धानं जी।
त्रितिय नमौं आइरियानं, नमौं उवज्झायानं जी॥
पंच नमौं लोए सव्व, साहूनं गुन गाऊं जी।
चारौं मंगल अरहंत, सिद्ध साधु धर्म ध्याऊं जी ॥ १ ॥
चारौं उत्तम लोकमें, जिन सिद्ध साधु सुधर्म जी।
चारौं सरन गहौं जिनवर, सिद्ध साध धर्म पर्म जी॥
वृषभ चंद्रप्रभ सांतजिनं, वर्धमान मन वंदौं जी।
हुई होहिंगी चौवीसी, सब नमि पाप निकंदौं जी ॥ २ ॥
श्रीजिनवचन सुहांवने, स्याद्वाद अविरुद्धं जी।
तीन भवनमें दीपक वंदौं, त्रिकरण सुद्धं जी ॥
प्रतिमा श्रीभगवंतकी, स्वर्ग मर्त्य पातालं जी।
कृत्य अकृत्य दुभेदसौं, वंदन करौं त्रिकालं जी ॥ ३ ॥
पूरव पाप जु मैं कियौ, कृत कारन अनुमोदं जी।
मन वचं काय त्रिभेदसौं, सब मिथ्या होदं (?) जी॥
आगैं पाप जु होयगौ, उनंचास विध नासौं जी।
वर्तमान अघ छै करौ, तुम आगैं परकासौं जी ॥ ४ ॥
सर्व जीवसौं मित्रता, गुनी देखि हरखाऊं जी।
दीनं दया सठसौं समता, चारौं भावन भाऊं जी।
प्रभु पूजूं जुग भेदसौं, गुरुपदपंकज सेऊं जी।
आगम अभ्यासौं सदा, रतनत्रै नित वेऊं जी ॥ ५ ॥
अच्छर मात्र अरथ अनमिल, भूलि कह्यौ सु खिमाऊं जी।
प्रात दोपहर सांझकौं, अर्ध रात्रमें भाऊं जी॥
द्यानत दीनदयालनौं, भौ भौ भगति सु दीजे जी।
अंत समाधिमरन करौं, राग विरोध हरीजै जी ॥ ६ ॥

इति आलोचनापाठ।

एकीभावस्तोत्रभाषा।

दोहा।

वंदौं श्रीजिनराजपद, रिद्धिसिद्धिदातार।
विघनहरन मंगलकरन, दारिद दलन अपार॥

चौपाई।

मिथ्याभावकरमबँध भयौ, दुरनिवार भव भव दुख दयौ।
सो सब नास भगतितैं होय, रहैं न प्रभु दुखकारन कोय॥१॥
ग्यान जोत अघतमछयकार, अघट प्रकासि कहैं गनधार।
मो मन-भवन वसैं तुव नाम, तहां न भरम तिमिरकौ काम२
पूजा गदगद वच मन काय, करौं हर्ष-जल वदन न्हुवाय।
विषयव्याल चिरकाल अपार, भाजैं तज तन वँवैंइ द्वार ३
प्रथम कनकमय भू सब करौ, भविक भाग सुरतैं अवतरौ।
चित-गृह ध्यान-द्वार तुम आय, करौ हेम तन चित्र न काय४
बिन स्वारथ सब जग सुखदाय, जानौं सर्व दर्व परजाय।
भगति रची चित-सज्या मोहि, तुम बस दुख-गन कैसे होहि५
भम्यौ जगत वनमैं चिरकाल, उपज्यौ खेद अगनि विकराल।
तुम नय-सुधा-सीत-वौवरी, पुन्य उदै लहि सब तप हरी॥६॥
गमन प्रभाव कमल ह्वैं देव, परमल श्रीजुत कनक अभेव।
मो मन परसैं तुम सब काय, क्यौं न मिलै मुझ सब सुख आय।
विधि वन तजि सिवसुख घर कियौ, मदन-मानछिनमैं हर लियौ
पीत-पात्र वच सुधा पिवंत, विषै रोगरिपु-त्रास हनंत॥८॥
तुम ढिग मानसथंभ जु रहै, रतनरासि बहु सोभा लहै।
देखत मान रोग छय होय, जद्यपि है पाहनमय सोय ९

१ श्रीवादिराजसूरिके संस्कृत एकीभावस्तोत्रका भाषानुवाद। २ वमीठा-सर्पका विल। ३ बावड़ी–वापी।

तुम मूरति-गिरि सपरस वायं, छगें कर्मरजपुंज पलाय।
ध्यान तोहि उर कमल मझार, होइ परम पद जग निस्तार१०
भव भव पायौं दुःख अपार, यादि करत लागे असि-धार।
तुम सब जान प्रधान कृपाल, करी भगति अब होहु दयाल११
पापी स्वान अंतकी वार, लह्यौं स्वर्ग-सुख सुनि नौंकार।
जपौं अमल मन तुम भगवान, अचरज कहा वरौं सिवथान॥
तुम प्रभु सुद्ध ग्यान-दृगवंत, तासी-भगति विना जो संत।
मोह जरे दृढ़ मोख-किवार, खोल सकै न लहै सुख सार॥१३॥
मुकति-पंथ अघ तम वहु भस्त्यौ, गढ़े कलेस विपम विसतस्यौ।
सुखसौं सिवपद पहुंचै कोय?जो तुम वच मन दीप न होय।
कर्म धरा आतम निधि भूरि, दवी कैवी पावें नहिं कूर।
भगति कुदाल खोद लैं संत, विलसैं परमानंद तुरंत॥१५॥
स्यादवाद हिमगिरिसौं चली,तुम पद परसि उदधि सिव रली।
भगति गंगमैं सो मन न्हाय, क्यौं न पाप मल कलुप तजाय १६
परमातम थिरपद सुखमई, मैं सदोप तुम सम बुध ठई।
यदपि असत यह ध्यान तुम्हार, तदपि सुवांछित फलदातार
वचन उदधि सब जग विसतस्यौ,स्याद लहरि मिथ्यामल हस्यौं।
थिर मन द्वादसांगमैं धरै, ग्यान सुधा पी जम-भय हरै १८
भूपन वसन कुसुम असि गहं, सोभा रंचक देव न लहैं।
तुम निपरिग्रह अभै मनोग, कौन काज भूपन असि जोग१९
तुम सोभा नहिं इंद्र जु नयौ, एकाअवतारी सो भयौ।
लोकनाथ भौ-वारिधि पोत,मुकति-कंत इह विध थुति होत॥

१ वायु-हवा। २ कर्मो।

ए थुतिवचन सु पुदगलरूप, नहिं व्यापैं तुम गुन चिद्रूप।
तद्यपि भगति सुधा जो गहै, मनवांछित फल सुरतरु लहै २१
राग दोष बिन परम उदास, चाहरहित अरु सब जग दास।
भुवनतिलक तुम ढिग रिपु नसै, यह प्रभुता कहिं आन न लसै॥
जस गावैं सुरनारि अपार, ग्यानरूप ग्यायक संसार।
द्वादसांग पढ़ि मोह न रहै, थुति करि सुगमपंथ सिव लहै२३
अनँतचतुष्टयरूप निहाल, ध्यावै मन रुचि सहित त्रिकाल।
पुन्यवान सुभ मारग होइ, तीर्थंकर पद विलसै सोइ ॥२४॥
इंद्र सेव करि पार न लहैं, गनधरादि सब गुन नहिं कहैं।
हम मति तनक कियौ कछु एहु, भगतनि सिव सुरतरु सम देहु

दोहा।

सबद काव्य हित तर्कमैं, वादिराज सिरताज।
एकीभाव प्रगट कियौ, द्यानत भगति जहाज॥ २६॥

इति एकीभावस्तोत्र।

स्वयंभूस्तोत्र ।

चौपई ।

राजविषैं जुगलन सुख किया, राज त्याज भवि सिवपद दिया।
स्वयंबोध स्वंभू भगवान, वंदौं आदिनाथ गुनखान ॥१॥
इंद्र छीरसागर जल लाय, मेर न्हुलाए गाय बजाय ।
मदनविनासक सुखकरतार, वंदौं अजित अजितपदधार २
सुकल ध्यान करि करम विनास, घाति अघाति सकल दुखरास
लह्यौ मुकतिपद सुख अविकार, वंदौं संभव भवदुखटार ३
माता पच्छिम रैन मझार, सुपनै सोलैं देखे सार ।
भूप पूछि फल सुन हरखाय, वंदौं अभिनंदन मन लाय ४
सब कुवादवादी सिरदार, जीते स्यादवाद धुनि धार ।
जैनधरमपरकासक स्वाम, सुमतिदेव पद करौं प्रनाम ५
गरभ अगाऊ धनपति आय, करी नगरसोभा अधिकाय ।
बरखे रतन पंदरै मास, नमौं पदमप्रभु सुखकी रास ॥६॥
इंद्र फानिंद्र नरिंद्र त्रिकाल, वानी सुनि सुनि होंहिं खुस्याल।
बारै सभा ग्यानदातार, नमौं सुपारसनाथ निहार ॥७॥
सुगुन छियालिस हैं तुम माहिं, दोष अठारै कोऊ नाहिं ।
मोह महातमनासक दीप, नमौं चंदप्रभु राख समीप ॥८॥
बारै विध तप करम विनास, तेरै भेद चरित परकास ।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, वंदौं पहुपदंत मन आन ९
भवि सुखदाय सुरगतैं आय, दसविध धर्म कह्यौ जिनराय ।
आप समान सबनि सुख देह, वंदौं सीतल धरि मन नेह १०
समता सुधा कोपविषनास, द्वादसांग वानी परकास ।
चारि संघ आनँददातार, नमौं स्त्रिअंस जिनेसुर सार ११
रतनत्रय सिर मुकुट विसाल, सोभै कंठ सुगुनमनिमाल ।
मुकत-नारि-भरता भगवान, वासुपूज्य वंदौं धरि ध्यान १२

परम समाधिसरूप जिनेस, ग्यानी ध्यानी हितउपदेस ।
करम नास सिवसुख विलसंत, वंदौं विमलनाथ भगवंत १३
अंतर वाहर परिगह डार, परम दिगंबर व्रतकौं धार ।
सरव जीव हित राह दिखाय, नमौं अनंत वचन मन काय ।
सात तत्त्व पंचासति काय, अरथ नवौं छ दरव बहु भाय ।
लोक अलोक सकल परकास, वंदौं धर्मनाथ अघनास १५
पंचम चक्रवर्त्ति निधि भोग, कामदेव द्वादसम मनोग ।
सांतिकरन सोलम जिनराय, सांतिनाथ वंदौं हरखाय १६
बहु थुति करैं हरख नहिं होय, निंदें दोष गहें नहिं सोय ।
सीलवान परब्रह्मस्वरूप, वंदौं कुंथुनाथ सिवभूप ॥ १७ ॥
बारै गन पूजैं सुखदाय, थुति वंदना करें अधिकाय ।
जाकी निज थुति कबहु न होय, वंदौं अर जिनवर पद दोय ।
परभौ रतनत्रै अनुराग, इस भौ व्याह समै वैराग ।
वाल ब्रह्म पूरनव्रतधार, वंदौं मल्लिनाथ जितमार ॥ १९ ॥
बिन उपदेस स्वयं वैराग, थुति लौकांत करैं पग लाग ।
'नमः सिद्ध' कहि सब व्रत लेहिं, वंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं २०
स्रावक विद्यावंत निहार, भगतिभावसौं दियौ अहार ।
वरखै रतनरासि ततकाल, वंदौं नमि प्रभु दीनदयाल २१
सब जीवनके वंदी छोर, राग दोष दो बंधन तोर ।
रजमति तजि सिव तियकौं मिले, नेमिनाथ वंदौं सुखनिले ।
दैत्य कियौ उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयौ फनिधार ।
गयौ कमठ सठ मुख करि स्याम, नमौं मेरु सम पारसस्वाम ।
भौसागरतैं जीव अपार, धरमपोतमैं धरे निहार ।
डूबत काढ़े दया विचार, वरधमान वंदौं बहु वार ॥२४॥

दोहा ।

चौवीसौं पदकमलजुग, वंदौं मन वच काय ।
द्यानत पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यौं न सुहाय ॥ २५ ॥

इति स्वयंभूस्तोत्र ।

पार्श्वनाथस्तवन।

भुजङ्गप्रयात।

नरिंदं फनिंदं सुरिंदं अधीसं।
सतिंदं सुपूजं भजं नाइ सीसं॥
मुनिंद्रं गनिंद्रं नमं जोरि हाथं।
नमों देवदेवं सदा पासनाथं॥ १॥
गजेंद्रं मृगेंद्रं गह्यो तू छुडावै।
महा आगतें नागतें तू बचावै॥
महानीरतें जुद्धतें तू जितावै।
महारोगतें बंधतें तू खुलावै॥ २॥
दुखी दुःखहर्ता सुखी सुःखकर्ता।
सदै सेवकोंको महानंदभर्ता॥
हरै जच्छ राच्छस्स भूतं पिसाचं।
विषं डाकिनी विघ्नके भै अवाचं॥ ३॥
दरिद्रीनिकों तैं भले दान दीनें।
अपुत्रीनिकों तैं भले पुत्र कीनें॥
महा संकटोंतें निकालै विधाता।
सबै संपदा सर्वकों देह दाता॥ ४॥
महा चोरको वज्रको भै निवारै।
महा पौनके पुंजतें तू उबारै॥
महा क्रोधकी आगको मेघधारा।
महालोभ सैलेसहीं वज्र भारा॥ ५॥
महा मोह अंधेरको ग्यान भानं।
महा कर्म-कांतारको दौ प्रधानं॥

किये नाग नागी अधोलोकस्वामी ।
हर्यौ मान तैं दैत्यकौं ह्वै अकामी ॥ ६ ॥
तुही कल्पवृच्छं तुही कामधेनं ।
तुही दिव्य चिंतामनिं नास ऐनं ॥
पसू नर्कके दुःखसेती छुड़ावै ।
महा स्वर्गमें मोच्छमें तू बसावै ॥ ७ ॥
करै लोहकौं हेम पाखान नामी ।
रटै नाम सो क्यों न हो मोखगामी ॥
करै सेव ताकी करैं देव सेवा ।
सुनै बैन सो ही लहै ग्यान मेवा ॥ ८ ॥
जपै जाप ताकौं कहा पाप लागैं ।
धरैं ध्यान ताके सबै दोप भागैं ॥
विना तोहि जानैं धरे भौ घनेरे ।
तिहारी कृपातैं सरे काज मेरे ॥ ९ ॥

सोरठा ।

गनधर इंद्र न करि सकैं, तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीत निहारिकैं, कीजै आप समान ॥ १० ॥

इति पार्श्वनाथस्तोत्र ।

तिथिषोड़शी।

दोहा।

बानी एक नमौं सदा, एक दरव आकास।
एक धरम अधरम दरव, पड़िवा सुद्ध प्रकास ॥ १ ॥

चौपई।

दोज दुभेद सिद्ध संसार, संसारी त्रस थावर धार।
सु-पर-दया दोनों मन धरौं, राग दोष तजि समता करौं॥२
तीज त्रिपात्र दान नित भजौं, तीन काल सामायिक सजौं।
वै उतपात ध्रौव्य पद साध, मन वच तन थिर होय समाध॥३
चौथ चार विध ध्यान विचार, चारौं आराधना सँभार।
मैत्री आदि भावना चार, चार बंधसौं भिन्न निहार ॥ ४ ॥
पांचैं पंच लबधि लहि जीव, भज परमेष्ठी पंच सदीव।
पांच भेद स्वाध्याय बखान, पांचौं पैंताले पहचान ॥ ५ ॥
छट छै लेस्याके परनाम, पूजा आदि करौं षट काम।
पुग्गलके जानौं षट भेद, छहौं काल लखिकैं सुख वेद ॥ ६ ॥
सातैं सात नरकतैं डरौं, सात खेत धन जलसौं भरौं।
सातौं नय समझौ गुनवंत, सात तत्त्व सरधा करि संत ॥७॥
आठैं आठ दरसके अंग, ग्यान आठ विध गहौं अभंग।
आठ भेद पूजौ जिनराय, आठ जोग कीजैं मन लाय ॥ ८ ॥
नौमी सील-बाड़ि नौ पाल, प्रायश्चित नौ भेद सँभाल।
नौ छायिक गुन मनमैं राख, नो कषायकी तजि अभिलाख॥
दसमी दस पुग्गल परजाय, दसौं बंध हर चेतनराय।
जनमत दस अतिसै जिनराज, दस विध परिगहसौं क्या काज
ग्यारसि ग्यारै भाव समाज, सब अहमिंदर ग्यारै राज।
ग्यार जोग सुरलोक मझार, ग्यारै अंग पढ़ैं मुनि सार ११

वारसि वारै विध उपजोग, वारै प्रकृति दोपकी रोग।
वारै चक्रवर्ति लखि लेहु, वारै अव्रतकौं तजि देहु ॥ १२॥
तेरसि तेरै स्रावक थान, तेरै भेद मनुज पहचान।
तेरै रागप्रकृति सव निंद, तेरै भाव अजोगि-जिनंद ॥१३॥
चौदस चौदै पूरव जान, चौदै वाहिज अंग वखान।
चौदै अंतर परिगह डार, चौदै जीवसमास विचार ॥ १४॥
मावस सम पंद्रै परमाद, करम भूमि पंदरै अनाद।
पंच सरीर पंदरै रूप, पंदरै प्रकृति हरै मुनिभूप ॥ १५॥
पूरनमासी सोलै ध्यान, सोलै स्वर्ग कहे भगवान।
सोलै कषाय राहु घटाय, सोल कला सम भावनि भाय १६
सव चरचाकी चरचा एक, आतम आतम पर पर टेक।
लाख कोटि ग्रंथनकौ सार, भेद-ग्यान अरु दयाविचार १७

दोहा।

गुनविलास सव तिथि कहीं, है परमारथरूप।
पढ़ै सुनै जो मन धरै, उपजै ग्यान अनूप ॥ १८॥

इति तिथिषोडशी।

स्तुतिबारसी।

दोहा।

तुम देवनिके देव हौ, सुखसागर गुनखान।
मूरति गुन को कहि सकै, करौं कछु थुति गान ॥ १ ॥
फलै कलपतरुबेलि ज्यौं, वंछित सुर नर राज।
चिंतामनि ज्यौं देत है, चिंतित अर्थसमाज ॥ २ ॥
स्वामी तेरी भगतिसौं, भक्त पुन्य उपजाय।
तीन अरथ सुख भोगवै, तीनौं जगके राय ॥ ३ ॥
तेरी थुति जे करत हैं, तिनकी थुति जग होय।
जे तुम पूजैं भावसौं, पूजनीक ते लोय ॥ ४ ॥
नमस्कार तुमकौं करैं, विनयसहित सिर नाय।
वंदनीक ते होत हैं, उत्तम पदकौं पाय ॥ ५ ॥
जे आग्या पालैं प्रभू, तिन आग्या जगमाहिं।
नाम जपैं तिस नामना, जग फैलै जस छाहिं ॥ ६ ॥
सफल नैन मेरे भये, तुम मुख सोभा देख।
जीभ सफल मेरी भई, तुम गुन नाम विसेख ॥ ७ ॥
सफल चित्त मेरौ भयौ, तुम गुन चिंतत देव।
पाय सफल आयें भये, हाथ सफल करि सेव ॥ ८ ॥
सीस सफल मेरौ भयौ, नमौं तुमैं भगवान।
नर-भौ लाहा मैं लहा, चरनकमल सरधान ॥ ९ ॥
गनधर इंद्र न जात हैं, तुम गुनसागर पार।
कौन कथा मेरी तहां, लीजे प्रीत निहार ॥ १० ॥
तातैं वंदौं नाथजी, नमौं सुगुनसमुदाय।
तीर्थंकर पदकौं नमौं, नमौं जगत सुखदाय ॥ ११ ॥
पूजा थुति अरु वंदना, कीनी निज मन आन।
द्यानत करुना भावसौं, कीजे आप समान ॥ १२ ॥

इति स्तुतिबारसी।

यतिभावनाष्टक ।

सवैया इकतीसा ।

जगत उदास आपकौं प्रकास संग नास,
धर सुभ व्रत रास वनवास बसे हैं ।
मोह कर्मकौ प्रभाव संकल्प विकल्प भाव,
सबकौं अभाव करि अंतरकौं धसे हैं ॥
प्रानायाम विध साध ध्यानरीतिकौं अराध,
पौंन मन ग्यान थिर एक रूप लसे हैं ।
परमानंद लीन धीर मेर ज्यौं अचल वीर,
नमौं साध पायनिकौं देखैं दुख नसे हैं ॥ १ ॥
मनकौं निरोध इंद्री सांपकौं जहर सोध,
सासोस्वास पौंन सोऊ थिर भाव करी है ।
सूनी कंदरामैं पैठि वैठि पदमासनसौं,
सिव अभिलाखा अभिलाख सब हरी है ॥
तजि राग दोष व्याध समता चेतन साध,
धीरजसौं अंतर सरूप दिष्टि धरी है ।
ऐसी दसा होयगी हमारी कब भगवान,
सोई पुरुषारथ है सोई धन घरी है ॥ २ ॥
धूलि करि मंडित न मंडित है अंबरसौं,
वैठि पदमासन खड़ासन अटल है ।
तत्त ग्यान सार गहि मौन सांत मुद्रा धारि,
अध खुले नैन दिष्टि नासिका अचल है ॥
बाहर वैरागरूप अंतर निरंजन लौं,
खाजकौं खुजावैं मृग जानकै उपल है ।

---

१ परिग्रह । २ कपड़ा ।

ऐसी दसा होयगी हमारी तब जानहिंगे,
नरभव पाय पायौ सुकृतकौ फल है ॥ ३ ॥
सून्यवास घर वास छिमा नारिसौं अभ्यास,
दसौं दिसा अंबर संतोष महा धन है।
सैल-सिला सेज सार दीप चंद्रमा निहार,
तपका व्यौहार सब मैत्री परिजन है ॥
ग्यान सुधा भोजन है अनुभौ-सरूप सुख,
ऐसी सौंज परसेती कहा परोजन[1] है।
एक दसा लई महाराजकी अवस्था भई,
समता कहा है महा लोभकौ सदन है ॥ ४ ॥
जगमैं चौरासी लाख जोनिकौ फिरनहार,
नर अवतार महा पुन्य उदै पावै है।
उत्तम सुकुल दिढ़ काय आयु पूरनता,
बुद्धि सास्त्र-ग्यान भागसेती बनि आवै है ॥
तिसपै वैराग होय तप तपै कृती सोय,
सोऊ ध्यान सुधापान करै लव लावै है।
कंचन महल पर मनिमै[2] कलस धर,
आतमतै सोई परमातम कहावै है ॥ ५ ॥
ग्रीषम सिखर सीस पावसमैं तरु तलै,
सीत काल चौपथमैं देह नेह हर्यो है।
वज्र परै त्रासनसौं आगके प्रकासनसौं,
प्रानके विनासनसौं ध्यान नाहिं टर्यो है ॥
जप जोग तप धारि भेदग्यानकौं संभारि,
चंचलता चित्त मारिकै समाध बर्यो है।

---

१ प्रयोजन-मतलब। २ मनिमय-रत्नजड़ित।

समरस-धाम अभिराम साध राजत हैं,
ऐसे कब होंहिं हम ऐसौ मन कह्यौ है ॥ ६ ॥
विवहारमाहिं तत्त्व चैनद्वार आवत हैं,
निहचै विसुद्धरूप न्यारौ है उपाधसौं ।
चिदानंद जोतकौ उदोत अंतरंग भयौ,
ताहीमैं मगन सदा भीजै है समाधसौं ॥
सोई धन सोई धाम सोई सोभ सोई काम,
सोई प्रीत सोई सुख सिद्धता अराधसौं ।
ऐसे मुनिराज मम काज करौ दोप हरौ,
निज मुद्रा देहु हम छूटैं आध व्याधसौं ॥ ७ ॥
पाप-अरि-हार चक्र सक्र सिव-सुखकार,
धीरज बढ़ै अपार वंछित दातार जी ।
भागैं भोग कारे नाग प्रगटै महा विराग,
साधभावनाअष्टक पढ़ौ तिहुं वार जी ॥
चिदानंद भावमैं पद्मनंद राजत हैं,
भक्तिवस भव्यनकौ कीनौ उपगारजी ।
भूल चूक सोधि लेहु हमैं मति दोप देहु,
द्यानत या मिससेती लीनौं नाम सार जी ॥ ८ ॥

दोहा ।

द्यानत जिनके नामतैं, पाप धूरि हो दूरि ।
तिन साधनकी भावना, क्यौं न लहै सुख भूरि ॥ ९ ॥

इति यतिभावनाष्टक ।

---

१ यह पद्मनन्दि आचार्यकी पद्मनन्दिपंचविंशतिकाके एक अष्टकका अनुवाद है ।

सज्जनगुणदशक ।

सवैया इकतीसा ।

तरोंकी कलम सिंधु स्याही भूमि कागदपै,
सारदा सहस कर सदा लिखै नाथ जी ।
तुम गुनकौ न पार ग्यानादि अनंत सार,
कर्म घन हान निरावर्ण भान आथ (?) जी ॥
तिनमैं कौ कोई एक गुनहूकौ कोई अंस,
हमैं देहु सज्जन कहावैं संत साथ जी ।
तुम हौ कृपाल प्रतिपाल दीनके दयाल,
द्यानत सेवक वंदै हाथ लाय माथ जी ॥ १ ॥
धन तौ तनक पाय दानकौ पन न जाय,
काय है निवल व्रत धीरजसौं धरै हैं ।
बुद्धि थोरी जिय माहिं पै अभ्यास किये जाहिं,
बात नाहिं कहैं जो पै कहैं सोई करैं हैं ॥
कैसे किन कष्ट परैं सज्जनतासौं न टरैं,
ग्रीषममैं चंद किरन अमृत ही झरैं हैं ।
साहबसेती हजूर भोगनसौं रहैं दूर,
सुख भरपूर लहैं दुःखमूर हरैं हैं ॥ २ ॥
बात कहा दुष्टनिकी सांपकौ सुभाव लियैं,
गुन दूध दियैं विष औगुन धरत हैं ।
ऐसे बहु जीव गुन दोष गुन दोष करैं,
गालागाली मुजरेसौं मुजरा करत हैं ॥
धनि आम ईखसे हैं मारैं फल पीड़ैं रस,
चंद जैसे जनदुख-तापकौं हरत हैं ।

पर उपगारी गुन भारी सो सराहनीक,
और सब जीव भव भँवर भरत हैं ॥ ३ ॥
एकनिकैं पुन्य उदै पुन्यकर्मबंध होय,
एकनिकैं पुन्य उदै पापबंध होत है।
एकनिकैं पाप उदै पापकर्मबंध होय,
एकनिकैं पाप उदै बंधै पुन्य गोत है ॥
उदै सारू कौन बात उदै कहैं मूढ़ भ्रात,
आलस सुभावी जिनके हियैं न जोत है।
उद्यमकी रीत लई पर्मारथ प्रीत भई,
स्वारथ विसारैं निज स्वारथ उदोत है ॥ ४ ॥
विद्यासौं विवाद करैं धनसौं गुमान धरैं,
बलसौं लराई लरैं मूढ़ आधव्याधमैं।
ग्यान उर धारत हैं दानकौं संभारत हैं,
परभै निवारत हैं तीनौं गुन साधमैं ॥
पर दुख दुखी सुखी होत हैं भजनमाहिं,
भवरुचि नाहीं दिन जात हैं अराधमैं।
देहसेती दुबले हैं मनसेती उजले हैं,
सांति भाव भरैं घट परैं ना उपाधमैं ॥ ५ ॥
पोषत है देह सो तौ खेहकौ सरूप बन्यौ,
नारि संग प्यार सदा जार-रंग राती है।
सुतसौं सनेह नित 'देह देह' किया करैं,
पावै ना कदाचि तौ जलावै आन छाती है ॥
दामसौं बनावै धाम हिंसा रहै आठौं जाम,
लछमी अनेक जोरैं संग नाहिं जाती है।

नामकी चिंतवनासौं स्वाम काम लागि रह्यौ,
साहबकौं जानें विन होत ब्रह्मघाती है ॥ ६ ॥
काहू न सतावें छल छिद्र न बनावें सब-
हीके मन भावें परमारथ सुनावना।
लोभकी न बाव होय क्रोधकौ न भाव जोय,
पांचौं इंद्री संवर दिगंबरकी भावना॥
अरचाकी चाल लियें चरचाकौ ख्याल हियें,
साधनिकी संगतिमें निहचेंसौं आवना।
मौन धर रहें कहें सुखदाई मीठे बेंन,
प्रभुसेती लव लाय आपकौं रिझावना ॥ ७ ॥
वृच्छ फलें पर-काज नदी औरके इलाज,
गाय-दूध संत-धन लोक-सुखकार है।
चंदन घसाइ देखौ कंचन तपाइ देखौ,
अगर जलाइ देखौ सोभा विसतार है॥
सुधा होत चंदमाहिं जैसें छांह तरु माहिं,
पालेमें सहज सीत आतप निवार है।
तैसें साधलोग सब लोगनिकौं सुखकारी,
तिनहीकौ जीवन जगत माहिं सार है ॥ ८ ॥
पूजा ऐसी करें हमें सब संत भला कहें,
दान इह विध देंहिं लेंहिं मुझ नामकौं।
सास्त्रके संजोग कर लोग आवें मेरे घर,
बात अच्छी कहूं मोहि पूछें सब कामकौं॥
प्रभुताकी फांसमें फस्यौ है जगवासी जीव,
अविनासी बूझ नाहिं लाग्यौ धन धामकौं।

धारी तैं अनंती जोनि नाम गह्यौ कौन कौन,
तेरौ नाम चेतन तू देखि आप ठामकौं ॥ ९ ॥
भाड़ा दे वसत जैसैं भौनमैं लसत ऐसैं,
आपकौं मुसाफिर ही सदा मान लेत है।
धाय-नेह बालक ज्यौं पालक कुटंब सब,
ओषध ज्यौं भोगनिकौं भोगत सचेत हैं ॥
नीतिसेती धन लेय प्रीतिसेती दान देय,
कब घर छूटै यह भावनासमेत है।
औसरकौं पाय तजि जाय एक रूप होय,
द्यानत वेपरवाह साहबसौं हेत है ॥ १० ॥
पंडित कहावत हैं सभाकौं रिझावत हैं,
जानत हैं हम बड़े यही बड़ी मार है।
पूरव आचारजौंकी बानी पेख आप देख,
मैं तौ कछु नाहिं यह बात एक सार है ॥
भाषत हौं कौन ठाम ठानत हौं कौन काम,
आवत है लाज दूजी बात सिरदार है।
तीजी बात बैन सब पुद्गल दरबरूप,
द्यानत हम चिद्रूप लखैं होत पार है ॥ ११ ॥

इति सज्जनगुणदशक।

वर्तमान-वीसी-दशक ।

कवित्त (३१ मात्रा) ।

सीमंधर परथम जिन साहब, अंत अजितवीरज परमेस ।
भविक जीव मन-पदम विकासन, मोह तिमिरकों हरन दिनेस
समोसरन बारैं जोजन धनु, पनसैं पूरव कोड़ गनेस ।
वीसों जिन अब हैं विदेहमैं, वंदि निकंदों पाप कलेस ॥ १ ॥
जंबु सुदरसन मेर मध्यतैं, पूर्वविदेह आठमा थान ।
सीता नदी तासतैं उत्तर, नील सिखरतैं दच्छिन आन ॥
देवारन वनके समीप है, पुंडरीकनी नगरी मान ।
तामैं श्रीदेवाधिदेव सीमंधर स्वामि नमों धरि ध्यान ॥ २ ॥
जंबु सुदरसन मेर मध्यतैं, पछिम विदेह आठमा ओर ।
सीतोदाकी उत्तरकी दिसि, नील सिखरतैं दच्छिन जोर ॥
भूतारन वनके समीप है, नगरी विजय वचन न कठोर ।
परमपूज जुगमंधर सूरज, भजैं भजैंगे पातिग चोर ॥ ३ ॥
जंबु सुदरसन मेर मध्यतैं, पूर्व विदेह आठमा थान ।
सीता नदी तासतैं दच्छिन, निषध सैलतैं उत्तर जान ॥
देवारन वनके समीप है, पुरी सुसीमा सुखकी खान ।
करुनासिंधु सुबाहु जिनेसुर, सेऊं मनवांछित-फल-दान॥४॥
जंबु सुदरसन मेर मध्यतैं, पच्छिम दिसि अष्टम सुभ खेत ।
सीतोदातैं दच्छिनकी दिस, निषध सैलतैं उत्तर चेत ॥
भूतारन वनके समीप हैं, नगरी वीतसोक सुखहेत ।
बाहु प्रभू सिवराह वतावत, वंदत पाऊं परम निकेत ॥५॥
विजय मेरतैं चार इही विध, अचल मेर चव इसी प्रकार ।
मंदर मेर चार याही विध, विद्युतमाली इह विध चार ॥

अष्ठम थान नदी गिर वन पुर, पूरववत सोलै जिन सार।
अनुक्रम नाम फेर अरु कछुना, वंदों वीसौं सुखदातार ॥६॥

सवैया इकतीसा।

सीमंधर जुगमंधर औ सुबाहु बाहुजी,
सुजात स्वयंप्रभजी नासौं भव-फंदना।
रिखभानन अनंत वीरज सौरीप्रभजी,
विसाल वज्रधार चंद्राननकों वंदना॥
भद्रबाहु सीभुजंग ईस्वरजी नेमि प्रभू,
वीरसेन महाभद्र पापके निकंदना।
जसोधर अजितवीर्ज वर्तमान वीसों जी,
द्यानतपै दया करौ जैसैं तात नंदना॥ ७॥

कवित्त (३१ मात्रा)।

जहां कुदेव कुलिंग कुआगम,-धारक जीव छहौं नहिं कोय।
तीन वरन इक जैन महामत, तहां षट् मतकौ भेद न होय॥
चौथा काल सदा जहां राजै, प्रलैकाल कव हीं नहिं जोय।
तप करि साध विदेह होत सो, भूविदेह सरधैं वुध सोय॥८॥
इक सौ साठ विदेह विराजैं, वीसों तीर्थंकर नित ठाहिं।
कौन जिनेस्वर कौन थानमैं, यह व्यौरा सब जानैं नाहिं॥
द्यानत जाननि कारन कीनैं, हंसौ मती हौं सठ वुधि माहिं।
जिह तिह भांति नाम जिन लीजै, कीजै सब सुख दुख मिटि जाहिं॥

दोहा।

वीसौं तीर्थंकर उहां, इहां न जानै कोय।
सरधा निहचै मन धरैं, सम्यक निरमल होय॥ १०॥

इति वर्तमानवीसी-दशक।

अध्यात्मपंचासिका ।

दोहा ।

आठ करमके बंधमें, बँधे जीव भववास ।
करम हरे सब गुन भरे, नमों सिद्ध सुखरास ॥ १ ॥
जगत माहिं चहु गतिविषें, जनम-मरन-वस जीव ।
मुकति माहिं तिहु कालमें, चेतन अमर सदीव ॥ २ ॥
मोख माहिं सेती कभी, जगमें आवें नाहिं ।
जगके जीव सदीव ही, कर्म काटि सिव जाहिं ॥ ३ ॥
पूरब कर्म उदोततें, जीव करें परनाम ।
जैसें मदिरा पानतें, करें गहल नर काम ॥ ४ ॥
तातें बांधे करमकों, आठ भेद दुखदाय ।
जैसें चिकने गातपै, धूलि पुंज जम जाय ॥ ५ ॥
फिर तिन कर्मनिके उदै, करै जीव बहु भाव ।
फिरकै बाँधे करमकों, यह संसार सुभाव ॥ ६ ॥
सुभ भावनतें पुन्य है, असुभ भावतें पाप ।
दुहु आच्छादित जीव सो, जान सकै नहिं आप ॥ ७ ॥
चेतन कर्म अनादिके, पावक काठ बखान ।
खीर नीर तिल तेल ज्यों, खान कनक पाखान ॥ ८ ॥
लाल बंध्यौं गठरी विषें, भान छिप्यौं घन माहिं ।
सिंह पींजरेमें दियौं, जोर चलै कछु नाहिं ॥ ९ ॥
नीर बुझावै आगिकों, जलै टोकनी (?) माहिं ।
देह माहिं चेतन दुखी, निज सुख पावै नाहिं ॥ १० ॥
जदपि देहसौं छुटत है, अंतर तन है संग ।
सो तन ध्यान अगनि दहै, तब सिव होय अभंग ॥ ११ ॥

रागदोषतैं आप ही, परै जगतके माहिं ।
ग्यान भावतैं सिव लहै, दूजा संगी नाहिं ॥ १२ ॥
जैसैं काहू पुरुषकौ, दरव गढ़ा घर माहिं ।
उदर भरै कर भीखसौं, ब्यौरा जानैं नाहिं ॥ १३ ॥
ता दिनसौं किनही कहा, तू क्यौं मागै भीख ।
तेरे घरमैं निधि गढ़ी, दीनी उत्तम सीख ॥ १४ ॥
ताके वचन प्रतीतिसौं, हरख भयौ मन माहिं ।
खोदि निकाले धन विना, हाथ परै कछु नाहिं ॥१५॥
त्यौं अनादिकी जीवकैं, परजै-बुद्धि बखान ।
मैं सुर नर पसु नारकी, मैं मूरख मतिमान ॥ १६ ॥
तासौं सदगुरु कहत हैं, तुम चेतन अभिराम ।
निहचै मुकति-सरूप हौ, ए तेरे नाहिं काम ॥ १७ ॥
काल लब्धि परतीतिसौं, लखौ आपमैं आप ।
पूरन ग्यान भये विना, मिटै न पुन्य न पाप ॥ १८ ॥
पाप कहत हैं पापकौं, जीव सकल संसार ।
पाप कहैं हैं पुन्यकौं, ते विरले मति-धार ॥ १९ ॥
बंदीखानामैं पर्यौ, जातैं छूटै नाहिं ।
बिन उपाय उद्यम कियैं, त्यौं ग्यानी जग माहिं ॥२०॥
साबुन ग्यान विराग जल, कोरा कपड़ा जीव ।
रजक दच्छ धोवै नहीं, विमल न लहै सदीव ॥ २१ ॥
ग्यान पवन तप अगनि बिन, देह मूस जिय हेम ।
कोटि वरषलौं राखियै, सुद्ध होय मन केम ॥ २२ ॥
दरव-करम नोकरमतैं, भाव करमतैं भिन्न ।
विकलप नहीं सुबुद्धिकैं, सुद्ध चेतनाचिन्न ॥ २३ ॥

च्यारों नाहीं सिद्धकैं, तू च्यारोंके माहिं ।
च्यारि विनासें मोख है, और बात कछु नाहि ॥२४॥
ग्याता जीवन-मुकत है, एकदेस यह बात ।
ध्यान अगनि करि करम वन, जलें न सिव किम जात॥
दरपन काई अथिर जल, मुख दीसै नहिं कोय ।
मन निरमल थिर विन भयें, आप दरस क्यों होय२६
आदिनाथ केवल लह्यौ, सहस वरस तप ठान ।
सोई पायौ भरतजी, एक महूरति ग्यान ॥ २७ ॥
राग दोष संकल्प हैं, नयके भेदविकल्प ।
दोय भाव मिटि जायं जब, तब सुख होय अनल्प २८
राग विराग दुभेदसौं, दोय रूप परनाम ।
रागी भ्रमिया जगतके, वैरागी सिवधाम ॥ २९ ॥
एक भाव है हिरनकैं, भूख लगैं तिन खाय ।
एक भाव मंजारकैं, जीव खाय न अघाय ॥ ३० ॥
विविध भावके जीव बहु, दीसत हैं जग माहिं ।
एक कछू चाहैं नहीं, एक तजैं कछु नाहिं ॥ ३१ ॥
जगत अनादि अनंत है, मुकति अनादि अनंत ।
जीव अनादि अनंत हैं, करम दुविध सुनि संत ॥३२॥
सबकैं करम अनादिके, कर्म भव्यकैं अंत ।
करम अनंत अभव्यकैं, तीन काल भटकंत ॥ ३३ ॥
फरस बरन रस गंध सुर, पाचौं जानै कोय ।
वोलै डोलै कौन है, जो पूछै है सोय ॥ ३४ ॥
जो जानै सो जीव है, जो मानै सो जीव ।
जो देखै सो जीव है, जीवै जीव सदीव ॥ ३५ ॥

जानपना दो विध लसै, विषै निरविषै भेद ।
निरविषई संवर लहै, विषई आस्रव वेद ॥ ३६ ॥
प्रथम जीवसरधानसौं, करि वैराग उपाय ।
ग्यान कियासौं मोख है, यही वात सुखदाय ॥ ३७ ॥
पुद्गलसौं चेतन वंध्यौ, यह कथनी है हेय ।
जीव वंध्यौ निज भावसौं, यही कथन आदेय ॥ ३८ ॥
वंध लखै निज औरसौं, उद्दिम करै न कोय ।
आप वंध्यौ निजसौं समझ, त्याग करै सिव होय ॥३९॥
जथा भूपकौं देखिकै, ठौर रीतिकौं जान ।
तव धन अभिलाखी पुरुष, सेवा करै प्रधान ॥ ४० ॥
तथा जीव सरधान करि, जानै गुन परजाय ।
सेवै सिव धन आस धरि, समतासौं मिलि जाय ॥४१॥
तीन भेद व्यवहारसौं, सरव जीव सम ठाम ।
वहिरंतर परमातमा, निहचै चेतनराम ॥ ४२ ॥
कुगुरु-कुदेव-कुधर्मरत, अहंवुद्धि सव ठौर ।
हित अनहित सरधै नहीं, मूढ़नमैं सिरमौर ॥ ४३ ॥
आप आप पर पर लखै, हेय उपादे ग्यान ।
अव्रती देशव्रती महा,-व्रती सवै मतिमान ॥ ४४ ॥
जा पदमैं सव पद लसै, दरपन ज्यौं अविकार ।
सकल विकल परमातमा, नित्य निरंजन सार ॥ ४५ ॥
वहिरातमके भाव तजि, अंतर आतम होय ।
परमातम ध्यावै सदा, परमातम है सोय ॥ ४६ ॥
वूंद उदधि मिलि होत दधि, वाती फरस प्रकास ।
त्यौं परमातम होत हैं, परमातम अभ्यास ॥ ४७ ॥

सब आगमकौ सार जो, सब साधनकौ येव।
जाकौं पूजैं इंद्र सौ, सो हम पायौ देव ॥ ४८ ॥
सोहं सोहं नित जपै, पूजा आगम सार।
संतसंगतिमैं बैठना, एक करै व्यौंहार ॥ ४९ ॥
अध्यातम पंचासिका, माहिं कह्यौ जो सार।
द्यानत ताहि लगे रहौ, सब संसार असार ॥ ५० ॥

इति अध्यात्मपंचासिका।

अक्षर-बावनी।

ॐकार सरव अच्छरकौ, सब मंत्रनकौ राजा जी।
तीन लोक तिहुं काल सरव घट, व्यापि रह्यौ सुखकाजा जी॥
श्रीजिनवानी माहिं वतायौ, पंच परमपदरूपी जी।
द्यानत दिढ़ मन कोई ध्यावै, सोई मुकत-सरूपी जी॥१॥
अमर नाम साहिवका लीजै, काम सबै तजि दीजै जी।
आतम पुग्गल जुदे जुदे हैं, और सगा को कीजै जी॥
इस जग मात पिता सुत नारी, झूठा मोह वढ़ावै जी।
ईत भीत जम पकड़ मंगावै, पास न कोई आवै जी॥२॥
उसका इसका पैसा ठगि ठगि, लछमी घरमैं लावै जी।
ऊपर मीठी अंतर कड़वी, वातैं वहुत वनावै जी॥
रिन ले सुख हो देते दुख हो, घरका करै संभाला जी।
रीस विरानी करै देखिकै, वाहिर रचै दिवाला जी॥३॥
लिखै झूठ धन कारन प्रानी, पंचनमैं परवानी जी।
लीन भयौ ममतासौं डोलै, वोलै अंमृत वानी जी॥
ए नर छलसौं दर्व कमाया, पाप करम करि खाया जी।
ऐन मैन (?) नागा हो निकला, तागा रहन न पायाजी॥४॥
ओस वूंद सम आव तिहारी, करि कारज मनमाहीं जी।
औसर जावै फिरि पिछतावै, काम सरै कछु नाहीं जी॥
अंतर करुनाभाव न आनै, हिंसा करै घनेरी जी।
अहि सम हो परजीव सतावै, पावै दुखकी ढेरी जी॥५॥
काम धरमके करै अधूरे, सुख लोरे भरपूरे जी।
खाया चाहै आंव गंडेरी, वोवै आक धतूरे जी॥

गुरुकी सेवा ठानत नाहीं, ग्यान प्रकास निहारे जी।
धरमैं दान देय नहिं लोभी, वंछै भोग पियारे जी॥ ६ ॥
नेक धरमकी वात न भावै, अधरमकी सिरदारी जी।
चरचामाहिं वुद्धि नहिं फैलै, विकथाकी अधिकारी जी॥
छिन छिन चिंता करै पराई, अपनी सुधि विसराई जी।
जामन मरन अनेक किये तैं, सो सुध एक न आई जी॥७॥
झूठे सुखकौं सुख कर जाना, सुखका भेद न पाया जी।
निराकार अविकार निरंजन, सो तैं कवहुं न ध्याया जी॥
टेक करै वातनिकी प्रानी, झूठे झगड़ै ठानैं जी।
ठौर ठिकाना पावै नाहीं, संजम मूल न जानै जी॥ ८ ॥
डरै आपदासौं निसवासर, पाप करम नहिं त्यागै जी।
ढूंढ़ै वाहिर स्वारथ कारन, परमारथ नहिं लागै जी॥
निसदिन वाँध्यौ आसाफासी, डोलै अचरज भारी जी।
तव आसा वंधनसौं छूटै, होय अचल सुखकारी जी॥ ९॥
थिरता गहि तजि फिकर अनाहक, समता मनमैं आनौ जी।
दरसन ग्यान चरन रतनत्रै, आतमतत्त्व पिछानौं जी॥
धरम दया सव कहैं जगतमैं, पालैं ते वड़भागी जी।
नेम विना कछु वनि नहिं आवै, भाव न होय विरागी जी १०
पंच परम पद हिरदैं धरियै, सुरग मुकतिके दाता जी।
फिरो अनंत वार चहु गतिमैं, रंच न पाई साता जी॥
विनासीक संसारदसा सव, धन जोवन घनछाहीं जी।
भूला कहां फिरत है प्रानी, कर थिरता मन माहीं जी ११
मंत्र महा नौकार जपौ नित, जपैं तिहूं जग इंद्रा जी।
यही मंत्र सुनि भए नाग जुग, पदमावति धरनिंद्रा जी॥

राखौ सम्यक सात विसन तजि, आठ मूल गुन पालौ जी।
लगन लगाय प्रथम प्रतिमासौं, बारै वरत संभालौ जी॥१२॥
वह मन महा चपल थिर कीजै, सामायिक रस पीजै जी।
सिव अभिलाख धरौ पोसहव्रत, भोजन सचित न कीजै जी॥
षट निसभोजन नारी संगत, तजिकैं सील संभारौ जी।
सब आरंभ परिग्रह भाई, अघ उपदेस संभारौ जी॥१३॥
हरि ममता सब धन परिजनकी, करि निरभै भुव वासा जी।
लेहु अहार उदंड-विहारी, तजि कायाकी आसा जी॥
छिन छिन आतम आतम पर पर, यही भावना भाऊं जी।
बावन अच्छर पढ़ौ अर्थसौं, अथवा मौन लगाऊं जी॥ १४॥
सुद्ध असुद्ध भाव दो तेरे, सुभ अरु असुभ असुद्धं जी।
असुभ भाव सरवथा विनासौ, सुभमैं हो प्रतिवुद्धं जी॥
सुद्ध भाव जिह विध वनि आवै, सोई कारज धारौ जी।
द्यानत जीवन निपट सहल है, जगतैं आप निकारौ जी॥१५॥

इति अक्षरबावनी।

नेमिनाथ-बहत्तरी ।

अडिल्ल ।

वंदौं नेमि जिनंद, चंद निरधार हैं ।
वचन किरन करि, भ्रम तम नासनिहार हैं ॥
भवि चकोर बुध कुमुद, नखत मुनि सुक्खदा ।
ग्यान-सुधा भौ-तपत, नास पूरन सदा ॥ १ ॥

मथुरामैं हरि कंस, विधंस किया जबै ।
समुदविजै दस भ्रात, किस्न हलधर सबै ॥
जरासिंधसौं डरि, सौरीपुरकौं चले ।
आए सागर तीर, चतुर सब ही मिले ॥ २ ॥

होनहार श्रीनेम, जिनंद प्रभावतैं ।
नारायनकौ पुन्य, हली लखि चावतैं ॥
आयौ देव तुरंत, द्वारिका पुर किया ।
महाबली लखि राज, किस्नजीकौं दिया ॥ ३ ॥

गरभ छमास अगाऊ, धनपति आइयौ ।
जनक भवन तिहुं काल, रतन बरसाइयौ ॥
कनक रतनमै, अति सोभा पुरकी करी ।
मात सिवादेवी सोई, बहु सुख भरी ॥ ४ ॥

सोलै सुपने देखे, पच्छिम रातमैं ।
गज पावक अभिराम, उठी सो प्रातमैं ॥
समुदविजै पै जाय, सुपन फल सुन लिया ।
तिहुजगपति सुत होसी, अति आनंद किया ॥ ५ ॥

कमलवासिनी देवी, सब सेवा करैं।
पंद्रह मास रतन, बरसासौं घर भरैं॥
आसन कांप्यौ इंद्र, जनम जिनकौ भयौ।
ऐरावति चढ़ि आए, सब सुर सुख लयौ॥ ६॥

गजपै कोड़ सताइस, अपछर नाचहीं।
देवी देव चहूं विध, मंगल राचहीं॥
इंद्रानी प्रभु लाय, इंद्र करमैं दियौ।
गज चढ़ि छत्र चमर बहु, मेर गमन कियौ॥ ७॥

पांडुक सिल सिंघासनपै, प्रभु थापियौ।
सहस अठोतर कलस, धार जै जै कियौ॥
पूजा अष्ट प्रकार, करी अति प्रीतिसौं।
नेमिनाथ यह नाम, दियौ गुन रीतिसौं॥ ८॥

मात पिताकौं सौंप, निरत बहु विध भया।
देवकुमारन थाप, आप थानक गया॥
खान पान पट भूषन, देवपुनीत हैं।
भए कुमर दस गुन, तिहुं ग्यान सुरीत हैं॥ ९॥

सारथ-वाह रतन ले, चक्रीपै गयौ।
जरासिंधु मन कोप, कृस्न ऊपर भयौ॥
हरि पूछै तब आय, जीत प्रभु कौनकी।
वदन खुसी लखि, जान्यौ हम जै हौनकी॥ १०॥

सोरठा।

जरासिंधुकौं जीत, सुर नर खग सब वसि करे।
सोल सहस तिय प्रीत, तीन खंड राजा भये॥ ११॥

भूप कुमर सब साथ, इक दिन कृस्न सभा गये।
उठे सबै नरनाथ, सिंघासन बैठे प्रभू ॥ १२ ॥
बात चली बलरूप, एक कहैं पांडौं बड़े।
एक कहैं हरि भूप, कंस जरासंध जिन हते ॥ १३ ॥
बलभद्दर तिह ठाम, कहैं त्रिजग तिहुं कालमैं।
मति लो झूठा नाम, नेमिनाथ सम बल नहीं ॥ १४ ॥
कृस्न कहै तिह बार, स्वबल दिखाऊं स्वामिजी।
सुनि आई सब नारि, लखैं झरोखेमैं खरीं ॥ १५ ॥
नेमि सहज कर बाम, दई कनिष्ठा अंगुली।
मेर अचल ज्यौं स्वाम, कृस्न हलाय सक्यौ नहीं ॥१६॥
नारायन सत भाय, कहै जोर अपनो करौ।
ताही अंगुली लाय, कृस्न उठाय फिराइयौ ॥ १७ ॥
छोड़ि दियौ ततकाल, दीनदयाल दयाल है।
बोल्यौ कृस्न खुष्याल, राज हमारौ अटल है ॥ १८ ॥
नाम भजैं जैकार, देव पहुप-बरषा करैं।
गुन थुति करि बहु बार, विदा किये प्रभु मान दे॥१९॥
हरिकौं फिकर अपार, राज सुथिर मेरौ कहां।
जब लौं नेमिकुमार, मन सोचै देखौ हली ॥ २० ॥

मोतीदाम।

बल तब हरिकौं समझावै, इन तिहुं-जग-राज न भावै।
कछु कारन देखि धरैंगे, दिच्छा सिवनारि वरैंगे ॥ २१ ॥
तब रितु वसंत सुभ आई, सब भागि चले मिलि भाई।
नेमीस्वर हरि बल सारे, परिजन तिय संग सिधारे ॥२२॥

क्रीड़ा वहु करि वनमाँहीं, हरि तिय भेजी प्रभु पाहीं ।
सव नाचैं गाय वजावैं, होली सम ख्याल मचावैं ॥ २३ ॥
वोली जंववंती नारी, तुम व्याह करौ सुखकारी ।
प्रभु रंच भए न सरागी, सुचि जल न्हाए वड़ भागी ॥२४॥
यह धोती धोय हमारी, सुनि जंववती रिस धारी ।
मैं कृस्नतनी पटरानी, तिन हू न कही ए वानी ॥ २५ ॥
जिन संख धनुप फनि साधे, ए काम कठिन आराधे ।
जव तुम तीनौं करि आवौ, तव धोती वात चलावौ ॥२६॥
सुनि वोली रुकमनी रानी, सो दिन तू क्यौं विसरानी ।
प्रभु कृस्न उठाय फिरायौ, तव धोती धो गुन गायौ ॥२७॥
जव नेमीस्वर मन आई, जल रेखा सम गरमाई ।
अहिसेजा धनुप चढ़ायौ, नासासौं संख वजायौ ॥ २८ ॥
सुर असुरन अचिरजकारी, अदभुत धुनि सुनि नर नारी ।
भई धूम देसमैं भारी, डरि कंपन लाग्यौ मुरारी ॥ २९ ॥
जांववंती विध सुनि आयौ, प्रभुकौं हरि सीस नवायौ ।
तुम सम तिहु जग वल नाहीं, जिन खुसी गए घरमाहीं ॥३०॥

चौपई ।

तव हरि उग्रसैनसौं भाखी, राजमती कन्या अभिलाखी ।
उत्तम नेमि कुमर वर दीजै, समदविजै नृप समदी कीजै ३१॥
उग्रसैन नृप सुनि हरखाया, नेमिकुमार जमाई पाया ।
छंठ सुकल सावन ठहराया, व्याह लगन नृप भौन पठाया ३२
कुल आचार दुहूं घर कीने, मंगल कारज आनंद भीने ।
दान अनेक सवनि सुखदानी, वहु ज्यौंनार वहुत विध ठानी ॥

चली वरात विविध विसतारी, गान नृत्य वादित्र अपारी।
जादौ छप्पन कोड़ि तयारी, औंर भूप बहु विध असवारी ३४
रथ ऊपर श्रीनेमि विराजैं, छत्र चमर सिंघासन छाजैं।
देवपुनीत दरव सब सोहैं, सुर नर नारिनके मन मोहैं॥ ३५॥
पसु पंखी घेरे वन माहीं, सबनि पुकार करी इक ठाहीं।
तुम प्रभु दीनदयाल कहाऔ, कारन कौन हमैं मरवाऔ ३६॥
यह दुख-धुनि सुनि नेमिकुमारं, सारथिसौं पूछी तिह वारं।
प्रभु तुम व्याह निमित सब घेरे, संग मलेच्छ भूप बहुतेरे ३७॥
कंटक-भै पैनही पग माहीं, जीवसमूह हनैं डर नाहीं।
पर प्राननि करि प्रान भरैं हैं, प्रानी दुरगति माहिं परैं हैं ॥३८॥
धिग यह व्याह नरकदुखदानी,ततछिन छोड़ि दिये सब प्रानी
खुसी सरव निज थान सिधारे, प्रभु तुम वंदी छोर हमारे३९॥
कुल हरिवंस पुनीत विराजै, यह विपरीत तहां क्यौं छाजै।
राज-काज हरि यह विधि ठानी,प्रभु मनमैं बातैं सब जानी४०

चौपई, दूजी ढाल।

प्रभु भावैं भावन निहपाप; भवतनभोग अथिर थिर आप।
चहु गति सब असरन सिव सर्न, सिद्ध अमर जग जंमन मर्न॥
एक सदा कोई संग नाहिं, निहचै भिन्न रहै तन माहिं।
देह असुच सुच आतम पर्म,नाव छेक जल आस्रव कर्म ॥४२॥
संवर दिढ़ वैराग उपाव, तप निर्जरा अवंछक भाव।
लोक छदरव अनादि अनंत,ग्यान भान भ्रम तिमर हनंत४३
काम भोग सब सुख लभ लोय, एक सुद्ध पद दुरलभ सोय।
लौकांतिक आए तिह घरी, कुसुमांजली दे बहु थुति करी४४॥

---

१ देवोपनीत-दिव्य। २ जूतियाँ।

चतुर निकाय देव सब आय, छीरोदधि जल कलस न्हुलाय।
सीस मुकुट पट भूषन माल, मुकति वधू-वर बने रसाल ॥४५॥
चढ़ि सुखपाल चले भगवंत, सुर नर खग जै जै उचरंत।
मात सिवादेवी विललाय, दौरि पालकी पकरी आय॥४६॥
भई मूरछा सुधि बुधि खोय, ज्यौं त्यौं कीनी चेतन सोय।
अहो पुत्र तुम कुल सिंगार, मुझ दुखियाकौ को आधार॥४७॥
जीव भ्रम्यौ जग दुःख अपार, जनम मरन कीने बहु बार।
निज परभौ भाखे समझाय, गरभवास अब वस्यौ न जाय ४८
तुम माता, चाहो सुख मोहि, हमैं दुखी लखि दुखिया होहि।
मैं जग तरौं वरौं सिव नार, सुत गुन सुनि तुम हरखौ सार ४९
हल वलभद्र कहैं बहु भाय, राज करौ हम सेवैं पाय।
राज विनासी सो किह काज, हम पायौ परमातमराज ॥५०॥

दोहाकी ढाल।

जै जै स्वामी नेमिजी, नमौं स्वपद दातार हो।
आप स्वयंभूनैं धरी, दिच्छा गढ़ गिरनार हो ॥ ५१ ॥
एक सहस नृप साथ ले, सिद्धरूप उर धार हो।
इंद्र करी थुति वंदना, सब मिलि वारंवार हो ॥ ५२ ॥
वेलासौं उठि पारना, प्रासुक खीर अहार हो।
वरदत नृप घरमैं भए, पंचाचरज अपार हो ॥ ५३ ॥
खग मृग ले फल फूल सो, वंदैं सीस नवाय हो।
जाके दरसन देखतैं, जनम वैर मिटि जाय हो ॥ ५४ ॥
छप्पन दिनमैं पाइयौ, केवल ग्यान अपार हो।
समोसरन धनपति कियौ, कहत न आवै पार हो ॥५५॥

रजमति अति विललायकैं, ग्यारह प्रतिमा धार हो।
सबै आरजामैं[1] भई, गैननी[2] पद सिरदार हो ॥ ५६ ॥
सूरज सम तम नासकैं, ससि सम वचन प्रकास हो।
मेघ समान सुखी करे, सुरतरु सम गुणरास हो ॥ ५७ ॥
हरि बल सब पूजा करैं, पूजैं इंद्र समस्त हो।
गनधर ठाड़े थुति करैं, पावैं वंछित वस्त हो ॥ ५८ ॥
नारायन बलदेवनैं, पूछी प्रभुसौं बात हो।
द्वारापुर अरु किसनकी, कितनी थिति विख्यात हो॥५९॥
मदके दोष प्रभावतैं, द्वीपायन नरनाह हो।
इनतैं बारै वर्षमैं, नगर द्वारिकादाह हो ॥ ६० ॥
हरिकौं जरदकुमारकौ, बाण लगैगौ आय हो।
तातैं संजम लीजियै, घर वासा दुखदाय हो ॥ ६१ ॥
किसन दई पुर घोषणा, दिच्छा लो नरनारि हो।
मैं काहू रोकौं नहीं, नेमि-वचन उर धारि हो ॥ ६२ ॥

दोहाकी दूसरी ढाल।

हो स्वामी भौ जल पार उतार हो। (आंचली)
सतभामा रुकमिनि सबै जी, प्रदमनि आदि कुमार।
बहुतनिनैं दिच्छा लई जी, जान अथिर संसार हो ॥ ६३ ॥
नगर जरन हरिकौ मरन जी, कहैं बढ़ै विसतार।
बलभद्र दिच्छा धरी जी, भयौ सुरग अवतार हो॥६४॥
पांचौं पांडौनैं लई, दिच्छा सहित कुटंब।
सुन सुन निज परजायकौं जी, जान्यौ जगत विटंब हो६५

1 आर्यिकाओंमें। २ गणनी-अर्जिकाओंके संघकी स्वामिनी।

नाम कहा लौं मैं कहूं जी, धनि धनि नेमिकुमार।
बंदी छोरे परमजती जी, सब जग तारनहार हो॥ ६६॥
सुगुन अनंत महंत हौ जी, प्रगट छियालिस भास।
दोष अठारै छय गये जी, लोकालोक प्रकास हो॥ ६७॥
बहु नारी प्रतिबोधिकैं जी, भेजीं सुरगति सार।
रजमति तिय लिंग छेदिकैं जी, सोलैं सुरग मझार हो॥६८॥
बहुतनकौं सुरपद दियौ जी, बहुतनकौं सिवठाम।
तीन सतक तेतीस संग जी, भये अमर सुखधाम हो॥६९॥
तन कपूर ज्यौं खिर गया जी, रहे केस नख धार।
सुगंध दरब धरि अगन सुर जी, मुकट नम्यौ तिह वार हो७०
कथा तिहारी मुनि कहैं, हमनैं लीनौं नाम।
दो अच्छर नर जे जपैं जी, सीझैं वंछित काम हो॥७१॥
सांचे दीन दयाल हौ जी, द्यानत लौं तुम माहिं।
अपनौ पन प्रतिपाल हौ जी, चिंता व्यापै नाहिं हो॥७२॥

इति नेमिनाथबहत्तरी।

वज्रदंत कथा[1]

चौपई ।

बैठौ वज्रदंत भूपाल, माली लायौ फूल रसाल ॥ (टेक) ।
कमल माहिं मृत भ्रमर निहार, चक्री मन कंप्यौ तिह बार१॥
नासा वसि इन खोई देह, मैं सठ कियौ पंचसौं नेह ॥ २ ॥
मति सुत अवधि ग्यानकौं पाय, मैं न कियौ तप मोख उपाय३
भव तन भोगनिकौं धिकार, दिच्छा धरौं वरौं सिव नार॥४॥
सुतकौं सर्व संपदा देय, सो वैरागी राज न लेय ॥ ५ ॥
पुत्र हजार सवनसौं कहा, वौंने जेम किनहू नहिं गहा ॥ ६ ॥
आपनि मुकत होत हौ भूप, हमकौं क्यौं डोवौ जगकूप ॥ ७ ॥
पोतेकौं दे राज समाज, आपन चले मुकतिके काज ॥८॥
पिता तीर्थंकरके ढिग जाय, नव निधि रत्न तजे दुखदाय॥९॥
तीस सहस नृप पुत्र हजार, साठि सहस रानी संग धार ॥१०॥
आप मुकति सव सुगतिमझार, द्यानत नमौं सुपद दातार११

इति वज्रदंतकथा ।

---

१ वमन-कैके समान किसीने राज्य नहीं लिया ।

आठ गणछन्द ।

दोहा ।

वरधमान सनमति महा, वीर अति महावीर ।
वीर पंच जिस नाम सो, नमौं अंत जिन धीर ॥ १ ॥

सोरठा ।

सब संसार अनित्य, नित्य एक परमातमा ।
वंदि कहूं सुन मित्त, आठ छंद गन आठके ॥ २ ॥

यगण ।

अकर्ता च कर्ता अभुक्ता च भुक्ता,
अनेका अनित्ता निता एक उक्ता ।
मरै ऊपजै ना मरै ना पजै है,
सदा आतमा स्वांग ऐसे सजै है ॥ ३ ॥

रगण ।

चेतना आन है आन देही यही,
तेयपै भेद ज्यौं भेद जानौ सही ।
त्यागियै देहके नेहकी थापना,
देखियै जानियै आतमा आपना ॥ ४ ॥

तगण ।

जो देह सो देह जो ग्यान सो ग्यान,
संबंधके होततैं होत ना आन ।
जो भेदविग्यान धारंत धीवंत,
सो नास भौ-वास स्यौ-वास वासंत ॥ ५ ॥

भगण ।

केवल दर्सन ग्यान विराजत,
लोक अलोक लखैं गुण छाजत ।
कर्म ढक्यौं नहिं आप पिछानत,
सो परमातम क्यौं नहि जानत ॥ ६ ॥

जगण।

न राग न दोप न बंध न मोप,
सदा अपने गुनमंडित कोप।
सुभाव रमैं पर भावनि खोय,
तिसै परमातमकौ पद होय॥ ७॥

सगण।

जिसकी थुति इंद्र करै हरखै,
जिसके गुन साध सदा परखै।
जिसकौं नित वेद वतावत हैं,
सु तुही निजमैं किन ध्यावत हैं॥ ८॥

नगण।

धरम गगन जम अधरम,
वध अवध पुदगल करम।
पर विरहत सुपदसहत,
सुगुन गहत सु सुख लहत॥ ९॥

मगण।

सत्तोहं तत्तोहं गेयोहं ग्याताहं,
ग्यानोहं ध्यानोहं ध्येयोहं ध्याताहं।
पर्मोहं धर्मोहं सर्मोहं बुद्धोहं,
रिद्धोहं वृद्धोहं सिद्धोहं सुद्धोहं॥ १०॥

सोरठा।

बारै अच्छर छंद, चार सहस अरु छयानवैं।
द्यानत हम मतिमंद, भेद कहां लौं कहि सकैं॥ ११॥

इति आठगणछंद।

धर्म-चाह गीत ।

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्धको सुमिरन करौं ।
मैं सूरि गुरु मुनि तीन पदमैं, साध पद हिरदै धरौं ॥
मैं धरम करुनामई चाहूं, जहां हिंसा रंच ना ।
मैं शास्त्रग्यान विराग चाहूं, जासमैं परपंच ना ॥ १ ॥

चौवीस श्रीजिनराज चाहूं, और देव न मन वसै ।
जिन वीस खेत विदेह चाहूं, वंदतैं पातिग नसै ॥
गिरनार सिखर समेद चाहूं, चंपापुर पावापुरी ।
कैलास श्रीजिनधाम चाहूं, भजत भाजै भ्रम-जुरी ॥ २ ॥

नौ तत्त्वका सरधान चाहूं, और तत्त्व न मन धरौं ।
षट् दरव गुन परजाय चाहूं, ठीक तासौं भै हरौं ॥
पूजा परम जिनराज चाहूं, और देव नहीं सदा ।
तिहुं कालका मैं जाप चाहूं, पाप नाहिं लागै कदा ॥ ३ ॥

सम्यक्त दरसन ग्यान चारित, सदा चाहूं भावसौं ।
दसलच्छनी मैं धरम चाहूं, महा हरष वढ़ावसौं ॥
सोलहौं कारन दुखनिवारन, सदा चाहूं प्रीतिसौं ।
मैं नित अठाई परव चाहूं, महा मंगल रीतिसौं ॥ ४ ॥

मैं वेद चारौं सदा चाहूं, आदि अंत निवाहसौं ।
पाए धरमके चारि चाहूं, अधिक चित्त उछाहसौं ॥
मैं दान चारौं सदा चाहूं, भौन वसि लाहा लहूं ।
मैं चारि आराधना चाहूं, अंतमैं एही गहूं ॥ ५ ॥

मैं भावना वारहौं चाहूं, भाव निरमल होत है ।
मैं वरत वारै सदा चाहूं, त्याग भाव उदोत है ॥

प्रतिमा दिगंवर सदा चाहूं, ध्यान आसन सोहना ।
सव करमसौं मैं छुटा चाहूं, सिव लहौं जहां मोह ना॥६॥
मैं साहमीको संग चाहूं, मीत तिनहीकौं करौं ।
मैं परवके उपवास चाहूं, सरव आरंभ परिहरौं ॥
इस दुखम पंचम काल माहीं, कुल सरावग मैं लहा ।
सव महाव्रत धरि सकूं नाहीं, निवल तन मैंने गहा ॥७॥
यह भावना उत्तम सदा, भाऊं सुनौ जिनराय जी ।
तुम कृपानाथ अनाथ द्यानत, दया करनी न्याय जी ॥
दुख नास कर्म विनास ग्यान, प्रकास मोकौं कीजियै ।
करि सुगतिगमन समाधिमरन, भगति चरनकी दीजियै ॥८॥

इति धर्मचाहगीत ।
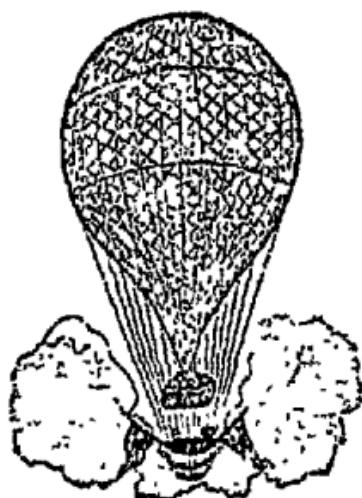
आदिनाथस्तुति ।

रेखता ।

तुम आदिनाथ स्वामी, बंदौं त्रिकाल नामी ।
तुम गुन अनंत भारी, हम तनक बुद्धिधारी ॥ १ ॥
थुति कौन भांति गावैं, यह बुद्धि कहां पावैं ।
तुम ही सहाय हूजौ, प्रभु सम न देव दूजौ ॥ २ ॥
सर्वार्थसिद्धिवासी, तिहुं ग्यान सुखविलासी ।
गर्भ मास षट अगाऊ, सुर कियौ नगर चाऊ ॥ ३ ॥
भवि भाग जोग आए, सुर मेरपै न्हुलाए ।
नाभिरायके दुलारे, मरुदेविके पियारे ॥ ४ ॥
जब आठ बरस धारे, अनुविरत सब संभारे ।
षट लाख पुव्व आए, लखि सबनि सुक्ख पाए ॥ ५ ॥
नाभिराय चित विचारी, संतानवृद्धिकारी ।
तुम परम गुरु सबनके, हम नाम गुरु भवनके ॥ ६ ॥
कहना हमारा कीजै, पानिग्रहन करीजै ।
प्रभु मोह उदै बूझा, चुप रहे भाव सूझा ॥ ७ ॥
तब इंद्र भी आया ही, दो भूप सुता व्याही ।
भए एक सौ कुमारं, दो सुता गुन अपारं ॥ ८ ॥
सब आप ही पढ़ाए, हुन्नर सबै सिखाए ।
जब कलपवृच्छ भागे, सब नाभि चरन लागे ॥ ९ ॥
नृप ले सबनिकौं आए, प्रभुकौं वचन सुनाए ।
यह प्रजा राखि लीजै, सबहीकौं सुखी कीजै ॥ १० ॥
प्रभु कालथिति विचारी, गई भोगभूमि सारी ।
तब ही सुधर्म आए, षट कर्म सब लगाए ॥ ११ ॥

कलसाभिषेक कीनौं, नाभिनैं स्वराज दीनौं ।
धीस लाख पुव्व आए, तव प्रजापति कहाए ॥ १२ ॥
सव दान सवकौं दीनैं, सव लोग सुखी कीनैं ।
कियौ राज सुख उदारं, सव भोग वहु प्रकारं ॥ १३ ॥
प्रभु भोग तजत नाहीं, इंद्र फिकर चित्त माहीं ।
तव अपछरा पठाई, सो नाचिकैं विलाई ॥ १४ ॥
लखि जगत-थिति विनासी, भए पुव्व लख तिरासी ।
वैराग भाव भाए, लौकांत इंद्र आए ॥ १५ ॥
दियौ भरत राजभारं, किय भूप सव कुमारं ।
चौ सहस भूप साथं, भए जती जगतनाथं ॥ १६ ॥
षट मास जोग दीनौं, तन अचल मेर कीनौं ।
सव साथतैं सु भागे, छुध तृषा काज लागे ॥ १७ ॥
प्रभु पाय जग परे हैं, फल फूल लै धरे हैं ।
नमि विनमि तहां आए, प्रभुकौं वचन सुनाए ॥ १८ ॥
सुत सरव भूप कीनैं, हम क्यौं विसारि दीनं ।
धरनेंद्र तहां आया, वामनका भेष लाया ॥ १९ ॥
तुम जाहु भरत पासैं, अव राज लेहु वासैं ।
तुझकौं कवन वुलावै, को भरत कौन जावै ॥ २० ॥
इनका कहा करैंगै, इनहीके ह्वो रहैंगे ।
तव इंद्र भगति भीने, खगपती भूप कीने ॥ २१ ॥
प्रभु जोग पूरा कीना, आहार चित्त दीना ।
आए नगरके माहीं, विधि जानैं कोई नाहीं ॥ २२ ॥
वन माहिं फिर सिधारे, समताके भाव धारे ।
दिन चार सै भए हैं, गजपुरमैं तव गए हैं ॥ २३ ॥

नौ भौकौ नेह जानौ, दाता श्रेयंस ठानौ।
लिया ईखरस नवीना, सुर पंचचरज कीना ॥ २४ ॥
तब भरत भूप धाया, श्रेयांस भुवन आया।
मौनीकी वात जानी, क्यौंकर तुमें पिछानी ॥ २५ ॥
कही भरतसौं विख्यातं, भव आठकेरी वातं।
वज्रजंघ श्रीमतीका, सब कहा भेद नीका ॥ २६ ॥
तब दान विधि वताई, सवहीके मन सुहाई।
तप कियौ बहु प्रकारं, भए वरस इक हजारं ॥ २७ ॥
चहु करम तब भगाया, तब ग्यान भान पाया।
सुर कियौ समोसरना, सो कापै जाय वरना ॥ २८ ॥
सुर नर असुरनैं पूजा, तुही देव नाहिं दूजा।
बानी सु मेघ वरसै, सुनि सरव जीव हरसै ॥ २९ ॥
गनधर भए चौरासी, बहु मुनि भए निरासी।
स्रावक अनेक कीनैं, सवहीकौ वरत दीनैं ॥ ३० ॥
पसु नरकतैं निकारे, सुर मुकति सुख विथारे।
सब देस करि विहारं, इक लाख पुव्व सारं ॥ ३१ ॥
मुनि एक सहस संगं, भए अमर सुख अभंगं।
तन खिरा ज्यौं कपूरं, इंद्र भए सब हजूरं ॥ ३२ ॥
करि वंद वार वारं, नख केश संसकारं।
रज सीस लै लगाई, भावना चित्त भाई ॥ ३३ ॥
जे गुन तिहारे ध्यावैं, पूजा करैं करावैं।
जे नामकौं भजै हैं, सब पापकौं तजै हैं ॥ ३४ ॥
जे कथा तेरी गावैं, जे सुनैं प्रीति लावैं।
जे चित्तमैं धरै हैं, सब दुःखकौं हरै हैं ॥ ३५ ॥
तुम कथा है बहुतसी, मैं कही है तनकसी।
यह चूक बकस दीजौ, द्यानतकौं याद कीजौ ॥ ३६ ॥

इति आदिनाथस्तुति।

शिक्षापंचासिका ।

दोहा ।

राग विरोध विमोह वस, भ्रमैं जीव संसार ।
तीनौं जीतैं देव सो, हमैं उतारौ पार ॥ १ ॥
धंधेमैं दिन जात है, सोवत रात विलात ।
कौन वेर है धरमकी, जव ममता मरि जात ॥ २ ॥
नरकी सोभा रूप है, रूप सोभ गुनवान ।
गुनकी सोभा ग्यानतैं, ग्यान छिमातैं जान ॥ ३ ॥
आव गलै अघ नहि गलै, मोह फुरै नहिं ग्यान ।
देह घटै आसा वढ़ै, देखौ नरकी वान ॥ ४ ॥
चेतन तुम तौ चतुर हौ, कहा भए मतिहीन ।
ऐसौ नर भव पायकैं, विषयनमैं चित दीन ॥ ५ ॥
ग्याता जो कुकथा करै, पीछै, निंदै सोय ।
मूरख ग्यान वखानिकैं, आदर करै न लोय ॥ ६ ॥
त्याग करै त्यागी पुरुष, जानै आगम भेद ।
सहज हरष मनमैं धरै, करै करमकौ छेद ॥ ७ ॥
वालपने अग्यान मति, जोवन मदकर लीन ।
वृद्धपने है सिथिलता, कहौ धरम कव कीन ॥ ८ ॥
वालपने विद्या पढ़ै, जोवन संजमलीन ।
वृद्धपने संन्यास ग्रहि, करै करमकौ छीन ॥ ९ ॥
जाहर जगत विलात है, नाहर जमसुख माहिं ।
ता हरकै हूजै सुखी, चाह रहै कछु नाहिं ॥ १० ॥
भमता जीव सदा रहै, ममता रत परजाय ।
समता जव मनमैं धरै, जम तासौं डर जाय ॥ ११ ॥

लोभसैन विनसै भलौ, रमा विसन सविमार ।
जैत करन सुनरक तजै, रंचा[1] जगत मग चार (?) १२
जैसैं विषै सुहात है, तैसैं धर्म सुहाय ।
सो निहचैं परमारथी, सुख पावै अधिकाय ॥ १३ ॥

सोरठा ।

सम्यक अरु साचार, सज्जनता अरु सील गुन ।
मागैं मिलैं न चार, पूरवले पुन्नों विना ॥ १४ ॥
जे न करैं दस चार, ते बारह पच-पन कहे ।
जे हैं छप्पन ठार, आठ आठ पद सिद्धकौं ॥ १५ ॥

दोहा ।

जैनधर्म सब धर्मपै, सोभै तिलक समान ।
आन धर्म लागैं नहीं, ज्यौं पटवीजन भान ॥ १६ ॥

चौपई ।

विविध प्रकार राजकौं त्याग, जिन सिव साधौ ध्यान समाज ।
भिच्छा मांगि उदर तू भरै, अपनौ काज न काहे करै १७

दोहा ।

[1]चिंता चिता दुहू विषैं, विंदी अधिक सदीव ।
[1]चिंता चेतनिकौं दहै, चिता दहै निरजीव ॥ १८ ॥
'देहु' वचन यह निंद है, 'नाहिं' वचन अति निंद ।
'लेहु' वचन सुभरूप है, 'नाहिं' महा सुभ इंद ॥१९॥
जुगल राग अरु दोपकी, हानि करौ बुधवंत ।
रुकै करम सिव पाइयै, यह 'जुहार' विरतंत ॥ २० ॥

---

१ दूसरी तीसरी प्रतिमें 'रचा गमत (?) मग चार' पाठ है ।
२ जुगनू या खद्योत ।

वन वन होत न कलपतरु, तन तन बुध न अगाध ।
फल फल होत न मन सहत, जन जन, होत न साध २१
सुगुन वढ़ै अभ्याससौं, भाग वढ़ै नहिं कोय ।
कान वढ़ावै जोपिंता, आंख वड़ी क्यौं होय ॥ २२ ॥
निसिका दीपक चंद्रमा, दिनका दीपक भान ।
कुलका दीपक पुत्र है, तिहुं-जगदीपक ग्यान ॥ २३ ॥
दोप बुरे सबके लगैं, आतम दोप सुहाय ।
धूआं सवहीका बुरा, अगर धूम सुखदाय ॥ २४ ॥
घरकी सोभा धन महा, धनकी सोभा दान ।
सोभै दान विवेकसौं, छिमा विवेक प्रधान ॥ २५ ॥
एक समैमैं सव लखा, ऐसा समरथ सोय ।
आगैं पीछैं सो लखै, जो दृगहीना होय ॥ २६ ॥
पूरन घट वोलै नहीं, अरध भए छलकंत ।
गुनी गुमान करै नहीं, निरगुन मान करंत ॥ २७ ॥
मैं मधु जोखौं नहिं दियौ, हाथ मलै पछिताय ।
धन मति संचौ दान दो, माखी कहै सुनाय ॥ २८ ॥
कला बहत्तरि पुरुपकी, तामैं दो सिरदार ।
एक जीवकी जीविका, दूजैं जी-उद्धार ॥ २९ ॥
सोम सुक्र गुरु चंद सुभ, मंद भौम रवि भान ।
बुद्ध उभै सुर प्रात सुभ, कहै सुरोदय ग्यान ॥ ३० ॥
घर वसि दान दियौ नहीं, तन न कियौ तप लेस ।
'जैसैं कंता घर रहे, तैसैं गए विदेस' ॥ ३१ ॥

---

१ स्री ।

नर भौ पायौ धरमकौं, किया अधर्म वनाय।
'विढते(?) कारन आनकैं, पूंजी चले गमाय' ॥ ३२ ॥

चलौ भविक तहां जाइयै, जहां वसत जिनराज।
दुःखनिवारन सुखकरन, 'एक पंथ दो काज' ॥ ३३ ॥

कर भाजन कूआ निकट, गुन विन लहै न नीर।
सो गुन क्यौं नहिं धारियै, जो वुधि होय सरीर ॥३४॥

तन वल धन वल कपट वल, टाल वांह-वल जोय।
अजस पापतैं ना डरै, पंच कहावै सोय ॥ ३५ ॥

पंच परम पद नित जपै, पंचेंद्री सुख टारि।
पंचनके पीछै चलै, पंच वही सिरदार ॥ ३६ ॥

एक कनक अरु कामिनी, ए दोनौं दिढ़ वंध।
त्यागैं निहचैं मोख है, और वात सव धंध ॥ ३७ ॥

मान सुधा रस दूरि करि, दान छुधा रस देय।
ध्यान छुधारस ठानिकैं, ग्यान सुधारस पेय ॥ ३८ ॥

समरथ हैं ते मीत नाहिं, मीत न समरथ कोय।
दोनौं वातैं कठिन हैं, औषधि मीठी होय ॥ ३९ ॥

समरथ प्रीतम प्रभु वड़े, तिन सेवौ मन लाय।
इह पर भौ इन सम नहीं, मनवांछित सुखदाय ॥४०॥

कहूं सफल आदर विना, कहुं आदर फल नाहिं।
दोनौं लहियै धर्मतैं, वृच्छ सफल अरु छाहिं ॥ ४१ ॥

क्रोध समान न सत्रु है, छमा समान न मित्र।
निंदा सम न गिलान है, प्रभुकी सम न पवित्र ॥४२॥

सोरठा ।

कहुं विन ग्यान विराग, कहूं ग्यान वैराग विन ।
दोनौं विना अभाग, ग्यान विराग सहित सुधी ॥ ४३ ॥

चौपाई ।

देव धरम गुरु आगम मानि, चार अमोलक रतन समान ।
तजि मन क्रोध लोभ छल मान, भजि जिन साहिब मेरु समान

दोहा ।

पाप पुन्य दोनौं वसैं, दरव माहिं भ्रम नाहिं ।
'द्यानत' कीने पाप हैं, पुन्य अमानत माहिं ॥ ४५ ॥
वड़े वृच्छकौं सेइयै, पूरन फल अरु छाहिं ।
जो कदाचि फल दे नहीं, छाहिं वहुत तप नाहिं ॥४६॥
ताड़ ताप छेदन कसन, कनक-परीच्छा चार ।
देव धरम गुरु ग्रंथसौं, सम्यक परखौ सार ॥ ४७ ॥
दाना दुसमन हू भला, जो पीतम सनवंध ।
वड़े भाग्यतैं पाइयै, 'सोना और सुगंध' ॥ ४८ ॥
धन जोरैतैं ऊंच नहि, ऊंच दानतैं होत ।
सागर नीचैं ही रहै, ऊपर मेघ उदोत ॥ ४९ ॥
यह सिच्छा पंचासिका, कीनी 'द्यानतराय' ।
पढ़ैं सुनैं जे मन धरैं, सब जनकौं सुखदाय ॥ ५० ॥

इति शिक्षापंचाशिका ।

जुगलआरती ।

दोहा ।

(१)

पंचाचार छतीस गुन, सात रिद्धि चहुं ग्यान ।
गनधर पद बंदौं सदा, आचारज सुखदान ॥ १ ॥

चौपई ।

एक परम परतीति विख्याता, दो दिच्छा सिच्छाके दाता ।
तीन काल सामायिक धारी, चारौं वेद कथन अधिकारी ॥२॥
पंच भेद स्वाध्याय वतावैं, षट आवस्यक सव समझावैं ।
सातौं प्रकृति हनी दुखदानी, आठौं अंग अमल सरधानी ३॥
नौ विध प्रायचित्त सिखलावैं, दस विध परिगह त्याग करावैं ।
ग्यारै विथा जोग जिन मानैं, बारै अंग कथन सव जानैं ४
तेरै राग प्रकृति सव नासैं, चौदै जीवसमास प्रकासैं ।
पंद्रै मोह प्रकृति सव नासी, सोलै ध्यान-रीति परकासी ॥५॥
सत्रै प्रकृति लखै उदवेली, ठारै खै उपसम विधि झेली ।
परनै जिन उनईस बखानैं, वरतमान बीसौं जिन मानैं ६
इकइस गनत भेद सव सूझैं, बाइस भाव दसम गुन बूझैं ।
भवनत्रिक तेईस वताए, कामदेव चौवीस सुनाए ॥ ७ ॥
विकथा नाम पचीस वखानैं, छव्विस गुन दरवौंके जानैं ।
क्रोध भेद सत्ताइस भाखे, अट्ठाइस विषै सव नाखे ॥ ८ ॥
रतनत्रै उनतीस प्रकारं, तीसौं चौबीसी निरधारं ।
करम भेद इकतीस सिखाये, खेत विदेह वतीस सुहाये ॥९॥
तेतिस देव इंद्रके थानं, चौतीसौं अतिसै परिमानं ।
पैंतिस धनुष कुंथ तन वंदै, छत्तिस गुन पूरन अभिनंदै ॥१०॥

दोहा।

एक एक गुनमैं कहे, हैं अनेक समुदाय।
'द्यानत' प्रभुकों वंदतें, मोह धूरि झरि जाय ॥ ११॥

(२)

सोरठा।

ग्यारै अंग बखान, चौदै पूरब समझ सब।
गुन पच्चीस प्रधान, उपाध्याय वंदों सदा ॥ १ ॥

चौपाई।

पहला आचारांग बखानं, पद अठारै सहस प्रमानं।
दूजा सूत्रकृतं अभिलाखं, पद छत्तीस सहस गुरु भाखं २
तीजा ठानाअंग सुजानं, सहस बियालिस पद सरधानं।
चौथा समवायांग निहारं, चौसठि सहस लाख इक धारं॥३॥
पंचम व्याख्याप्रगपति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठा ग्यातृकथाविस्तारं, पांच लाख छप्पन हज़ारं ॥ ४ ॥
सातम उपासकाध्ययनंगं, सत्तरि सहस ग्यार लख भंगं।
अष्टम अंतकृतं दस ईसं, ठाई सहस लाख तेईसं ॥ ५ ॥
नवम अनुत्तर दस सु विसालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दसम प्रसनव्याकरन बिचारं, लाख त्रानवै सोल हज़ारं ६
ग्यारम विपाकसूत्र सुभाखं, एक कोरि चौरासी लाखं।
चार किरोर पंदरै लाखं, दो हज़ार पद गुरु सब भाखं ७
बारम दिष्टवाद अवधारं, तामैं पंच बड़े अधिकारं।
प्रकरनसूत्र प्रथम अनुयोगं, पूरब अरु चूलिका नियोगं ॥ ८॥
चारौं पद छप्पन हज़ारं, तेरै कोड़ी लाख अठारं।
पूरब प्रथम नाम उतपातं, ताके एक कोड़ि पद ख्यातं॥९॥

पूरव अग्रनीय जुग नामं, लाख छानवै पद अभिरामं ।
तीजा पूरव वीरजवादं, पद हैं सत्तर लाख अनादं ॥१०॥
चौथा पूरव अस्त-नास है, साठ लाख पद बुध प्रकास है।
पंचम पूरव ग्यान प्रवीनं, एक कोड़ि पद एक विहीनं ॥११॥
छठा पूरव सत्य वखानं, एक कोड़ि षटपद परवानं ।
सातम पूरव आतमवादं, पद छब्बिस कोड़ी सुख स्वादं १२
आठम पूरव करम सु भाखं, एक कोड़ि पद अस्सी लाखं ।
नौमा पूरव प्रत्याख्यानं, पद चौरासी लाख वखानं ॥१३॥
दसमा पूरव विद्या जानं, पद इक कोड़ि लाख दस ठानं ।
ग्यारम पूर्व कल्यान वखानं, पद छब्बिस कोड़ी परधानं १४
द्वादस पूरव प्राणावादं, पद किरोर तेरह अविखादं ।
तेरस पूरव क्रियाविसालं, नौ किरोर पद बहु गुनमालं ॥१५॥
चौदम पूरव बिंद त्रिलोकं, साड़े बार कोड़ि पद थोकं ।
साड़े पचानवै किरोरं, पंच अधिक पूरव पद जोरं ॥ १६ ॥
इकसौ बारै कोड़ि वखाने, लाख तिरासी ऊपर जाने ।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादस अंग सरव पद माने ॥ १७
क्यावन कोड़ि आठ ही लाखं, सहस चौरासी छैसै भाखं ।
साढ़ इकीस सिलोक बताए, एक एक पदके ए गाए ॥ १८ ॥
ए पचीसौं सदा विथारैं, स्वपर दया दोनों उर धारैं ।
भौ सागरमैं जीव निहारैं, धरम वचन गुन धार निकारैं ॥१९॥

दोहा ।

केवलग्यानि समान पद, सुतकेवलि जग माहिं ।
उपाध्याय द्यानत नमौं, बढ़ै ग्यान भ्रम नाहिं ॥ २० ॥

इति जुगलभारती ।

वैरागछत्तीसी ।

दोहा ।

अजितनाथ पद वंदिकैं, कहूं सगर अधिकार ।
साठि सहस सुत आप नृप, सरव चरम तन धार ॥१॥

चौपाई ।

नगर अजुध्याकौ चक्रेस, सुर नर खग वस दिपैं दिनेस ।
भूप गयौ वंदन जिनराय, परभौ मित्र मिल्यौ सुर आय ॥२॥
हम तुम हुते विदेह मझार, तुम थे मो भगनी-भरतार ।
तुमरे दोय पुत्र थे धीर, एक पुत्र खायौ जमवीर ॥ ३ ॥
दूजे सुतकौं देकरि राज, हम तुम तप लीनौं हित काज ।
उपजे सोलैं स्वर्ग मझार, तहां कियौ था तुमौं करार ॥४॥
पहलैं जा सो दिच्छा लेय, इहां रहै सो सिच्छा देय ।
सुतवियोग दिच्छा परनए, तातैं साठि सहस सुत ठए ॥५॥
भोगे भोग तृपति न लगार, दिच्छा गहौ न लावौ वार ।
समझ बूझ नृप रह्यौ लुभाइ, पुत्रमोह छोड्यौ नहिं जाइ ॥६॥
सुर जानौ इसकै संसार, फिरि आयौ मुनिकौ व्रत धार ।
जोवनवंत काम उनहार, रवि ससितैं दुति अधिक अपार ७
चारन रिद्धि महा तपवान, नृप वंद्यौ चैत्याले आन ।
पूछै भूप तज्यौ क्यौं गेह, ब्यौरा सरव कह्यौ धरि नेह ॥८॥
घर वंदीखाना सुत पास, नारी सकल दुःखकी रास ।
राजा सुनिकै रह्यौ लुभाइ, मोह फंदवस कछु न वसाइ ॥९॥
इक दिन सरव कुमारन आइ, कह्यौ भूपसौं वचन सुनाइ ।
तुमैं काम करना है जोय हमकौं आग्या दीजै मोय ॥१०॥

भूप कहै मेरैं यह काम, भोगौ भोग सरव सुखधाम।
गए विलखकैं सरव कुमार, फिरि आए सव ह्वै असवार॥११॥
हमकौं काम कहौ कुछ सार, हम तव ही करि हैं आहार।
जव हम छत्रीकुल जगमाहिं, आप कमाई लछिमी खाहिं १२
खंड छहौं मैं साधे सवै, मुझे साधना कुछ नहीं अवै।
कुमर कहैं अव होहि दयाल, हमैं काम करि करौ खुस्याल १३
भूप कहैं कैलास पहार, तहां वहत्तरि जिनगृह सार।
आगैं काल होयगा दुष्ट, तिनकी रच्छा कीजै पुष्ट ॥१४॥
दंड लेइ ता खाई करौ, गंगा लाइ तासमैं भरौ।
सुनत वचन सव चले कुमार, खाई करि जल भरि सुख धार१५
इस औसर सुर ह्वै फनधार, कियौ मूरछा सरव कुमार।
सुनी खवर मंत्रिनने सही, नृप सुत मोह जान नहिं कही १६
तव सुर भयौ वृद्ध द्विजराय, मृतक पुत्र इक कंठ लगाय।
धर्मभूप तू दीनदयाल, मेरौ पुत्र हन्यौ है काल ॥ १७ ॥
तेरे राज दुखी नहिं कोय, मम सुख होय करौ तुम सोय।
भूप कहै सुनि हो द्विजराय, जमसौं काहूकी न वसाय॥१८॥
सिद्ध विना सवहीकौं खाय, काल गालमैं है पटकाय।
जो तू जीता चाहै तेह, पुत्र मोह तजि दिच्छा लेह ॥१९॥
वांभन कहै सांच जो वात, तो सुनियै विनती विख्यात।
भूप कहै धोका नाहिं कोय, दिच्छा विन जम नास न होय २०
मेरा सुत इक मारा सार, मारे तेरे साठि हजार।
जो तुम लखौ अथिर जग धाम, दिच्छा क्यौं न धरौ नर स्वाम
मेरा वैरी तनक कृतांत, तेरा वैरी वड़ा न भ्रांत।
तुम क्यौं नहिं जीतौ जमराय, अमर होहु सव दुख मिटिजाय

दोहा।

बात कहन भूपरि गमन, करन खड़ग लगधार।
कथनी कथ करनी करैं, ते विरले संसार ॥ २३ ॥

चौपाई।

सुनत मूरछा नृपकों भई, सीतल-दरव-जोग मिटि गई।
भूपति भावै भावन चार, भौ-तन-भोग अथिर संसार २४

दोहा।

भूप कहै संसार सव, कदली वृच्छ समान।
केले माहिं कपूर ज्यौं, त्यौं यामैं निरवान ॥ २५ ॥
दुर्लभ नर भव पायकैं, जो मैं साधौं मोप।
तो मेरौ जीवन सफल, मिटै सरव दुखदोप ॥ २६ ॥
पुत्र मोह फांसी पर्यौ, मैं न लख्यौ हित काज।
अव सव फांसी कटि गई, दियौ भगीरथ राज ॥२७॥
जहां धरम दिढ़ जिन तहां, पहुंचे वहु नृप संग।
दिच्छा लीनी भावसौं, सुर हरख्यौ सरवंग ॥ २८ ॥

चौपाई।

गयौ जहां थे साठि हजार, किये सचेतन सरव कुमार।
पिता वारता सवसौं कही, मैं तुम कुलकौ प्रोहित सही ॥२९॥

सोरठा।

धन्य हमारे तात, राज काज तजि वन वसे।
हम हूं जाय विख्यात, पिता किया सोई करैं ॥ ३० ॥

चौपाई।

सव कुमरन तव दिच्छा लई, देव प्रगट ह्वै वानी चई।
हम कीनौ अपराध अपार, छमा करौ तुम सव मुनि सार ३१

मुनि बोले सब जगत टटोय, तुम सम उपगारी नहिं कोय।
भोग कीचतैं सर्व निकार, धरे मोखमैं धनि तू यार ॥३२॥
मधुर कठिन दो बात बनाय, करै धरम उपदेस सुनाय।
सो पीतम कहियै सिरदार, इस भौ पर भौ सुखदातार ३३

दोहा।

नरम कहै करड़ी कहै, करै पाप उपदेस।
सो वैरी तातैं बढ़ै, दोनों जनम कलेस ॥ ३४ ॥
देव सुखी थानक गयौ, सब मुनि करि तप घोर।
करम काटि सिवपुर गए, वंदत हों कर जोर ॥ ३५ ॥
सगर-विरागछतीसिका, हेत भवानीदास।
कीनी द्यानतरायनैं, पढ़ौ सबन सुखरास ॥ ३६ ॥

इति वैरागछत्तीसी।

वाणी-संख्या ।

दोहा ।

वंदों वानी वरन जुग, वरग किये पद जास ।
अच्छर एक घटाइके, अंग उपंग प्रकास ॥ १ ॥
'नेमिचंद' मुनिराजपद, वंदों मन वच काय ।
जस प्रसाद गिनती कहूं, जैनवचन-समुदाय ॥ २ ॥

चौपई ।

अच्छर दोय गनतके काज, राखे भाखे श्रीजिनराज ।
तिनको वरग फलै विसतार, एक वरगसों एक निहार ॥३॥
तातैं लीजे अच्छर दोय, वरग छहों इस विध अवलोय ।
पहला वरग चार परवान, दूजा सोलै वरग बखान ॥४॥
तीजा दोसै छप्पन अंक, भाखों चौथा वरग निसंक ।
पैंसठ सहस पांचसै धार, छत्तिस अच्छर अधिक निहार ॥५॥
चार सतक उनतीस किरोर, लाख पचास एक कम जोर ।
सतसठि सहस दुसै छानवै, पंच वरग गिनती यह ठवै ॥६॥

दोहा ।

इक लख चौरासी सहस, चौसै सतसठि जान ।
इनको कोड़ाकोड़ि करि, आगें सुनो बखान ॥ ७ ॥
लाख चवालिस जानियें, सात सहस सै तीन ।
सत्तर एते कोर हैं, और कहूं परवीन ॥ ८ ॥
लाख कहे पचानवे, सहस एक पंचास ।
छ सै सोलै गनतका, छठा वरग परकास ॥ ९ ॥

---

१ अंकोंमें यथा—१८४४६७,४४०७३७०,९५५१६१६ ।

बीस अंककी दूसरी, गनती कहुं समुझाय ।
सावधान ह्वै कै सुनौ, सब संसै मिटि जाय ॥ १० ॥

सोरठा ।

विंजन हैं तेतीस, आदि ककार हकार लौं ।
स्वर हैं सत्ताईस, ह्रस्व पुलत दीरघ नमौं ॥ ११ ॥
जोगवहा हैं चार, अं अः ✕क ✕प परगट वरन ।
चौसठि जैन मझार, आनमती भाखैं कमी ॥ १२ ॥
दीरघ ऋ लृ नहिं संसकृत, देस भाषमें जान ।
ए ऐ ओ औ ह्रस्व ए, प्राकृत भाषा मान ॥ १३ ॥
मूल वरन चौसठि कहे, अरु संजोग अनेक ।
ते अच्छर पुनरुक्त सब, परमागम यह टेक ॥ १४ ॥
एई चौसठि वरनकौं, भिन्न भिन्न करि राख ।
इक इक पर दो दो धरौ, गुनौं परस्पर साख ॥ १५ ॥

चौपई ।

पहले दो दूजे दो चार, तीजे दो गुन आठ निहार ।
चौथे सोलै पांच छतीस, छट्ठे चौसठि कहे गनीस ॥१६॥
सात गिनौं सौ अट्ठाईस, आठैं दो सै छप्पन दीस ।
इस विध चौसठि लौं गिन सार, बीस अंक उपजैं निरधार १७

दोहा ।

इक वसु चौ चौ पट सपत, चौ चौ नभ सत तीन ।
सत नभ नौ पन पंच इक, पट इक पट गिन लीन ॥१८॥
लीने थे दो एककै, पूरव गनती काज ।
सों या माहिं कमी करौ, यौं भाख्यौ मुनिराज ॥१९॥

---

१ यथा अंकोंमें—१८ ४४६७४४०७३ ७०९५५१६१६ ।

बीस अंक गिनती विषें, छै सै सोलै अंत।
एक घटा बाकी रहे, छै सै पंद्रे संत ॥ २० ॥
इक वसु चौ चौ षट सपत, चौ चौ बिंदी सात।
तिय सत नभ नौ पंच पन, इक पट इक पन ख्यात ॥२१॥
अब इनके पद बरनऊं, सो पद तीन प्रकार।
प्रथम अरथ परमान विय, त्रितिय मध्य पद धार ॥२२॥
जेते अच्छर जोरिकें, कहं परोजन नाम।
धरम करौ यौं आदि दे, प्रथम अरथ पद धाम ॥२३॥

सोरठा।

नमः समयसाराय, आठ वरनतें आदि दे।
सो प्रमान पद गाय, भूपर परगट देखियें ॥ २४ ॥

दोहा।

इक पट तिय चौ आठ तिय, नभ सत वसु वसु आठ।
ए अच्छर ग्यारं करं, कह्यौ मध्यपदपाठ ॥ २५ ॥

चौपई।

सोलै सै चौंतीस किरोर, लाख तिरासी ऊपर जोर।
सात सहस आठ सै वखान, अट्ठासी अच्छर पद मान ॥२६॥

दोहा।

बीस अंक इक पांचलौं, इक पद ग्यारं अंक।
भाग दिए कितने भए, पद गन लेहु निसंक ॥ २७ ॥
एक एक दो आठ तिय, पंच आठ नभ सुन्न।
पंच सकल पद वंदना, कीजे लीजे पुन्न ॥ २८ ॥

---

१ यथा—१८४४६७४४०७३ ७०९५५१ ६१५।

सोरठा ।

इक सौ बारै कोर, लाख तिरासी जानियैं ।
सहस अठावन जोर, पंच अधिक पद होत हैं ॥ २९ ॥
वसु नभ इक नभ आठ, एक सात पन वरन वसु ।
बाकी राखा पाठ, यातैं हुवा न एक पद ॥ ३० ॥
आठ कोड़ि इक लाख, आठ सहस अरु एक सौ ।
पचहत्तर हू भाख, ए अच्छर बाकी रहे ॥ ३१ ॥
पदकै द्वादस अंग, कीनैं गौतम स्वामिने ।
चौदै भेद उपंग, ते बाकी अच्छरनिकै ॥ ३२ ॥

चौपई ।

द्वादस चौदस अंग उपंग, भद्रबाहु जानैं सरवंग ।
नाम मात्र हूं बरननि करौं, अदभुत धीरज हिरदै धरौं ॥३३॥
पहला आचारांग प्रधान, तामैं जतिआचार विधान ।
सहस अठारै पद हैं तास, वंदन करौं क्रिया परकास ॥३४॥
सूत्रक्रान्त है दूजा अंग, धर्मक्रियाके सूत्र प्रसंग ।
पद छत्तीस हजार प्रमान, वंदन करौं जोरि जुग पान॥३५॥
तीजा ठानाअंग विसेख, तामैं दरव थान बहु पेख ।
एक जीव जग सिध द्वै भेद, उतपति वै ध्रुव तीन निवेद॥३६॥
गतिसौं चार भावसौं पांच, चौ दिस अध ऊरध षट सांच।
सात भंग बानीतैं सात, इस प्रकार बहु थानक बात ॥३७॥
पुदगल एक खंध अनु दोय, सरव दरव थानक यौं जोय ।
सहस बियालिस पद अवधार, वंदौं सुद्ध थानदातार ॥३८॥
चौथा समवायांग विसाल, तहां कथन सम बहुविध भाल ।
दरव खेत काल अरु भाव, जुदे जुदे बरनौं विवसाव ॥३९॥

दरवित धरम अधर्म समान, खेत पंच पैंताले जान ।
सरवारथ सिध सातम जान, तेतिस सागर काल समान ४०
केवल ग्यान बराबर जान, केवल दरसन भाव समान ।
पद इक लख चौसठि हजार, वंदौं मनमें समता धार ॥४१॥
व्याख्याप्रगपति पंचम अंग, ताके भेद कहौं सरवंग ।
जीव अस्तिकौं क्यौं करि नास, किह् विध नित्य अनित्य प्रकास
साठि हजार प्रसनके काज, सब उत्तर व्याख्यान समाज ।
अठाईस सहस द्वै लाख, पद वंदौं उत्तर रस चाख ॥ ४३ ॥
धर्मकथा है छठा नाम, रतनत्र दसलच्छन धाम ।
पांच लाख छप्पन हजार, पद वंदौं मैं धरम विचार ॥४४॥
सातम उपासकाअध्यैन, तामैं स्रावककी विधि ऐन ।
पूजा दान संघ उपगार, ग्यारैं प्रतिमा वरनन सार ॥४५॥
अनाचार अतिचार विचार, घरकी सब किरिया विसतार।
ग्यारैं लाख छपन हजार, पद वंदौं स्रावकपदकार ॥४६॥

दोहा ।

अंतकृतंदस अष्टमा, अंग कहे पद तास ।
तेईस लाख वखानियैं, सहस अठाइस भास ॥ ४७ ॥
इक इक जिन वारैं भयौ, दस दस गुन उपसर्ग ।
सहि सहि सब सिवपुर गए, कथन सकल रिपिवर्ग ॥४८॥
अनुत्तरोऽपपाददस, नौमा अंग वखान ।
लाख वानवै पद कहे, सहस चवालिस जान ॥ ४९ ॥
दस दस मुनि उपसर्ग सहि, पहुंचे पंच विमान ।
एक एक जिनके समै, तिनकौ कथन विनान ॥ ५० ॥

चौपई।

प्रसन व्याकरण दसमा अंग, ताके भेद सुनौ वहु रंग।
दूत प्रश्न सुनि भाखै वात, धन कन लाभ अलाभ विख्यात५१
सुख दुख जनम मरन जय हार, और भेद सुनि चार प्रकार।
अच्छेदिनी थपै निज धर्म, विच्छेपिनी हरै पर मर्म ॥५२॥
धर्मप्रभावक संवेजनी, भव दुख उदास निरवेजनी।
लाख तिरानू सोल हजार, पद वंदौं संदेह निवार ॥ ५३ ॥
विपाकसूत्र ग्यारमा देख, कर्म उदैकी वात विसेख।
तीव्र मंद सुभ असुभ सुभाख, एक कोरि चौरासी लाख॥५४॥
ग्यारै अंग कहे समझाय, नाम अर्थ पद संख्या गाय।
चार किरोर पंदरै लाख, दो हजार सवके पद भाख ॥५५॥
मिथ्याद्दष्टी वहु विध जीव, झूठ धर्मसैं मगन सदीव।
जान तीनसै त्रेसठ जात, थोरे माहिं कहूं सव वात ॥५६॥
किरियावाद असी सौ जीय, अक्रियावादी चौरासीय।
अग्यानवादी सतसठि दीस, विनैवादधारी वत्तीस ॥ ५७॥
सवकौं जीतै नै समझाय, विविध भांति वहु जुगति उपाय।
सोई दिष्टवाद है अंग, द्वादसमा जानौं वहु भंग ॥ ५८ ॥

सोरठा।

इक सौ आठ किरोर, अड़सठ लख छप्पन सहस।
पंच अधिक पद जोर, कहे वारमैं अंगके ॥ ५९ ॥
पंच भेद हैं तास, प्रथम परकरन सूत्र विध।
प्रथमान जोग भास, पूरव गन अरु चूलिका ॥ ६० ॥
पंच भेद परकर्न, ससि रवि जंवूद्वीप भनि।
दीप उदधि सुनि कर्न, व्याख्याप्रगपती सहित ॥ ६१ ॥

चौपई ।

चंद्रप्रगपती मुनों बखान, ससि ग्रह नछत्र तारे जान ।
आव काय गति इंद निहार, वत्तिस लाख पांच हजार ॥६२॥
सूर्यप्रगपती माहिं विचार, देवी देव सकल परिवार ।
सूरजविंवतना विस्तार, पांच लाख पद तीन हजार ॥६३॥
जंबूद्वीप प्रगपती जान, मेरु कुलाचल आदि बखान ।
तीन लाख पच्चीस हजार, वंदों चैत्याले सिर धार ॥ ६४ ॥
दीप उदधि प्रगपत्ती सोय, असंख्यातकी कथनी होय ।
नाम मानि वरनन पद सार, बावन लाख छतीस हजार॥६५॥
व्याख्याप्रज्ञप्ती है नाम, जीव अजीव दरव अभिराम ।
रूप अरूप विंव पद दीस, चौरासी लख सहस छतीस ॥६६॥

दोहा ।

प्रथम भेद परकरन यह, पद इक कोर बखान ।
लाख इकासी जानियें, सहस पंच परवान ॥ ६७ ॥

चौपई ।

सूत्र भेद दूजौ परवान, जीव अवंध अकरता जान ।
सुपरप्रकासक वहु विध भाख, याके पद अठासी लाख ॥६८॥
प्रथमानजोग तीजा जथा, त्रेसठ पुरुष सलाका कथा ।
नाम काय थिति भेद प्रकास, पंच हजार कहे पद तास ६९
पूरव चौथा भेद बखान, ताके चौदे नाम सुजान ।
साढ़े पंचानवे किरोर, पंच अधिक सब पदका जोर ॥७०॥
प्रथम कह्यौ पूरव उतपात, एक कोरि पद कहे विख्यात ।
उतपत व्यय ध्रुव तीनों काल, नौ विध दरव भेद बहु साल७१

अग्रनीय दूजौ अभिराम, तहां सुनैं दुरनैं वहु नाम ।
भेद सात सै तिनके कहे, लाख छानवैं पद सरदहे ॥ ७२ ॥
तीजा वीरजवाद विसाल, निजबल परबल जुग बल भाल।
खेत काल तप भाव अपार, सत्तर लाख कहौं पद सार ॥७३॥
चौथा अस्तिनास्ति है नाम, तामैं सप्तभंग अभिराम ।
दर्व अस्ति साधनिकौं कहे, साठि लाख पद पंडित गहे ॥७४॥
पंचम ग्यानप्रवाद विधान, पांच ग्यान तीनौं अग्यान ।
संख्या विषै रूप फल जोर, एक घाटि पद एक किरोर ॥७५॥
छठा सत्य परवाद विचार, द्वादस भाषाकौ अधिकार ।
दस विध सत्य वचन तहं कहे, एक कोर पट पद सरदहे॥७६॥

दोहा ।

आतम प्रवाद सातमा, पूरव सबतैं जोर ।
जीव भाव अधिकार बहु, पद छब्बीस किरोर ॥ ७७ ॥

चौपई ।

कर्मप्रवाद नाम आठमा, ग्यानावरनादिककी जमा ।
सत्ता बंध आदि बहु भाख, एक कोर पद अस्सी लाख ॥७८॥
नौमा पूरव प्रत्याख्यान, पापक्रियाकौ त्याग विधान ।
भेद संघनन पालन काज, पद चौरासी लाख समाज॥ ७९॥
दसमा पूरव विद्या भाख, पद इक कोरि कहे दस लाख ।
लघु सात सै पांच सै महा, विद्या अष्ट निमित सत्र कहा॥८०॥
कल्यानवाद ग्यारमा पेख, पंच कल्यानक कथन विसेख ।
षोड़सकारन भावन जहां, पद छैवीस कोर हैं तहां ॥८१॥
द्वादस पूरव प्रानावाद, इडा पिंगला सुषमना स्वाद ।
अंग उपंग प्रान दस भेद, तेरह कोड़ लाख पद वेद ॥८२॥

तेरम पूरब क्रियाविसाल, कला बहत्तरि कही रसाल ।
चौंसठ गुन नारीके कहे, सील भेद चौरासी लहे ॥ ८३ ॥
गरभ आदि सौं आठ प्रकार, सम्यक भेद पचीस प्रकार ।
नौ किरोर पद जग व्योहार, जिनवानी सबतें सिरदार ॥८४॥
बिंद त्रिलोकसार चौदहां, लोक अलोक कथन है जहां ।
अकृत अनादि अनंत प्रकास, बारै कोरि लाख पंचास ॥८५॥

दोहा ।

पूरब चौथे भेदका, कह्यौ सकल व्यौहार ।
नाम चूलिका अब कहूं, पंचम भेद विचार ॥ ८६ ॥

चौपई ।

जल थल माया नभ अरु रूप, पंच भेद चूलिका अनूप ।
पद दस कोड़ि लाख उनचास, सहस छियालिस बरन्यौ तास

सोरठा ।

दो किरोर नौ लाख, सहस नवासी दोय सै ।
एक एकके भाख, पांचौंके पद एकसे ॥ ८८ ॥

चौपई ।

नाम जलगता को आरंभ, जलमैं मगन अगनको थंभ ।
अगनि माहिं परवेस निकार, मंत्र जंत्र अरु तंत्र विचार ॥८९॥
नाम थलगता कहियै सोय, मेरु कुलाचलमैं गम होय ।
सीघ्र गमन भुवमैं परवेस, मंत्रादिक किरिया उपदेस ॥९०॥
मायागता नाम है तास, इंद्रजाल विक्रिया प्रकास ।
मंत्र जंत्र तप भेद बखान, जिनवानी सबतें परधान ॥९१॥
नाम अकासगता है तहां, व्योम गमन बहुविध है जहां ।
जप तप क्रिया अनेक प्रकार, उपजै चारनरिद्धि निहार ॥९२॥

रूपगता है ताकौ नाम, हयगय आदि रूप अभिराम ।
चित्र काठ अरु लेप अनेक, धातवाद रसवाद विवेक ॥९३॥

सोरठा ।

द्वादस अंग सरूप, पदसंख्या पूरा भया ।
वाहज अंग अनूप, सो चौदै विध वरनऊं ॥ ९४ ॥

चौपई ।

इहां पदनिकी संख्या नाहिं, थोरे अच्छर हैं इन माहिं ।
आठ किरोर अधिक कछु भने, चौदै वाहज अंगनितने ॥९५॥
पहला सामायिक है सोय, समभावनिमैं आयक होय ।
नाम थापना दरवित भाव, खेत काल पट भेद लखाव॥९६॥
दूजा स्तव कहिये है सोय, चौबीसौं जिनकी थुति होय ।
तीजा भेद वंदना जान, एक जिनेस नमन विधि ठान॥ ९७॥
चौथा प्रतिक्रम कहियै सोय, किया दोष निरवारैं जोय ।
पंचम विनै पंच परकार, ग्यान दरस व्रत तप उपचार ॥९८॥
छठा कृतकर्म क्रिया विसाल, पंच परम गुरु भगत त्रिकाल ।
सातम दसवैकालिक कहा, मुनि अहार विध सुध सरदहा ९९
आठम नाम उत्तराध्यैन, सब उपसर्ग परीसै जैन ।
नौमा नाम कल्प व्यौहार,मुनि विधि गहन अवध परिहार१००
कलपाकलप दसम लख लेहु, सिख्या कथन कहा गुन गेहु ।
दरवित खेत काल अरु भाव, मुनिकौ जोग अजोग लखाव
महाकलप ग्यारम अभिधान, साध क्रिया उतकिष्ट प्रधान ।
पुंडरीक द्वादसम बखान, चउविध सुर उपजनि तप दान ॥
तेरम नाम महापुंडरीक, इंद्र उपजनि क्रिया तप लीक ।
चौदम नाम निषध परवान, दोष प्रमाद त्याग गुनखान ॥

दोहा ।

चौदे वाहज अंग ए, अगले वारह अंग ।
वीस अंककी गिनतिका, पूरन भया प्रसंग ॥ १०४ ॥
मनपरजै मति औधिकी, केवल संख्या नाहिं ।
सुतकेवलि केवल कह्यौ, बड़ौ ग्यान जग माहिं १०५
लिंगज सुत अच्छररहित, सवदज अच्छर रूप ।
दोय भेद सुत ग्यानके, सवदज सुत सुभरूप ॥ १०६ ॥

चौपई ।

विकल चतुक एकेन्द्री माहिं, लिंगज सुतमैं सम्यक नाहिं ।
चहुं गति सैनी सवदज ग्यान, उपजै सम्यक दरस प्रधान ॥
स्रीजिन गुन अनंत भंडार, ओंकार रूप धन सार ।
इच्छा विना अनच्छर झरै, अच्छरमैं ह्वै संसै हरै ॥१०८॥
धुनि समझैं गनधर भ्रम नाहिं, और सुनैं निज भाखा माहिं ।
प्रभुकौ कथन समझ गनधार, सो गनती को लखै अपार १०९
जो गनधरने रचना करी, सो वहु हम कहं तक विस्तरी ।
यामैं भूल चूक जो होय, वुध जन सोध लीजिये सोय ११०
रवि ससि दीपक तम नहि हरै, अंतर तमवानी छै करै ।
सो वानी नित करौ उदोत, हमैं तुमैं परमातम जोत १११

दोहा ।

द्यानत वानी कथनतैं, वढ़ै ग्यान घट माहिं ।
ज्यौं नैननितैं देखियै, घट पट धोखा नाहिं ॥ ११२ ॥

इति वानीसंख्या ।

पल्ल-पचीसी ।

दोहा ।

कलप अनंतानंत लौं, रुलै जीव बिन ग्यान ।
सम्यकसौं सिवपद लहै, नमौं सिद्ध भगवान ॥ १ ॥
जो कोई पूछै इहां, एक कलपका काल ।
कितना सो ब्यौरो कहौं, कहौं सुनौं तजि लाज ॥ २ ॥

चौपई ।

एक कलपके सागर कहे, कोड़ाकोड़ बीस सरदहे ।
इक सागरके पल्ल बखान, कोड़ाकोड़ी दस परवान॥३॥

दोहा ।

तीन भेद हैं पल्लके, प्रथम पल्ल 'व्यौहार' ।
दूजा पल्ल 'उधार' है, तीजा 'अद्धा' धार ॥ ४ ॥

सोरठा ।

प्रथम रोम गिन देह, दूजा दीप उदधि गिनै ।
तीजा भौ-तिथि एह, चहु गति जिय बस करमके ॥५॥

दोहा ।

प्रथम पल्ल व्यौहारकौं, कहूं जिनागम जोय ।
अंक पंच चालीसकी, गनती जातैं होय ॥ ६ ॥

सवैया-इकतीसा ।

नभका प्रदेस रोकै पुद्गल दरब अनूं,
औधिग्यानी देखै नैनगोचर न सोई है ।
अनंत अनंत मिलि खंध सन्नासन्न नाम,
रजरैन त्रटरैन रथरैन हो‍ई है ॥

उत्तम भू मध्यम जघन कर्मभूमि वाल,
लीख तिल जौं अंगुल चार रास जोइ है।
सन्नासन्न अंगुलौं चारं आठ आठ गुनें,
जिनवानी जानी जिन तिन संस खोई है ॥ ७ ॥

दोहा।

भोगभूमि उत्तम विषें, उपजेके सिरवाल।
जनम सात दिनके कहे, महामहीन रसाल ॥ ८ ॥
तिनसेती कूवा भरो, जोजन एक प्रमान।
अति सूच्छम सत्र कतरिकें, खंड होहि नहि आन ॥९॥
भोगभूमि उत्तम मधम, जघन करम भुवि लीख।
तिल जौ अंगुल आठ ए, भेद लेहु तुम सीख ॥ १० ॥
अंगुल हाथ धनुष कहे, कोस जु जोजन पंच।
तीन भेद पांचों लखे, संसै रहे न रंच ॥ ११ ॥
प्रथम नाम उत्सेध है, दूजा नाम प्रमान।
तीजा आतम नाम है, अंगुल तीन वखानें ॥ १२ ॥

सवैया इकतीसा।

वाल आदि गनती सो उतसेध अंगुलतें,
चारों गति देह नर्क स्वर्गके प्रसाद हैं।
यातें पांचसैं गुनेको अंगुल प्रमान तातें,
दीपोदधि सैल नदी जिनधाम आद हैं ॥
छहों काल वृद्ध हानि आतम अंगुल तातें,
भौन घट रथ छत्र आसन धुजाद हैं।
इसी भांति हाथ चाप कोस अरु जोजन हैं,
सबको लखैया जीव ताके गुन याद हैं ॥ १३ ॥

उत्तम सु भोगभूमि मेष वाल कोमल हैं,
मध्यम जघन्य कर्म भूमिनकौ चार है।
लीख तिल जौ अंगुल आठौं आठ आठ गुनै,
अंगुल चौवीसनकौ एक हाथ धार है॥
चारि हाथ एक चाप दो हजार चापनकौं,
एक कोस चारि कोस जोजन विचार है।
ऐसैं पांचसै गुनैकौ जोजन प्रमान एक,
ताकौं पल्लकूप गोल ढोलके अकार है॥ १४॥
वाल महा जोजन लौं गनती लंवाई करौ,
नव अंक पट सून्य सव पंद्रै दीस हैं।
लंवाई चौराईसेती गुनैं हाथ तीस अंक,
पंद्रेकी ऊंचाई गुनौ भए पैंतालीस हैं॥
गोलकी कसर काज उन्निस गुनो समाज,
चौविसका भाग देहु भाखत मुनीस हैं।
सत्ताईस अंक ठौर सुन्य पल्ल रोम कहे,
धन्न जैन वैन सव वैननिके ईस हैं॥ १५॥

८०५३०६२६८०००००० ॥ ६४ ८५१८३४६३४१३ ५१४२४००००००००००००० ॥ ५२२७५९५४० ७३५१९ ८०३४ ७३०६८०३२०००००००००००००००० ॥ ९९२ २८६३१२७३९६८७६२६५९८८२९२६०८००००००००० ००००००००० ॥ ४१३४५२२६३०३०८२०३१७७४९५ १२१९२०००००००००००००००००००॥ एते एकठे भए॥

सवैया इकतीसा।

एक महा जोजनके उतसेध अंगुल हैं,
अड़तीस क्रोड़ि लाख चालीस वताइए।

वीस लाख सत्तानूं सहस एक सौ बावन,
अंगुलके एते रोम दुहूंकौं फलाइए ॥
आठ कोड़ा कोड़ी पांच लाख तीस ही हजार,
सहस छत्तीस कोड़ि असी लाख गाइए ।
एही पंदरैंकौं घन किए अंक पैंतालीस,
एते काल जीव भम्यौ ऐसैं भाव भाइए ॥ १६ ॥

अंकनाम, अडिल ।

चौ इक तिय चउ पांच दोय पट तीन हैं ।
नभ तिय नभ वसु दो नभ तिय इक कीन हैं ॥
सत सत सत चौ नौ पन इक दो इक कहे ।
नौ दो आगैं ठारैं सुन्न सरव लहे ॥ १७ ॥

सवैया इकतीसा ।

चार सैं तेरैंकौ पट बार कोटि पैंतालीस,
लाख सहस छव्वीस सत तीन तीन जी ।
पंच चारि कोडि आठ लाख वीस हैं हजार,
तीन सत सत्रै चार चार कोड़ी कीन जी ॥
सतत्तर लाख सहस उनंचास सै पंच,
बारहकौं तीन बार कोड़ा कोड़ी बीनजी ।
उनईस लाख वीस ही हजार कोड़ा कोड़ी,
पैंतालीस हैं अनादि भाखे न नवीन जी ॥ १८ ॥

दोहा ।

इक इक रोम निकारिए, सौ सौ बरस मझार ।
जब जब खाली कूप है, यही पल्ल व्यौहार ॥ १९ ॥

सवैया इकतीसा ।

सब रोमकौं फलाय एक एक न्यारौ करौ,
असंख्यात कोड़ि वर्षके समै फलाइए ।
एती एती रोम एक एक रोम पर राखौं,
सबकी गनतीकै उधार पल्ल गाइए ॥
कोड़ा कोड़ी पच्चीसके दीपोदधि राजू माहिं,
उद्धार रोम सौ सौ बरसमैं गिनाइए ।
सोई अद्धापल्ल दस कोड़ा कोड़ीके सागर,
ऐसी थिति भोगिकै कषाय न घटाइए ? ॥ २० ॥

चौपई ।

चहुगति माहिं रुला तू जीव, अधापल्ल थिति लही सदीव ।
तेतिस सागर नरक मझार, इकतिस सागर ग्रैवक धार ॥२१॥
जगमैं दुख सुख लहे अनेक, पायौ नाहीं ग्यान विवेक ।
सबमैं दुल्लभ नर अवतार, आय सुघाट चलै मतिहार ॥२२॥

दोहा ।

इस गिनतीका हेत यह, जानि होय वैराग ।
जो सुनिकै समझै नहीं, ताके बड़े अभाग ॥ २३ ॥
कही सुनी भोगी लखी, जिन यह थिति बहु भाय ।
सो हम जान्यौ आतमा, रहूं तास लौ लाय ॥ २४ ॥
गोमटसार निहारिकैं, भाषी द्यानत सार ।
भूलचूक यामैं कह्यौ, लीजौ संत सुधार ॥ २५ ॥

इति पल्लपचीसी ।

षट्गुणी-हानि-वृद्धि-वीसी ।

दोहा ।

संख असंख अनंत गुन, भए वृद्धि षट हान ।
सुद्ध अगुरुलघु गुनसहित, नमों सिद्ध भगवान ॥ १ ॥
पुग्गल धर्म अधर्म नभ, काल पंच जड़रूप ।
छहों दरव ग्यायक सदा, नमों सिद्ध चिद्रूप ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा ।

धर्म अधरम नभ एक एक दर्व सब,
काल असंख्यात दर्व चेतन अनंत हैं ।
पुग्गल अनंतानंत काहूकी न आदि अंत,
परजै उतपात वै गुन ध्रुववंत हैं ॥
जीव दर्व ग्यायक सरीर आदि पुग्गल है,
धर्माधर्म दर्व गति थिति हेत तंत हैं ।
व्योम ठौर देत काल नौ[1]-जीरन भाव हेत,
ऐसी सरधासौं संत भौ-जल तरंत हैं ॥ ३ ॥
एक एक दरवमें अनंत अनंत गुन,
अनंत अनंत परजाय पेखियत है ।
एक एक गुन माहिं अनंत अनंत भेद,
एक एक भेद न्यारे न्यारे देखियत है ॥
केई भेद काहू समै वृद्धिरूप परनमैं,
केई भेद काहू समै हानि लेखियत है ।
अद्भुत तमासा ग्यान आरसीमें प्रतिभासा,
द्यानत अखेत कर्मसेती भाखियत है ॥ ४ ॥

---

१ नवीन तथा जीर्ण (पुराना) करनेका कारण है ।

दोहा ।

अस्ति अमूरत अगुरुलघु, दर्व प्रदेस प्रमेय ।
वस्त अचेतन मूरती, चेतन दस गुन गेय ॥ ५ ॥

सवैया इकतीसा ।

दर्व खेत काल भाव चारौं गुन लियें अस्त,
परसंग वात सान(?) सदा गुन वस्त है ।
उतपात वै ध्रुव परनतसौं दर्व तत,
गढ़ै उड़ै नाहिं सो अगुरुलघु समस्त है ॥
दर्व गुन परजायकौ अधार परदेस,
आपकौं जनावै गुन परमेय लस्त है ।
मूरत अमूरत अचेतन चेतन दसौं,
गुन छहौं दर्वमाहिं जानैं भ्रम नस्त है ॥ ६ ॥
जीव माहिं चेतन अमूरत ए दोन्यौं गुन,
पुग्गलमैं मूरत अचेतन दो पाइए ।
अमूरत अचेतन ए दोऊ हैं तिहूं काल,
धर्माधर्म नभ काल चारौंमैं बताइए ॥
अस्त वस्त दरवतैं परमेय परदेस,
अगुरु लघु ए छहौं सबहीमैं गाइए ।
तातैं एक एक दर्व माहिं आठ आठ सधैं,
मुख्य गुन चेतनकौ ध्यान माहिं ध्याइए ॥ ७ ॥
जो तौ दर्व गुरु होय भूमैं वसि जाय सोय,
जो तौ दर्व लघु होय उड़ जाय तूल ज्यौं ।
ताहीतैं अगुरु लघु बड़ा गुन दर्व माहिं,
जातैं दर्व अविनासी सदा मेरुमल ज्यौं ॥

ताही गुनका विकार ताके और भेद धार,
केवलीके ग्यानमें विराज रहे धूल ज्यों ।
तिन्हें कहि सके कोय समझे सो बुध होय,
किंचितसे भाखत हों मिटै धर्म भूल ज्यों ॥ ८ ॥
जीवमें अनंत गुन तामें एक ग्यान नाम,
मूल पंच भेद भेद उत्तर अनंत हैं ।
दूजे गुन दर्सनके चार भेद मूल कहे,
उत्तर अनेक भेद लोकमें अनंत हैं ॥
तीजा गुन सुख सुखी चक्री जुगलिये जीव,
फनी इंद अहमिंद सिद्धजी महंत हैं ।
चौथा बल गज सिंघ चक्री देव जिनराज,
ऐसें ही अनंतकों जे ध्यावें तेई संत हैं ॥ ९ ॥
पुग्गल दरवमें अनंत गुन रुखा एक,
ताके बहु भेद धूल राख रेत मान हैं ।
दूजे चिकनेके भेद हैं अनेक रूप पानी,
छेरी गाय भैंसि ऊंटनीको दूध जान हैं ॥
तीजा गुन कड़वा है भेद निंब इंद्रायन,
विष और महाविष लोकमें निदान हैं ।
चौथा गुन मीठा गुड़ खांड़ सकरा पीयूष,
ऐसें ही अनंतनिसों मेरो ग्यान आन हैं ॥ १० ॥
दर्वमें अनंत गुन एक जीवमें अनंत,
एक असत भाव ताके चौदे गुनथान हैं ।
एक पुदगलमें अनंत चीज नाम कहे,
एक फास वेल काठ हाड़ औ पखान हैं ॥

चारौं दर्व माहिं तौ विभाव गुन जमा नाहिं,
सुध भाव गुन भेद साधैं बुधवान हैं ।
आतमके साधनकौं साधन बताए सब,
वस्त सिद्ध भए साध हेत दुखदान है ॥ ११ ॥
चार अंक भाग दोय गुण करैं सोलै होय,
नव भाग तीन गुन एक असी धन(?) हैं ।
सोलहकौ भाग चार गुनतैं दोसैं छप्पन,
पच्चिसका भाग पांच सवा छसैं गुन हैं ॥
छत्तिसका भाग षट गुन बार सैं छानवैं,
सौ भाग दस गुन दस हजार सुन हैं ।
संख्यात असंख्यात अनंत यौंही भाग गुण,
षट वृद्धि षट हानि जानत निपुन हैं ॥ १२ ॥
बारै अंक दोय भाग षट तीन भाग चार,
चार भाग तीन षट भाग दोय जाने हैं ।
बारै दुगुने चौबीस तिगुने छत्तीस दीस,
चौगुने अठतालीस पांच साठ ठान हैं ॥
इसी भांति उतकिस्ट मध्यम जघन्य भेद,
भागाकार गुनाकार भावनमैं माने हैं ।
आलसकौं टारि नैंक अंतर विचार देखौ,
परनाम भेद जान मिथ्याभाव भाने हैं ॥ १३ ॥
अनंत-भाग-वृद्धि औ असंख्यात-भाग-वृद्धि,
संख-भाग-वृद्धि संख-गुन-वृद्धि थानजी ।
असंख्यात-गुन-वृद्धि औ अनंत-गुन-वृद्धि,
अनंत-भाग-हानि असंख-भाग-हानजी ॥

संख-भाग-हानि संख गुनहानि असंख्यात,
गुन-हानि औ अनंत गुन-हानि मानजी ।
एई परनामनके बार भेद थूल कहे,
एक एक भेदमें अनेक भेद जानजी ॥ १४ ॥
काहूसमें संख-भाग भावनिकी वृद्धि होय,
काहू समें संख-गुन भाववृद्धि रिद्ध है ।
काहू समें असंख्यात-भाग भाववृद्धि होय,
काहू समें असंख्यात-गुन-वृद्धि सिद्ध है ॥
काहू सममें अनंत-भाग भाववृद्धि होय,
काहू सममें अनंत-गुन-भाव वृद्ध है ।
इसी भांति छहों भेद हानिकों लगाय लीजे,
धन्य ग्यान केवलमें सब बात सिद्ध है ॥ १५ ॥
जहां लों गिनै सो संख्यात अगिन असंख्यात,
जाको अंत नाहिं सो अनंत ठहराया है ।
संख भेद संखके असंखके असंख भेद,
जाहीके अनंत भेद सो अनंत भाखा है ॥
जातें भेद घाट होय भाग नाम कह्यो सोय,
जातें भेद बाढ़ होय सोई गुन गाया है ।
संख्यात असंख्यात अनंत भाग गुन पट,
वृद्धि हानि बारे भाव सूधा समझाया है ॥ १६ ॥
ग्यान गेय माहिं नाहिं गेय हू न ग्यान माहिं,
ग्यान गेय आन आन ज्यों मुकुर घट है ।
ग्यान रहै ग्यानी माहिं ग्यान बिना ग्यानी नाहिं,
दुहूं एकमेक ऐसें जैसें सेतपट है ॥

भाव उतपात नास परजाय नैन भास,
दरवित एक भेद भावकौ न वट है।
द्यानत दरव परजाय विकलप जाय,
तब सुख पाय जब आप आप रट है॥ १७॥
निहचै निहार गुन आतम अमर सदा,
विवहार परजाय चेतन मरत है।
मरना सुभाव लीजे जीव सत्ता मूल छीजै,
जीवरूप विना काकौ ध्यान को धरत है॥
अमर सुभाव लखै करुना अतीव होय,
दया भाव विना मोखपंथ को चरत है।
अविनासी ध्यान दीजै नासी लखि दया कीजै,
यही स्यादवादसेती आतमा तरत है॥ १८॥
षट गुनी हानि वृद्धि भाव हैं सुभावहीके,
सुद्धभाव लखैसेती सुद्धरूप भए हैं।
सरवथा कहनेकौं आप जिनराजजी हैं,
आचारज उवझाय साधु परनए हैं॥
कुंदकुंद नेमिचंद जिनसेन गुनभद्र,
हम किस लेखे माहिं सूधे नाम लए हैं।
द्यानत सवद भिन्न तिहूं काल मैं अखिन्न,
सुद्ध ग्यान चिन्न माहिं लीन होय गए हैं॥ १९॥

दोहा।

बुद्धिवंत पढ़ि बुधि बढ़ै, अबुधनि बुधि दातार।
जीव दरवकौ कथन सब, कथननिमैं सिरदार॥ २०॥

इति षट्गुणी हानिवृद्धि।

पूरण-पंचासिका ।

सवैया इकतीसा ।

नाथनिके नाथ औ अनाथनिके नाथ तुम,
तीनलोक नाथ तातैं सांचे जिननाथ हौ ।
अष्टादस दोष नास ग्यानजोतकौ प्रकास,
लोकालोक प्रतिभास सुखरास आथ हौ ॥
दीनके दयाल प्रतिपाल गुनगुनि-माल,
मोखपुर पंथिनकौ तुमी एक साथ हौ ।
द्यानतके साहब हौ तुमही अजायब हौ,
पिंड ब्रहमंड माहिं देखनिकौ माथ हौ ॥ १ ॥

चामरा-छंद (आठ रगण)

भान भौ-भावना ग्यान लौं लावना,
ध्यानकौ ध्यावना पावना सार है ।
स्वामिकौं अच्चिकै कामकौं वच्चिकै,
रामकौं रच्चिकै सच्चकौं धार है ॥
सट्ठकौं भेदिकै गट्ठकौं छेदिकै,
आठकौं वेदिकै खेद खैकार है ।
रोषकौं नट्ठकै दोषकौं भट्ठकै,
सोषकौं लट्ठकै अट्ठकौं जार है ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा ।

चाहत है सुख पै न गाहत है धर्म जीव,
सुखकौ दिवैया हित भैया नाहिं छतियां ।
दुखतैं डरै है पै भरै है अघसेती घट,
दुखकौ करैया भयदैया दिन रतियां ॥

लायौ है ववूलमूल खायौ चाहै अंव भूल,
दाहजुर नासनकौं सोवै सेज ततियां ।
द्यानत है सुख राई दुख मेरकी कमाई,
देखौ रायचेतनिकी चतुराई वतियां ॥ ३ ॥

सवैया तेईसा ।

को गुरु सार वरै सिव कौन, निसापति को किह सेव करीजै।
कौन वली किम जीवनको फल, धर्म करैं कव क्या अघ छीजै॥
कर्म हरै कुन कौन करै तप, स्वामिकौ सेवक कौन कहीजै।
द्यानत मंगल क्यौं करि पाइये, पारस नाम सदा जपि लीजै४
कौन वुरा तम कौन हरै, तजियै न कहा किहकौं तजि दीजै।
क्या न करै किहकौं न धरै, किहसूं लरियं किहमें न रहीजै॥
का सहुभिन्न चलै कि नहीं, व्रत स्वामिकौ देखिकै क्या उचरीजै
द्यानत काम निरंतर कौन सो, पारस नाम सदा जपि लीजै५
का सहु दान कहा उपजै अघ, को गृह ऊपर काहि पड़ीजै।
कौन करै थिर कैसे हैं दुर्जन, क्यौं जस कौन समान गनीजै॥
का कहु पालियै धर्म भजै किम, धर्म वड़ा कहु कौन कहीजै।
द्यानत आलस त्याग कहा सुभ, पारस नाम सदा जपि लीजै६

सवैया इकतीसा ।

निज नारि खोय पूछैं पसुपंछी वृच्छ सव,
तुम कहीं देखी सु तौ तीनलोक ग्याता है।
हर्नाकुस पेट फार्यौ कंस जरासिंधु मार्यौ,
ताकौं कहैं कृपासिंधु संतनिकौ त्राता है॥
वैल असवार दोय नार औ त्रिसूल धार,
गलमैं वघंवर दिगंवर विख्याता है।

ऐसी ऐसी बात सुनि हांसी मोहि आवत है,
सूरजमें अंधकार क्यौं करि समाता है ॥ ७ ॥
चारौं गति भाव चार सोलहौं कषाय 'सार',
तीनौं जोग 'पासे' ढारि दोष 'दाव' परै हैं।
जीवैं मरै कर्म रीत सुभा सुभ 'हार जीत'
संयोग वियोग सोई मिलि मिलि बिछुरै हैं॥
चवरासी लाख जोनि ताके चवरासी भौन,
चारौं गति विकथामें सदा चाल करै हैं।
चौंपरके ख्यालमें जगत चाल दीसत है,
पंचमकौं पाय ख्यालकौं उठाय धरै हैं ॥ ८ ॥
सुनि हो चेतन लाल क्यौं परे हौ भवजाल,
बीते हैं अनादि काल दीसत कंगाल हौ।
देखत दुख विकराल तिन्हीसौं तेरा ख्याल,
कछु सुध है संभाल डोलत बेहाल हौ॥
घरकी खबरि टाल लागि रहे और हाल,
विष गहि सुधा चाल तज दीनी बाल हौ।
गेह नेहके जंजाल ममता लई बिसाल,
त्यागिकै हूजै निहाल द्यानत दयाल हौ ॥ ९ ॥

सवैया तेईसा।

संग कहा न विषाद बढावत, देह कहा नहिं रोग भरी है।
काल कहा नित आवत नाहिं नें, आपद क्या न नजीक धरी है।
नर्क भयानक है कि नहीं, विषयासुखमैं अति भ्रांति करी है।
प्रेतके दीप समान जहानकौं, चाहत तो बुधि कौन हरी है १०

क्रोध सुई जु करै करमौंपर, मान सुई दिढ़ भग्न (?) बढ़ावै ।
माया सुई परकष्ट निवारत, लोभ सुई तपसौं तन तावै ॥
राग सुई गुरु देवपै कीजियै, दोष सुई न विषै सुख भावै ।
मोह सुई जु लखै सब आपसे, द्यानत सज्जन सो कहिलावै ११
पीर सुई पर पीर विडारत, धीर सुई जु कषायसौं जूझै ।
नीति सुई जो अनीति निवारत, मीत सुई अघसौं न अरूझै ॥
औगुन सो गुन दोष विचारत, जो गुन सो समतारस बूझै ।
मंजन सो जु करै मन मंजन, अंजन सो जु निरंजन सूझै १२
ध्यान सुई कछु चिंत करै नहीं, ग्यान सुई कछु बात न गूझै ।
दान सुई जु विवेकसौं दीजियै, जान सुई दुख जानकैं ऊझै ॥
बानि सुई सुभ ग्यान बढ़ै घट, ग्यान सुई परमैं नहिं मूझै ।
मंजन सो जु करै मन मंजन, अंजन सो जु निरंजन सूझै १३

मालिनी ।

कर कर नर धर्मं पर्म सर्मं प्रदाता,
हर हर नर पापं दुःख संताप भ्राता ।
यह जिन उपदेसं सर्व संसार सारं,
भवजलनिधि धारं जान चढ़ि (?) होहि पारं ॥१४॥

वसंततिलका ।

तूही जिनेस करुनाकर दीनबंध,
स्वामी त्रिलोकपति ईसुर ग्यानखंध ।
वंदौं त्रिकाल जगजाल निकाल मोहि,
दाता महंत भगवंत प्रसन्न होहि ॥ १५ ॥

सुन्दरी ।

रहित दोष अठारै देव हैं, गुरु सदा निरग्रंथ सु एव हैं ।
धरम श्रीजिनभाख प्रमान है, मुकतिपंथ यही सरधान है १६

भुजंगप्रयात ।

सहे दुःख नर्क निगोदं अपारं,
अजों नाहिं छांडत अक्ष विकारं ।
सुर्धुके विवेकी भए जात वारे,
भले जी भले जी भले प्राणप्यारे ॥ १७ ॥

करखा (सर्व लघु) ।

अथिर सब जगत बन तनक नहिं कहिं सरन,
चतुरगति दुख धरन हरन साता ।
इक सु अध उरध भुव अन सु तन अन सु तब,
असुच पुदगल अधुव तजत ग्याता ॥
ममत असरव करत निरममत सवर रत,
सुहित निरजर भरत धरत ध्याता ।
सुनत त्रिभुवन अचल गुनत अवगम अटल,
दुलभ अनभव अमल सिव प्रदाता ॥ १५ ॥

सवैया तेईसा ।

भूख लगै दुख होहि अनंत, सुखी कहिये किम केवल ग्यानी ।
खात त्रिलोकत लोक अलोककों, देखि कुदर्व भखै नहिं प्रानी
खायकै नींद करै सब जीव, न स्वामिकै नींदकी नाम निसानी
केवलग्यानी अहार करै नहिं, सांची दिगंबर ग्रंथकी वानी १९

जिनगुणसम्पत्ति मनके उपवास, छप्पय ।

षोड़सकारन जान, ठान पड़िवा व्रत सोलै ।
पंच कल्यानक सांच, पांच पांचै अघ छोलै ॥
दस जनमत दस ग्यान. बीस गन ग्यानी दसमी ।

चौदै गुन सुरकृत्य, वार दस चौदस धरमी ॥
गुन आठ प्रातहारजनिके, आठ अष्टमी कीजियै ।
द्यानत त्रेसठ उपवास कर, तीर्थंकर पद लीजियै २०

विश्वासघातभावत्याग, सवैया इकतीसा ।

भूमि कहै मोपै गिरि सागरकौ बोझ नाहिं,
कौलसेती टलै दुष्ट ताकौ महा भार है ।
दसरथ बोल सार रामकौं दियौ निकार,
राजनीति लंघी बात लंघी न करार है ॥
नख सिख अंगनिमैं एकै मुख गुनकार,
सांच वचन प्रभुजीकै भयौ ओंकार है ।
ऊंट वाड़ गाड़ी पाड़ चलता ही भला कहै,
ऐसे बे सरमके जीवनकौं धिकार है ॥ २१ ॥

धैर्य भाव ।

अंजनी सुसर सास मात तातनैं निकास,
सीता सती गर्भवती रामजीनैं छारी है ।
प्रदुमन सिला तलैं धर्यौ पाप ताप भर्यौ,
रामचंद वनवास महा त्रासकारी है ॥
पंडवा निकलि गए कैसे कैसे कष्ट भए,
सिरीपाल कोटी भट सह्यौ खेद भारी है ।
द्यानत बड़ौंका दुःख छोटनिकौं सीख कहै,
दुखमाहिं सुख लहै सोई ग्यानधारी है ॥ २२ ॥
दर्सनविसुद्धि विनै सदा सील ग्यान भनै,
संवेग सुदान तप साधकी समाधजी ।

वैयावृत अरहंतभक्ति आचारजभक्ति,
बहुश्रुतभक्ति प्रवचनभक्ति साधनी ॥
षट आवश्यक काल मारगप्रभाव चाल,
वातसल्य प्रतिपाल सोलहों अराधजी ।
तीर्थंकर कारन हैं कर्मके निवारन हैं,
मोखसुख धारन हैं टारन उपाधजी ॥ २३ ॥
उनसठि लाख सहस सत्ताईस चालीस,
कोड़ाकोड़ि वर्ष आदिनाथजीकी आव है ।
तीन कोड़ाकोड़ि ग्यारे लाख चौ सहस कोड़,
एते वर्ष ब्रह्मा आव लोकमें कहाव है ॥
उन्नीस लाख पचपनसैं पचपन ब्रह्मा,
आदिनाथ आवमें हुए मुए फलाव है ।
एक कोड़ाकोड़ि बहत्र लख असी हजार,
कोड़ि वर्ष बाकी रहे जानों धर्म न्याव है ॥ २४ ॥

सवैया तेईसा ।

इंद्र अनेक विवेककी टेक, तुही प्रभु एककों सीस नवावैं ।
मौलि महा मनि नैन दिखैं धन, लाल सुपेद नखों महि आवैं ॥
पाटल वर्न रमाघर चर्न, सरोज उभै गुन प्रीति बढ़ावैं ।
भौं रज नाहिं धरैं जड़भाव हरैं, तुमरैं सुख क्यों नहिं पावैं २५
बुद्धि कहै बहुकाल गए दुख, भूर भए कबहूं न जगा है ।
मेरा कह्यौ नहिं मानत रंचक, मोसौं बिगार कुनार लगा है ॥
देहु री सीख दया तुम जा बिध, मोहकौं तोरि दै जैम तगा है ।
गावहुंगी तुमरौ जस मैं, चलरी जिसपै निज पेम पगा है २६

धर्मप्रशंसा, सवैया इकतीसा ।

चिंतामन जान कहीं पारस पाखान कहीं,
कल्पवृच्छ थान कहीं चित्रावेलि पेखियें ।
कामधेनु रूप कहीं पोरसा अनूप कहीं,
बनी है रसायन जवाहर विसेखियें ॥
नृपकौ प्रताप कहीं चंद भान आप कहीं,
दीपजोति व्याप कहीं हेमरासि लेखियें ।
फैलि रह्यौ ठौर ठौर भेख गह्यौ औंर औंर,
एक धर्म भूप सब लोक माहिं देखियें ॥ २७ ॥

रतनौंकी खानि कहीं गंगाजल पानि कहीं,
सीत माहिं घाम पौन सीतल सुगंध हैं ।
बड़े वृच्छ फल छांहिं अतर गुलाब माहिं,
मेघकी भरन परै बहु मेवा खंध है ॥
तंदुल सुवास कहीं आभूषन रास कहीं,
अंबर प्रकास अति मोहकौ निबंध है ।
एक धर्मसेती सब ठौर जै जै कार होय,
ताही धर्म बिना घर बाहरमैं धंध है ॥ २८ ॥

नर्क पसुतैं निकास करै स्वर्ग माहिं वास,
संकटकौ नास सिवपदकौ अंकूर है ।
दुखियाकौ दुख हरै सुखियाकौं सुख करै,
विघन विनास महामंगलकौ मूर है ॥
गज सिंह भाग जाय आग नाग हू पलाय,
रन रोग दधि बंध सबै कष्ट चूर है ।

ऐसौ दयाधर्मकौ प्रकास ठौर ठौर होहु,
तिहुं लोक तिहुं काल आनंदकौ पूर है ॥ २९ ॥
इथैं कोट उथैं बाग जमना बहै है बीच,
पच्छमसौं पूरवकौं असीन (?) प्रवाहसौं ।
अरमनी कसमीरी गुजराती मारवारी,
नरोंसेती जामें वहु देस बसें चाहसौं ॥
रूपचंद बानारसी चंदजी भगोतीदास,
जहां भले भले कवि द्यानत उछाहसौं ।
ऐसे आगरेकी हम कौन भांति सोभा कहैं,
बड़ौ धर्मथानक है देखियैं निवाहसौं ॥ ३० ॥
सहरमें नहर है ठौर ठौर मीठे कूप,
बाजार बहुत चौंरा बसती सघन है ।
आन देसोंसेती जहां श्रावक अधिक बसें,
सुखी सब लोग अति ही उदार मन है ॥
दान नित देत पूजा भावसौं परम हेत,
सास्त्र सुनें है सचेत होत जागरन है ।
इंद्रपथ नाम बन्यौ इंद्रहीकौ सांचौ धाम,
दिल्ली सम और देस माहिं नाहिं धन है ॥ ३१ ॥
आगरेमें मानसिंह जौहरीकी सैली हुती,
दिल्ली माहिं अब सुखानंदजीकी सैली है ।
इहां उहां जोर करी थाद्रि करी लिखी नाहिं,
ऐसे भाव आलससौं मेरी मति मैली है ॥
आगरेमें बड़े उपकारी थे बिहारीदास,
तिन पोथी लिखवाई तब थोरी फैली है

दिल्ली माहिं लागू होय पोथी पूरी लिखवाई,
ऐसौ साहिबराय सुगुननकी थैली है ॥ ३२ ॥
दिल्लीमैं नहरि आई तैसं यह कविताई,
धास धाम जल ठाम ठाम यह वानी है ।
केई पूजा पढ़ैं केई पद रागसेती रटैं,
सुनि सुख वढ़ै वहु धर्मवुद्धि सानी है ॥
वहुत लिखावैं वहु सास्त्रकौं वचावैं सदा,
लिख लेय जावैं वहु सांच प्रीत ठानी है ।
दिल्ली माहिं सव ठौर ग्रन्थ यह फैलत है,
तैसैं सव देस फैलौ सर्व सुखदानी है ॥ ३३ ॥
आगरौ गुननिकौ जहानावाद रहै कोय,
सुधरूप धरमविलासकौ प्रकास है ।
धरमविलास धर्मके किये सदा विलास,
धर्मकौ विलास यह धरम विलास है ॥
धर्मकौं करै है कोय आपहीमैं धर्म होय,
वस्तुकौ सुभाव सोय कभी नाहिं नास है ।
निज सुद्ध भावमैं मगन रहौ आठौं जाम,
वाहज हू हेत वड़ौ ग्रंथकौ अभ्यास है ॥ ३४ ॥
पूजा वहु परकार दानके कवित्त सार,
चरचा अपार पट दर्वकौ विचार है ।
भगतिकौ अधिकार पदनिकौ विसतार,
अध्यातमकौ निहार वानीकौ विचार है ॥
अखर वावनी धार लोकालोक निरधार,
कोप भाव निरवार कथा हू उदार है ।

धरम विलासमैं अनेक ग्यान परकास,
सब माहिं भगवान भगवान भगवान तार है ॥३५॥
अग्र नाम तपसी बसेसों अगरोहा भया,
तिसकी संतान सब अग्रवाल गाए हैं।
ठारं सुत भए तिन ठारं गोत नाम दये,
तहांसों निकसिकैं हिसार माहिं छाए हैं ॥
फिर लालपुर आय व्यंक 'चौंकसी' कहाय,
गोलगोती बीरदास आगरैमैं आए हैं।
ताहीके सपूत स्यामदासके द्यानतराय,
देस पुर गाम सारे साहमी कहाए हैं ॥ ३६ ॥

छप्पय ।

पुरनि माहिं आगरौ, आगरौ आन नाहिं तुल ।
अगर सुवास प्रकास, तास सम अगरवाल कुल ॥
वीरदास महावीरदासतें, नाम धस्यौ जन ।
नेमिनाथ तन स्याम, दासतैं स्यामदास भन ॥
धन द्यानतदार विचारिकैं, द्यानत नाम प्रवानिया ।
कवि नगर नाम दादा पिता, निज नामारथ आनिया ३७

सवैया इकतीसा ।

सत्रहसय तेतीस जन्म ब्याले पिता मर्न,
अठताले ब्याह सात सुत सुता तीन जी ।
छयाले मिले सुगुरु विहारीदास मानसिंघ,
तिनों जैन मारगका सरधानी कीन जी ॥
पचत्तर माता मेरी सील बुद्धि ठीक करी,
सतत्तरि सिखर समेद देह चीन जी ।

कछु आगरेमैं कछु दिल्ली माहिं जोर करी,
अस्सी माहिं पोथी पूरी कीनी परवीनजी ॥ ३८ ।

छप्पय ।

गाय हंस उतकिष्ट, मधम मृतिका सुक जानौ ।
चलनी छाज़ पखान, फूटघट महिष प्रवानौ ॥
जोंक चोक फनधार, और मंजार उलू हुव ।
ए दस भेद जघन्य जान, स्रोता चौदह ध्रुव ॥
जो जो सुभाव धारक सहज, सो सो नाम धरावई ।
सो धन्य पुरुष संसारमैं, धरम ध्यान मन लावई ३९

सवैया इकतीसा ।

सात विस्न त्याग वारै व्रतसौं कियौ है राग,
कंदमूल फूल साग सब त्याग करे हैं ।
बैंगन करोंदे तूत पेठा वेर तरबूज,
जामुन गौंदी अंजीर खिरनीसौं टरे हैं ॥
चामघीव तेल जल हींग वासी पकवान,
विदल अचार मुखेसौं (?) थरहरे हैं ।
जल छान लेत रात पानी नाज तजि देत,
दर्सनसौं हेत ऐसे ग्याता गुन भरे हैं ॥ ४० ॥

छप्पय ।

आप पढ़ा कछु होय, सुना कछु होय जथारथ ।
समझ ग्यान वैराग, क्रिया नित करत मुकत पथ ॥
नई उकति नहिं धरै, जुगत बहु विध उपजावै ।
पिछले आगम देखि, कठिनकौं सरल वनावै ॥
सुभ अच्छर छंद प्रगट अरथ, परमारथ वरनन करै ।
द्यानत ममता त्यागी सुकवि, जब जस वानी विसतरै ४१

सवैया इकतीसा ।

कोयलकी बोल जहां काक हू कलोल करैं,
मोरनिकी घोर तहां मेंडककी सोर है ।
तूतीकी सबद इहां तीतुर हू बोलत हैं,
पानी माहिं मच्छकी न मछलीकी जोर है (?) ॥
खग विद्याधर खग पंछी नभ गौन करैं,
बनमैं मृगेंद्र मृग चाल ताही ओर है ।
तैसैं बहु कवि तामैं मैं भी लघु कवि तामैं,
गुन लीजो दोष मति कीजो लखि खोर है ॥ ४२ ॥
भानके प्रकास दीपके उजास दीसैं वस्तु,
राह माहिं चारी माहिं गज दिष्टि आवै है ।
उरदू बाजार छोटे बड़े हैं दुकानदार,
थोरा व्रत बहु व्रत व्रती नाम पावै है ॥
राजा परजाकें सुतका उछाह एक सा है,
नौ ग्रहमें (?) हीरा अरु मूंगा हू कहावै है ।
तैसें कविताकी गिनतीमैं हम कविता है,
बचन विलाससेती न्यारो आप भावै है ॥ ४३ ॥
घातिया करम नास लोकालोक परकास,
सरवग्य कैसो ग्यान हम कहां पायो है ।
संसकृत प्राकृत न भाषा हू अलप बुद्धि,
नाममाला पिंगल हू पूरा नाहिं आयो है ॥
इस माहिं कवि चातुरी कछु करी है नाहिं,
सूधा धर्म मारगको उपदेस गायो है ।
भूमंडल माहिं रविमंडल ज्यों उदै करै,
धरमविलास सबहीके मन भायो है ॥ ४४ ॥

छप्पय।

अच्छर मात्रा छंद, अरथ जो अमिल वखाना।
जान अजान प्रमाद, दोषतैं भेद न जाना॥
संत लेहु सब सोध, बोधधर हो उपगारी।
बालक ऊपर कटक, कौन धारै मतिधारी॥
इस सबद गगनमैं सुकविखग, अपना सा उद्यम गहै।
पावै न पार सुभ थान वसि, परमानंद दसा लहै॥४५॥

सवैया इकतीसा।

अकवर जहांगीर साहजहां भए वहु,
लोकमैं सराहैं हम एक नाहिं पेखा है।
अवरंगसाह वहादरसाह मौजदीन,
फरकसेरनैं जेजिया दुख विसेखा है॥
द्यानत कहां लग वड़ाई करै साहवकी,
जिन पातसाहनकौ पातसाह लेखा है।
जाके राज ईत भीत विना सव लोग सुखी,
वड़ा पातसाह महंमदसाह देखा है॥ ४६॥
जैनधर्म अधिकार दीसै जगमाहिं सार,
और मतके फकीरसेती जती सुखी है।
सव मत माहिं रात दिन पसु जेम खाहिं,
स्रावक विवेकी निसत्यागी गुरुमुखी है॥
जल अनछानेसौं नहारू आध व्याध होय,
पानी पीयैं छान कभी होत नाहिं दुखी है।
सांच धर्म सव लोक जान जान सुखी होय,
सांच वात कही, नाहिं कही आप रुखी है॥ ४७॥

चैत सब मास माहिं उत्तम वसंतसेती,
सर्व सिद्धा त्रोदसी कहै है सब लोकमैं ।
सतभिखा है नछत्र सतकौ कथन अत्र,
सुभ जोग महा सुभ धर्मके संजोगमैं ॥
गुरु पूजनीक गुरुवार कृष्ण पच्छ धार,
सेत हू है तीन वार आगम प्रयोगमैं ।
सत्रहसै अस्सी सोलै भाव रीत चित्त बसी,
ग्रंथ पूरा कीना हम सुद्ध उपयोगमैं ॥ ४८ ॥
एक सुध आतम सधै है सात भंगनतै,
आठौं गुनमई परभावनसे सुंन है ।
यही सुभ संवतके सोलै सब आंक भए,
सोलै भावसेती बंधै तीर्थंकर पुंन है ॥
इसमैं अधिकार भी इनासीके सोलै आंक,
सोलहौं कषाय नासकारी महा गुंन है ।
जातनमैं ग्यान जात बातनमैं ध्यान बात,
धातनमैं बड़ी धात जैसें हेम हुंन (?) है ॥ ४९ ॥

छप्पय ।

जबलौं मेर अडोल, छोड़ि भ्रम रुचि उपजाऊ ।
जबलौं सूर प्रताप, पाप संताप मिटाऊ ॥
जबलौं चंद उदोत, जोति सबके घर भासै ।
जबलौं स्री जिनधर्म, सर्वकौ सुख परकासै ॥
जबलौं सुभ मंगल गगन थिर, तबलौं ग्यान हिये धरौ ।
यह धर्मविलास अभ्यासतैं, सब ही भवसागर तरौ ॥५०॥

सवैया इकतीसा ।

कथा देखौ आदिनाथजीके दस परजाय,
वृत संघ निक्रीडत चंद्रामन भेव है ।
गनती अनंत विरलन देय औ सलाक,
दीपोदधि नाम गिनै आवै नाहिं, छेव है ।
जीव कर्म दर्व तत्त्व ग्यान पूजा ठानी लोक,
सवै वहु भेद भाखैं तीर्थंकर देव है ।
भोग चक्रवर्तिजीकै समोसर्नकी विभूति,
जैनधर्मके समान जैनधर्म एव है ॥ ५१ ॥
बुद्धिका निवास होय सुद्धता प्रकास होय,
मुद्धता विनास होय उद्धता प्रभावना ।
दानकी पिछान होय ग्यानका निदान होय,
ध्यानका विग्यान होय मानका मिटावना ॥
इंद्री सव जेर होय मन जैसैं मेर होय,
मोहका अंधेर खोय जोतिका जगावना ।
जगतैं निकास लेह मोख माहिं करै गेह,
धरमविलास ग्रंथ आगमकी भावना ॥ ५२ ॥

छप्पय ।

सावन जल विन दियैं, मैल गुनका सव खोवै ।
जाका डर अवधार, कवित निरदूखन होवै ॥
जो दुख देय न सोय, कौन सम ताकौं जानौ ।
दोष विराने चूरि, आपने सिरपै ठानौ ॥
यह दुष्ट पुरुष जैवंत जग, चार बड़े उपगार हैं ।
दुरजनकौं सजन सम लखैं, ते ग्याता सिरदार हैं ५३

कुंडलिया ।

अच्छरसेती तुक भई, तुकसौं हूए छंद ।
छंदनसौं आगम भयौ, आगम अरथ सुछंद ॥
आगम अरथ सुछंद, हमौंनैं यह नहिं कीना ।
गंगाका जल लेय, अरघ गंगाकौं दीना ॥
सबद अनादि अनंत, ग्यान कारन बिन मच्छर ।
मैं सबसेती भिन्न, ग्यानमय चेतन अच्छर ॥ ५४ ॥

छप्पय ।

धन धन स्री जिनराज, काज सब जियके सारौ ।
धन धन सिद्ध प्रसिद्ध, रिद्ध सब बिध बिसतारौ ॥
धन धन हौ तुम सुर, सूर दुखकौं निरवारौ ।
धन धन हौ उवझाय, लाय अंमृत विष टारौ ।
जग धन्न धन्न सब साधु तुम, वकता स्रोता सुख करौ ।
द्यानत हे माता सरसुती, तुम प्रसाद सब नर तरौ ॥५५॥

इति पूरण पंचासिका ।